॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज
रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-
मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके
मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की
आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्री-रामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावण-वध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभाव-न रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

यौं गुणि परम प्रबंध चहुँ, निरखि चकित हनुमान ॥
रैनि समै पुर पैठिबो, उचित कियो अनुमान ॥ ५० ॥
निफल न हो मम आगमन, सोई बात महान ॥
उक्ति युक्ति सोचत गुनत, यौंहीं अथयो भान ॥ ५१ ॥
निशि लखि कपि कति रूपही, करि मंजार प्रमान ॥
राम सुमिरि लंका निकट, दुरि आयो बलवान ॥ ५२ ॥

प्र०—वाल्मीकीये सुंदरकांडे ॥ सर्ग ॥ २ ॥ श्लोक ॥

सूर्ये चास्तं गते रात्रौ देहं संक्षिप्य मारुतिः ॥
वृषदंशकमात्रोथ बभूवाद्भुतदर्शनः ॥ २ ॥

दोहा—तहँ लंका निज रूपते, रक्षहि पुरी सदाय ॥
नाम लंकिनी जाहि दुरि, कोऊ जान न पाय ॥ ५३ ॥

सोरठा—कपिहि देखि सो धाय, कही सकोप करालवपु ॥
अरे कीश कहँ जाय, दुरिमोतें ह्वै चोर सम ॥ ५४ ॥
ताहि निरखि हनुमंत, बूझी दुष्टा कौन तू ॥
सो भाषी बलवंत, हौं लंका रक्षौं सदा ॥ ५५ ॥
तब बोले कपिताहि, हौं पुर अवलोकन चहौं ॥
कही सुद्रुत फिरि जाहि, न तर हरौं तुव प्राण अब ॥ ५६ ॥
सुनि कपि ह्वै विकराल, तिय लखि तलताड़ो सहज ॥
गिरी भूमि बेहाल, महानाद करि निश्चरी ॥ ५७ ॥
पुनि लंका लहि चेत, उठि बोली कर जोरिकै ॥
कपि आये जिहि हेत, करौकाज सो सिद्धि तुव ॥ ५८ ॥
मोहिँ कही विधिबात, तोहिँ करै कपि त्रास जब ॥
तब निश्चर कुल घात, लखिये भई सुसत्य अब ॥ ५९ ॥
सुनि कपि लघु वपुधार, पुर प्राकार उलंघिकै ॥
पैठे लंक मझार, प्रथमवामपद अग्रकरि ॥ ६० ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये सुंदरकांडे । सर्ग ४ ॥ श्लोक ।

प्रविश्य नगरीं लंकां कपिराजो हितंकरः ॥
चक्रेथ पादं सव्यं च शत्रूणां स तु मूर्धनि ॥ ३ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि।

प्रयाणकाले स्वगृहप्रवेशे विवाहकालेऽपि च दक्षिणांघ्रिम् ॥
कृत्वाग्रतः शत्रुपुरप्रवेशे वामं निदध्याच्चरणं नृपालये ॥४॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद।

देखो लंकनगर वर शोभित कंचनमय सब धामा ॥
विविधवेष निश्चर निशाचरी सकल साज अभिरामा ॥
बाल युवा अरु जरठ पुरुष तिय विपुल सुरूप कुरूपा ॥
धर्म अधर्म सुकर्म कुकर्महि निरत अनेक अनूपा ॥ ६१ ॥
शस्त्र शैल तरुधरे खरे भट ठौर ठौर रखवारे ॥
कहुँ सहस्रदश कहूँ लक्ष कहुँ कोटिन कहूँ अपारे ॥
हाट बाट गृह नगर मध्य चहुँ अध ऊरध सबठावा ॥
बाहर अरु अंतर लंकापति परम प्रबंध दृढावा ॥ ६२ ॥
बाग वाटिका कुंज पुंज वरवीथी पंथ बजारा ॥
वापी कूप तड़ाग सरित गृह वन गृह गुहा अपारा ॥
जाय जाय सब ठौर वीर कपि दुरिहेरे चहुँ घाई ॥
रामभामिनी जनकनंदिनी कतहुँ न परी लखाई ॥ ६३ ॥
दशमुख भवन माहिं तब पैठे तहँ सब ठौर निहारा ॥
अशन पान स्नान हवनथल अविलोको कपिसारा ॥
शैन भवन मधिगयो वीरवर निरखि चकितभो कीशा ॥
जा सम सुभग साज शोभा सुख अपर त्रिलोक न दीसा ॥६४॥
सुर किन्नर गंधर्व यक्ष नर नाग नारि अभिरामा ॥
सजे सुभग शृंगार मनोहर वरनिश्चरी ललामा ॥
सकल वारुणी पान मदन मदमत्त अंगसुधि नाहीं ॥
जहँ तहँ निद्रावश अचेत ह्वै सोयरहीं चहुँ घाहीं ॥ ६५ ॥
काहू शिर पर पद काहूको काहूपग किहुँ माथा ॥
काहु उदर उर भुजा शीश कटि काहू किहु मुख हाथा ॥
कोऊ शस्त्र वस्त्र भूषण युत इमि अचेत सब सोई ॥
सुभग सुंदरी स्वरमाधिराची प्राण लुकाय विगोई ॥ ६६ ॥
कोऊ वसन विहीन वामवर कोऊ सुभग शृंगारी ॥
कोऊ विलुलित साज सकल तनु कोऊ अर्ध सँवारी ॥

कोऊ सुरतिहीन रति संयुत कोउ विलग कोउ संगा ॥
कोऊ अशन पान भाजन लै शैन किये इहिढंगा ॥ ६७ ॥
तिनके मध्य रूपवर रावण सोवत मुदित निशंका ॥
मंदोदरी गौर सुठि नारी आलिंगित निज अंका ॥
लखि मयसुता रूप शोभा दृढ हीय कीश अनुमाना ॥
येही जनकनंदिनी इमि छबि तिन बिन तिया न आना ॥ ६८ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ सुं० कां० ॥ स० ॥ १० ॥ श्लो० ॥

गौरीं कनकवर्णाभामिष्टामन्तःपुरेश्वरीम् ॥
कपिर्मंदोदरीं तत्र शयानां चारुरूपिणीम् ॥ ५ ॥
स तां दृष्ट्वा महाबाहुर्भूषितां मारुतात्मजः ॥
तर्कयामास सीतेति रूपयौवनसंपदा ॥
हर्षेण महता युक्तो ननंद हरियूथपः ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद।

हेरि हिये हनुमंत हर्ष भरि रोम प्रफुल्लित कीना ॥
लै ऊरध लंगूर चुंबिकै कीश केलिचित दीना ॥
आयो बहुरि विचार वीर उर मो कस बुद्धि नशानी ॥
शैन किये दशमाथ जो तिया तिहि सीता मैं जानी ॥ ६९ ॥
रामभामिनी दृढ पतिव्रता सत्यधर्म धुरधारी ॥
परपति संग ताहि अनुमानी कियो जु पातक भारी ॥
पुनि कपि सोच पाप यह दूजो एक और हौं कीना ॥
पर नारी नरशैन संग ही नग्न अंग लखि लीना ॥ ७० ॥
यौं गुणिकै पुनि ह्वै धीरदै दृढ विचार यह थापा ॥
मोमन निर्विकार तौ निरखे भयो नहीं कछु पापा ॥
इहि विधि सोचि वीर तहँ ते चालि फिरि चहुँ हेरन लागे ॥
जब कहुँ लखी नहीं सीता तब महा शोकमें पागे ॥ ७१ ॥
कर विचार कपि सिया न जीवै कै रावण तिन मारी ॥
कै लावताहि व्योम मंडल तें गिरी पयोधि मझारी ॥
हाय कहाँ अब मिलैं जानकी विन पाये नाहिं जाऊं ॥
है यह भली प्राण निज त्यागौं काहु न मुख दरशाऊं ॥ ७२ ॥

हरिगीतिका छंद।

इमि गुणत कपि बहु सोच वश पुनि किय विचार सुहीयमैं ॥
उत जो लखाय अशोक वन हेरो न वह रमणीय मैं ॥
देखौं तहांचालि सीय जो दरशाय तौ भालिबातहै ॥
दृढ़ मिलहि स्वाामिनि तितहिं या छिन जीय मम उमगात है७३॥
यौं ठान दृढ हनुमानकीन पयान अतिहि उताल जो ॥
दरशान इक स्थान शोभामान परम विशालसो ॥
जिहि धाम द्वार ललाम अंकित राम नाम सुवर्णते ॥
वृंदा सुमन वर वृंद वृंद विराज तरु बहु वर्णते ॥ ७४ ॥
लखि हीय गुण हनुमंत कोऊ संतको यह धामहै ॥
अति आचरज इत लंकमें हरि भक्त को अभिराम है ॥
तौ लग सु निद्रागत विभीषण नाम लीनो रामको ॥
सुनि कीशद्विजतनु धारि कीनो गान प्रभु गुण ग्रामको ॥ ७५॥
सो सुनि विभीषण द्वार आये दोउ दुहुँदिशि हेरिकै ॥
बूझी दुहूँ दुहुँ कही निज गति मिले गल भुज गेरि कै ॥
नृपबंधु तब हनुमंत सों भाषी सबै समुझाय कै ॥
वर वाटिकामधि मैथिली कह लखहु जाय दुरायकै ॥ ७६ ॥

चौ०-सुनि सिय कथा हीय हरषाना ❀ चले वेगि तिन मिलि हनुमाना।
वर अशोकवाटिका निहारी ❀ परमरम्य शोभा मनहारी ॥ ७७ ॥
कंचन महि मणि जटित अनूपा ❀ वापी कूप तडाग सुरूपा ॥
वेलि विटप लघु दीरघनाना ❀ फल प्रसून वर विविध विधाना७८
खग मृग विपुल जीव बहु जाती ❀ हेमरजत तरु अगणित भाती ॥
चहुँ मुक्ता प्रवाल मय सिक्ता ❀ महि दरशाय न तिहि अतिरिक्ता७९
धवल धाम वर उच्च अनेका ❀ सुंदर सुखद एकते एका ॥
रक्षत विविध भूरि भट भारे ❀ निज निज काज शस्त्र सब धारे ८०
इमि अशोकवाटिका सुहाहीं ❀ जिहि पटतर अमरावति नाहीं ॥
तहँ कंचन मय सुभग निराला ❀ एक शिशपा वृक्ष विशाला ॥ ८१॥
तिहि तरुतर वेदिका मनोहर ❀ हाटक रचित खचित मणिगणवर॥

तहँ सशोक श्रीजनकदुलारी ❀ बैठी राम ध्यान उर धारी ॥ ८२॥
चहूं ओर निश्चरी कराला ❀ रक्षाहिं लीने शस्त्र विशाला ॥
सियहि दूरते लखि हनुमाना ❀ मम स्वामिनि ये दृढ़ अनुमाना ८३॥
करि प्रणाम दूरहिते सादर ❀ हर्ष शोक दोऊ सुहीय भर ॥
सिया रामकी दशा विचारी ❀ हनूमान कह मनहिं मझारी ॥८३ ॥

सवैया कवित्त।

उत का कहिहौं सियकी गति हौं वरणौं इत काह कथा पियकी ॥
नाहिं भाषे बनै निरखेही बनै अति दुःख सनेह दशा वियकी ॥
इहिते रसिकेस भली है यही गहि मौन धरौं हिय मैं हियकी ॥
ममस्वामिनि स्वामि परस्पर दोऊ सुजानत हैं दुहुँके जियकी ॥८५॥
चौ०-पुनि कपि गुणी भयो दुख दूरी ❀ सियाराम मिलि हैं सुख पूरी ॥
प्रभु सँदेश सुनिकैं हरषाहीं ❀ पै मुहिं प्रगट मिलब भल नाहीं८६
यौं गुणि कीश रैनिलखि थोरी ❀ द्रुमचढ़ि दुरो निरखि चहुँ ओरी ॥
ताछिन तहँ दशवदन सिधारा ❀ संग नारि बहु किये शृंगारा ॥८७॥
आय सियहि सो बहु समुझाई ❀ कटु वचकह सीता विलपाई ॥
तब दशमुखलै कठिन कृपाना ❀ जनक सुता दिशि हेरि रिसाना८८
तब गहि मंदोदरी सुनीता ❀ समुझायो कहि वचन विनीता ॥
पुनि रावण निश्चरिन सिखाई ❀ करौ नारि मम सियहि बुझाई ८९॥

दोहा-यों कहि भाषी सीय दिशि, और तजो द्वै मास ॥
इहि ऊपर तुव मरन कै, हठिराखौं रनिवास ॥ ९०॥

प्र० ॥ वा० ॥ सु० ॥ कां० ॥ स० ॥ २२ ॥ श्लो० ॥

द्वौ मासौ रक्षितव्यौ मे योऽवधिस्ते मया कृतः ॥ ततः शयनमारोह मम त्वं वरवर्णिनि ॥ ७ ॥ द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्त्तारं मामनिच्छतीम् ॥ मम त्वां प्रातरा शार्थे सूदाश्छेत्स्यंति खंडशः॥८॥ इत्यादि॥

चौ०-ताछिन धान्य मालिनी नामा ❀ वर निशाचरी परम ललामा ॥
दै गल भुज दशमुखहि सप्रेमा ❀ शैन सदन लै गई सुक्षेमा ॥९१॥
इत निश्चरी कुरूप कराला ❀ लैकर मुशल शूल असि भाला ॥
बहु विधि सीतहि त्रास दिखावैं ❀ साम दाम भय भेद दिढावैं ॥९२॥

दोवई छंद।

इकनैनी कोऊ इक कर्णी कोऊ बहु दृगवारी ॥
कोऊ गजकर्णी खरकर्णी कोउ नाग दँतारी ॥
कोऊ व्याल मुखी लंबोदरि लंबकुची कुचहीना ॥
कोऊ हस्त चरण इक एकै कोऊ अगणित कीना ॥ ९३ ॥
कोऊ शीश विहीन बहुत शिर कोऊ अगणित नासा ॥
कोऊ अर्ध कोऊ अनासिका कोऊ बहु मुख भासा ॥
कोऊ शूकर श्वान सिंह मुख कोऊ गिरि वपुधारा ॥
कोऊ अति लघु इमि निशाचरी विविध कराल अपारा ॥ ९४ ॥
कोऊ बाँधि मुष्टिका धावैं सियहि प्रहारण काजा ॥
कोऊ दृशन काढ़ि मुख फारैं भक्षणहित करि गाजा ॥
कोऊ लै कृपाण कर दौरैं कोऊ शूल भमावैं ॥
यौंही बिकट निश्चरी सीतहि बहु विधि त्रास दिखावैं ॥ ९५ ॥
कहैं सकल हे जनकनंदिनी जो निज जीवन चावो ॥
तौ सिख मानि वेगही हठतजि दशमुख महल सिधावो ॥
सुनि सिय बोलीं भले सबहि मिलि मुहिं भक्षण करि लेहू ॥
निज पतिबिन नहिं लखौं आन दिशि मोर सत्य प्रण येहू ९६॥
यौंकहि सिया हाय श्वासा भरि करति अपार विलापा ॥
सो गति लखि हनुमंत हीय बहु बढो क्रोध संतापा ॥
कुसमय जानि मौन दुरि हेरै कपि निश्चरी कठोरा ॥
जनकनंदिनिहि भीति दिखावैं बोलि: वचन अतिघोरा ॥ ९७ ॥
दोहा—ताछिन त्रिजटा निश्चरी, बोली सबहि रिसाय ॥
सियहि न खावो आप तनु, आपहि लेवो खाय ॥ ९८॥
स्वप्न लखो हौं अवशिहो, तिहि फल यह विश्वास ॥
राम विजय पावैं सपदि, अरु निश्चर कुलनास ॥ ९९ ॥
सुनि सशंक सब निश्चरी, त्रिजटहि कह अकुलाय ॥
कहा लखो भाषो सबै, सो बोलीं समझाय ॥ १०० ॥

ह० गी० छंद ।

गजदंत शिबिका सहस हरि युत अंतरिच्छ सुहावहीं ।
तिहि मध्य रामसबंधु राजे शुभ्र साज सु आवहीं ॥
पुनि लखी श्वेत शृंगार धारे सिंधुहै आवृत किये ।
सीता विराजी धवलगिरिपै पीयपद निज दृग दिये ॥ १०१ ॥
हेरो सुदंती चारदंत शृँगार युत भूधर चढो ।
तिहि पै लसे सिय बंधु संयुत राम अति आनँद मढो ॥
पुनि लखी सीता चंद्र भानुहि छिनहिं छिन कर परसही ।
रथ श्वेत वृषभ सुयुक्तता मधि तिहूँ बहु छबि सरसही ॥ १०२ ॥
दोहा—पुनि हेरे सीता सहित, राम लषण दुहुँ भ्रात ॥
शोभित पुष्पविमान मधि, उत्तर दिशि नभ जात ॥ १०३॥

दोवई छंद ।

पुनि देखो दशमाथहि मुंडित लाल बसन तनु धारे ॥
कंठ माल करवीर पानमद अरुण साजहैं सारे ॥
सो पुष्पकविमानते गिरिकै परो महीतल आई ॥
श्याम शृँगार श्यामतिय मुंडित तिहि खैंचै गहि धाई ॥ १०४ ॥
खर युत रथ बैठो पुनि हेरो हँसै नचै अरु गावै ॥
करै तैल को पान सुव्याकुल दक्षिण दिशा सिधावै ॥
बहुरि लखो गर्दभ मय रावण बिन शिर गिरो जु भूमै ॥
फिर उठि मत्त नग्न ह्वै विलपत दुर्वच बोलत घूमै ॥ १०५ ॥
पंक घोर मलकुंड प्रविशिके दशमुख दक्षिण जाही ॥
रतवासिनी श्याम तिया गल बाँधि सुखैंचै ताही ॥
यौंहीं कुंभकरणको देखो अरु रावण सुत सिगरे ॥
मुंडित तैल लिप्त अविलोके त्यौं निश्चर सब बिगरे ॥ १०६ ॥
शूकर श्वान ऊंट खर जल कपि चढे नग्न हैं कोऊ ॥
कोऊ महिष मनुष निश्चर पै गमने दक्षिण सोऊ ॥
एक बिभीषण लखो शुद्ध वर श्वेत छत्र शुभकारी ॥
अविलोके अति अशुभ रीतिसें अपर सकल नर नारी ॥१०७॥

खंडित सदन सकल अविलोके भस्म निहारी लंका ॥
सब निश्चरी रुदन करभारी विह्वल भई सशंका ॥
पुरचर अचर सिंधु माधि डूबे अरु जे वीर बडेरे ॥
ते समस्त गोमय ह्रद प्रविशे इमि कुस्वप्न मैं हेरे ॥ १०८ ॥
दोहा–सुनि त्रिजटा मुख स्वप्न गति, भई सकल अति दीन ॥
परीं निश्चरी सीय पग, विनय जोरि कर कीन ॥ १०९॥
इमि यामिनि द्वै दंड ही, रहीं निरखि सब वाम ॥
कछू सचेत अचेत ह्वै, सोईं इत उत ठाम ॥ ११० ॥
ताछिन राघवभामिनी, कीनो महा विलाप ॥
सो विलोकि हनुमंत हिय, भयो अधिक संताप ॥ १११ ॥
ताही समय सुऔचकै, शकुन भये सिय अंग ॥
वामबाहु उर नैन भ्रुव, फरकन लगे सुढंग ॥ ११२ ॥
तब कपि सुखवाणी विषे, प्रभु गुण कीन बखान ॥
सुनि चितई सिय चकित चहुँ, सोच हर्ष अधिकान ११३॥
है माया कछु आसुरी, यौं करि सीय विचार ॥
ह्वै सशंक शिरनायकै, रही मौन दुखधार ॥ ११४ ॥
हनूमान तब आयकै, निकट नवायो शीश ॥
कही दुहूँ कर जोरिकै, राम दूत हौं कीश ॥ ११५ ॥
तऊ न सिय सन्मुख लखी, बोली महि दिशि जोय ॥
नाथ दूतहै सत्य कपि, मुहिं प्रतीत किमि होय ॥ ११६ ॥
तब कपि रघुवर अंगके, नखशिख चिह्न समस्त ॥
कहे यथारथ सीय प्रति, बंधु समेत प्रशस्त ॥ ११७ ॥
अपर कथा वरणी बहुरि, औसर जानि उताल ॥
मुखते काढि सुमुद्रिका, दीनी अंजनिलाल ॥ ११८॥
लई सिया आतुर हुलसि, पिय मुँदरी पहिचानि ॥
ताछिन उमडो नेह सुख, सो किमि जाय बखानि ॥११९॥

घनाक्षरी कवित्त।

दृगन छुवावैं गहि शीश पै चढावैं ताहि हृदय लगावैं बारम्बार दुलरावैहैं॥ फेरि फेरि हेरैं हेरि हेरि कै कपोल भेरैं भेरि कंठ फेरैं फेरि

हेरि हुलसावैं हैं ॥ पीय गति बूझैं बूझि बूझिकै अरूझैं कर जोरि जोरि कोरि कोरि विनय सुनावैं हैं ॥ रसिकविहारी पति मुद्रिका निहारी सीय छिन सुधि लावैं छिन प्रेममें भुलावैं हैं ॥ १२० ॥

दोहा—जबै पाई पिय मुद्रिका, तब सिय करी प्रतीत ॥
गदगंद हिय दृग नीर भरि, बूझी सकल सप्रीत ॥ १२१ ॥
तब हनुमत दुहुँ बंधुकी, कही कुशल युत प्रीत ॥
तिन दिशि ते बूझी बहुरि, बोले वचन सुनीत ॥ १२२ ॥
हे स्वामिनि श्रीराजसुत, जिमि तब विरह रहात ॥
सो गति मोहियकी हिये, कैसहु कही न जात ॥ १२३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

जबते वियोग भयो रावरो तबै ते राम काहू तिय ओरहू न हेरैं नेह भरिकै ॥ नव फल फूल नारि देखें जलनैन ढारि श्वास लै अधीर होत हाय प्यारी करिकै ॥ पौढैं वा सु बैठें भूमि साथरी अजिनशिला रसिकविहारी अर्ध आसन उतरिकै ॥ खान पान होवैं कछु आप तिहि लेत पाछे प्रेम युत प्रथम तिहारो भाग धरिकै ॥ १२४ ॥ मद मधु कंद मूल पल फल फूल तजे रैन वन तंदुलसो अशन करात हैं ॥ वृश्चिक न दंश अहि मशक निवारैं अंग संतत विदेह ढंग विपुल रहात हैं ॥सब निशिजागैं बारबार अनुराग राम ध्यान तुव पागैं छिन२ अकुलात हैं॥रसिकविहारी कबौं पलक झपात तबै झझकिं उठात हाय सीते विलपात हैं ॥ ॥ १२५ ॥ गावैं रावरे ही गुण ध्यावैं रावरो ही रूप बंधुसे सुरावरीही चरचा चलावैं हैं ॥ रसिकविहारी रघुवीर ढिग आवैं कोऊ तासों हठि रावरीही चरचा चलावै हैं ॥ करैं कछु काम लेत रावरो प्रथम नाम रावरी कथामें वसु याम विलमावैं हैं ॥ परम विचित्र चित्र रावरो सुपत्रनपै लिखि लिखि वार वार हृदय लगावैं हैं ॥ १२६ ॥

प्र० वा० सुं० कांडे० स० ॥ ३७ ॥ श्लोक।

न मांसं राघवो भुंक्ते न चैव मधु सेवते ॥ वन्यं सुविहितं नित्यं भक्तमश्नाति पंचमम् ॥९॥ नैव दंशान्न मशकान्न कीटान्नसरीसृपान् ॥

राघवोऽपनयेद्गात्रात्वद्गतेनान्तरात्मना ॥ १०॥ नित्यं ध्यानपरो रामो नित्यं शोकपरायणः ॥ नान्यं चिंतयते कंचित्स तु कामवशंगतः ११॥ अनिद्रः सततं रामः सुप्तोपि च नरोत्तमः ॥ सीतेति मधुरां वाणीं व्याहरन्प्रतिबुध्यते ॥१२॥दृष्ट्वा फलं वा पुष्पं वा यच्चान्यत्स्त्रीमनोहरम बहुशो हा प्रियेत्येवं श्वसंस्त्वामभिभाषते ॥ १३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—यौंकहि पुनि कर जोरिकै, बोले हनुमतवीर ॥
जननी अब धीरज धरिय, वेगि लखिय रघुवीर ॥ १२७ ॥
हौं अबहीं निज पीठ धरि, लैजाऊं प्रभुपास ॥
कहा करौं रघुवीर मुहि, आज्ञादई न खास ॥ १२८ ॥
सुनि बोलीं सिय कीश इत, यातुधान बलवान ॥
कह पुरुषारथ करि सकैं, लघु कपि भालु निदान ॥१२९॥
तब हनुमत निज युद्धवपु, प्रगटो भीम कराल ॥
महामेरु सम उच्च गरु, परम प्रचंड विशाल ॥ १३० ॥
सो लखि करी प्रतीति सिय, तब कपि लघुतनुकीन ॥
जनकसुतहि हनुमंत पुनि, बहु विधि धीरज दीन ॥ १३१ ॥

चौ०—दैधीरज भाषी पुनि कीशा ❀ ज्यौं मुद्रिका दई मुहिं ईशा ॥
त्यों कछु चिह्न आपते पाऊं ❀ तौ अब हौं अति वेगि सिधाऊं१३२॥
चूडामणि दीनी तब सीता ❀ कहि बहु पियहि संदेश विनीता ॥
पुनि बोली बिछुरे दश मासा ❀ भये और द्वै राखौं आसा॥१३३॥
पूरण वर्ष भये तनु त्यागौं ❀ हौं कपि तोहिं सत्य प्रण वागौं ॥
रावण दई अवधि मुहिं सोई ❀ तामधि प्रभु आये भल होई१३४॥

प्र० वाल्मीकिये सुंदरकांडे सर्ग ॥ ३७ ॥ श्लोक।

स वाच्यः संत्वर स्वेति यावदेव न पूर्यते ॥ अयं संवत्सरः कालस्तावद्धि मम जीवितम् ॥ १४ ॥ वर्तते दशमो मासो द्वौ तु शेषौ प्लवंगम ॥ रावणेन नृशंसेन समयो यः कृतो मम ॥ १५ ॥ इत्यादि ॥

चौ०-सुनि हनुमंत कही हे अम्बा ❀ अब न होइ हैं नेक विलम्बा ॥
यौं बहुधीरज दे शिरनाई ❀ चलन हेत द्रुत विनय सुनाई १३५
दई सिया बहु भांति अशीशा ❀ सुनि अनंद पायो अतिकीशा॥

पुनि हनुमान कही कर जोरी ❀ खाउँ सरसफल है रुचि मोरी १३६
सुनि बोली सिय हे हनुमंता ❀ इत रक्षैं वर सुभट अनंता ॥
यह अशोकवाटिका विशाला ❀ गुणै प्राणप्रिय निश्चर पाला १३७
याते जाय दुराय उताला ❀ खाय सरसफल गमनौ हाला ॥
पुनि हौ तेज बुद्धि बल धामा ❀ औसर लखि कीजो सब कामा १३८
यौं कहि दीनो बहुरि अशीशा ❀ शीशनाय गमनो मुदकीशा ॥
सियदिशि बार बार सो हेरैं ❀ सीता कपिहि लखैं फिर फेरैं १३९
इमि जानकिहि निरखि हनुमाना ❀ चले हृदय आनँद अधिकाना ॥
अंग प्रफुल्ल रोम बलवंता ❀ उमगो गुण बल तेज अनंता १४०

इति श्री० रा० र० वि० वि० जनकनंदिनीदर्शन-
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

दोहा–श्रीहनुमत वरवीर कपि, सिय ढिगते चलि आय ॥
किये विचार सुहीय अब, गमनों बल दरशाय ॥ १ ॥
यौं दृढ ठानि सुवीर वपु, कीनो मेरु समान ॥
प्रगटो वेग प्रचंड अति, पवनतनय बलवान ॥ २ ॥
पुनि अशोकवन मध्य चहुँ, धाय धाय फलखात ॥
भंजत द्रुमवल्ली सदन, करत महा उतपात ॥ ३ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, खग मृग भगे विहाल ॥
उठीं भभरि सब निश्चरी, बूझी सीय उताल ॥ ४ ॥
कोहै कपि तुमते कहा, कही निकट यह आय ॥
सुनि दीनो उत्तर सिया, हौंहू भेद न पाय ॥ ५ ॥

चौ०-सबहि निश्चरी जाय उताला ❀ रावण प्रति वरणो कपिहाला ॥
तब दशवदन क्रोध किय भारी ❀ सुनि अशोकवाटिका उजारी ६॥
प्रात समै सेवा हित ठाढे ❀ असीसहस किंकर बलगाढे ॥
सबहि दई आज्ञा दशभाला ❀ मारौ कीशहि जाय उताला॥७॥
ते सबही सकोप द्रुत धाये ❀ विपुलशस्त्र कपि पर वरसाये ॥
तब हनुमत लै परिघ विशाला ❀ करि पुनि रूप भीम विकराला८

धाय धाय किंकर सब मारे ❀ परे मृतक ते धरणि मझारे ॥
पुनि कपि गर्जि कियो रव भारी ❀ बैठ जाय गृह शिखर मझारी ९॥
जैति राम लछमन वरवीरा ❀ जै कपीश सुग्रीव सुधीरा ॥
राम दास हौं हनुमतकीशा ❀ मर्दौं बहु सहस्र दशशीशा॥१०॥
यों पुकारि पुनि धाम सुभंजा ❀ सकल साज खंडित करिगंजा॥
सो विलोकि शतरक्षक धाये ❀ लै लै शस्त्र क्रोध भरि आये ११॥
खंभ उपाटि वीर गहि धावा ❀ ताहि भमाय अपार तपावा ॥
सबकी सहि बहु शस्त्र प्रहारे ❀ हनुमत ते समस्त हति डारे १२॥

पद्धरी छंद।

हनुमान वीर रक्षकन मारि। पुनि अति प्रचंड हिय रोष धारि ॥
द्रुम लता धाम सर ह्रद सुकूप। मर्दै अनेक ध्रुव लखि अनूप १३
दशमाथ जंबु मालीहिटेरि। दीनी रजाय तिहि ओर हेरि ॥
सो भट प्रहस्त सुत धनुष धार। धायो उताल गर्जत अपार॥१४॥
लखि ताहि वीर किय अट्टहास। लंगूर लंब चुंबो हुलास ॥
सो आय विशिखबाण न प्रहार। मुख शीश बाहु कपि तनु विदार १५
तब कोपि वीर हनुमत उताल। गरु शिला धारि तिहि शीश घाल॥
भट यातुधान बाणन विदारि। करि खंड ताहि दिय भूमिडारि १६॥
तब भीम शाल तरु गहि उपाट। कपि हनो सोउ सो शरन काट ॥
पुनि पंच बाहु उर मध्य एक। दश वक्ष घाल अरु तनु अनेक १७
इमि बाण जंबुमाली उताल। हनुमंत अंग मधि दीन शाल ॥
तब कीश धाय सो परिघधारि। डारो जु भूमि निश्चरहि मारि १८॥
पुनि गर्जि वीर चढि उच्च धाम। बैठो निशंक कह जैति राम ॥
वध जंबुमालि सुनि लंकराय। द्रुत सचिव सुतन दीनी रजाय १९
ते सप्त वीर लै सुभट संग। धाये उताल सजि शस्त्र अंग ॥
चहुँ ओर घेरि कै सकल कोपि। बाण न प्रहारि दिय कपिहितोपि २०
हनुमान वीर तब क्रोध लाय। निज गात चंड गिरि सम बढ़ाय॥
जैजैति राम कहि सोरछाय। कूदे उताल दल मध्य आय ॥२१॥

दोवई छंद।

काहू शीश मुष्ट हनि फोरा काहू दंतन काटा ॥
काहू जानु चापि हत काहू चरण भुजा उत पाटा ॥
काहू पुच्छ लपेटि पछारा काहू नखन विदारा ॥
काहू घालि चपेट प्राण लिय भयो सु हाहाकारा ॥२२॥
यौं हनुमंत सातहू मंत्री सुतन मारि महिडारे ॥
सो विलोकिकै भभरि पराने अपर निशाचर सारे ॥
वीर धीर सानंद धाय पुनि गर्जत निपट निशंका ॥
करि विध्वंस बहोरि धाम बन बैठो शिखर उतंका ॥ २३ ॥
सुनि मंत्री सुत निधन दशानन चकित दुखित यौं वरनी ॥
है कोऊ बलवंत सुरासुर यह न कीशकी करनी ॥
इमि कहि लंकनाथ क्रोधित ह्वै आज्ञा दई उताला ॥
सेना अग्र गमन अधिकारी जाय गहौ कपि हाला ॥ २४ ॥
विरूपाक्ष यूपाक्ष प्रघस अरु भास करण वर वीरा ॥
रश्मिमालि ये पंच निशाचर दल नायक रणधीरा ॥
संग सैन चतुरंग अंग सजि घोर शोर कर धाये।
कपि उदंड भुजदंड चंड दुहुँ ठोकि हिए हुलसाये ॥ २५ ॥
यातुधान हनुमान अंगपर अगणित शस्त्र प्रहारे ॥
रश्मिमालि ताकि पंचबाण वर विशिख वीर तनु मारे ॥
तब केसरी किशोर गात निज करि भूधर सम भारा ॥
गिरे उछलि तिहि शीश निश्चरहि रथ हरि युत दलि डारा ॥२६॥
विरूपाक्ष यूपाक्ष वीर दुहुँ तासु निधन लखि धाये ॥
कीश बाहु उर कोपि निशाचर मुद्गर अमित चलाये ॥
तब हनुमंत शाल द्रुम लैकै दोऊ भट हति डारे ॥
भासकर्ण अरु प्रघस हेरि सो क्रोधित आय प्रचारे ॥ २७ ॥
पट्टिश प्रघस घाल हनुमंतहि भासकरण हन शूला।
अपर अनेक शस्त्रधर निश्चर निकर कीशवपु हूला ॥
तबहि प्रभंजनपुत्र प्रबल भट गहि गिरि शृंग विशाला ॥
घालो यातुधान सो दोऊ मृतक भये ततकाला ॥ २८ ॥

पुनि रथ रथनि तुरंग तुरंगनि दंती दंतिन मारे ॥
वीरन वीर विपुल गिरि वृक्षन दंतन नखन विदारे ॥
यौं संहारि सैन पुनि हनुमत जै कपीश कहि धाई ॥
बैठे धाय उताल शिखरपर रोमावली फुलाई ॥ २९ ॥
दोहा-पंचसैन नायक मरन, सुनि दशवदन रिसाय ॥
निज सुत अच्छकुमारका, दीनी वेगि रजाय ॥ ३० ॥
सो०-रावण सुत बलवंत, अच्छसाज वर स्वच्छ सजि ॥
लै भट भीर तुरंत, धायो रत आरूढ़ ह्वै ॥ ३१ ॥

हरिगीतिका छंद ।

लखि अच्छ वपु छबितेज हनुमत वीर चित चकृत भये ॥
सो सपदि चापहि तान बान संधान त्रैकपि शिरहए ॥
जौलग प्लवंगम उठन चाहो तौ लगे शर जालते ॥
दिय झंपि अंग उताल दीनों शाल नख लग भालते॥ ३२ ॥
कपि तकत इत उत जकत पुनि अवकाश रंच न पावही ॥
इमि अच्छवीर निहार बान अपार विशिख चलावही ॥
हनुमान किय अनुमान निश्चर बाल पै बल भूरहै ॥
कह कीजिये इहि काल मोतनु शालनख शिख पूर है ॥३३॥
यौंकरि विचार सुवीर उछले व्योमदिशि सोऊ तहाँ ॥
चलि बाण वेधे लच्छ करि करिअच्छ कपि व्याकुल महाँ ॥
हनुमंत तब अतिरोष करि निज गात विपुल बढायकै ॥
तल मारि स्यंदन वाजि युत तिहि दीन भूमि गिरायकै ॥ ३४ ॥
पुनि उछालि निश्चर अंतरिच्छहि भिरो दुहुँ दोउन हने ॥
तितहू प्रहारे शस्त्र अंग नितवीर भे व्याकुल घने ॥
तब क्रोध भरि हनुमंत अच्छहि वेगि पद गहि धायकै ॥
आकाशतें धरि धरणि मारो सबल भूरि भमायकै ॥ ३५ ॥
दश कंठसुत शिर कंठ भुज कटि जंघ पद खंडित परो ॥
दुहुँ अच्छ वच्छ सु ह्वै विदीरन अच्छ भट तच्छन मरो ॥

लखि तासु वध निश्चर पराने कीश आय उतालही ॥
तिहि उच्च शिखर विराजकी नगराज दै भुज तालही ॥ ३६॥
दोहा—सुनौ दशानन अच्छ वध, भयो शोक दुख भूरि ॥
तब भाषी घननादसों, महाक्रोध उर पूरि ॥ ३७ ॥
जाहु पुत्र वर वीर तुम, गहि लावौ इतकीश ॥
को आयो कपि ह्वै लखौ, कै यम कै सुरईश ॥ ३८॥
सुनत इंद्रजित साज सजि, आयो अतिहि उताल ॥
लखि हनुमत घननादको, किय घननाद कराल ॥ ३९ ॥
करो युद्ध बहु वीर दुहुँ, काहुहि कोउ न जीत ॥
उत नृपसुत इत पवनसुत, दोऊ सबल अभीत ॥ ४० ॥
इंद्रजीत हिय हारिकै, किय ब्रह्मास्त्र प्रहार ॥
निज इच्छातें कपि गिरो, तासु प्रभाव विचार ॥ ४१ ॥
भूमि परतही वीरको, यातुधान बहु धाय ॥
सन द्रुम बल्कल रज्जुते, बंधन कीन दिढाय ॥ ४२ ॥
रज्जु निबंधन होतहीं, अस्त्र बंधभो मोच ॥
सोगुणिकै घननादके, हृदै भयो अतिसोच ॥ ४३ ॥
अस्त्र बंध जो होय तिहि, बंधन अपर न योग ॥
दूजो बंधन होतही, रहै न मंत्रनियोग ॥ ४४ ॥
इंद्रजीत इमि मनहि मन, सोचत करत विचार ॥
ताडत खैंचत कपिहि भट, लाये सभामझार ॥ ४५ ॥

प्र० वा० ॥ सुं० कां० ॥ स० ४८ ॥श्लोक ॥

ततः स्वायंभुवैर्मंत्रैर्ब्रह्मास्त्रं चाभिमंत्रितम् ॥
हनूमांश्चिंतयामास वरदानं पितामहात् ॥ १ ॥
न मेस्य बंधस्य च शक्तिरस्ति विमोक्षणे लोकगुरोः प्रभावात्
इत्येवमेवं विहितोस्त्रबंधो मयात्मयोनेरनुवर्तितव्यः ॥ २ ॥
सवीर्यमस्त्रस्य कपिर्विचार्य पितामहानुग्रहमात्मनश्च ॥
विमोक्षशक्तिं परिचिंतयित्वा पितामहाज्ञामनुवर्ततेस्म ॥ ३ ॥

अस्त्रेणापि हि बद्धस्य भयं मम न जायते ॥
पितामहमहेंद्राभ्यां रक्षितस्यानिलेन च ॥ ४ ॥
ग्रहणे चापि रक्षोभिर्महन्मे गुणदर्शनम् ॥
राक्षसेन्द्रेण संवादस्तस्माद्गृह्णंतु मां परे ॥ ५ ॥
स निश्चितार्थः परवीरहंता समीक्ष्यकारी विनिवृत्तचेष्टः ॥
परैः प्रसह्याभिगतैर्निगृह्य ननाद तैस्तैः परिभर्त्स्यमानः ॥६॥
ततस्ते राक्षसा दृष्ट्वा विनिश्चेष्टमरिंदमम् ॥
बबंधुः शणवल्कैश्च द्रुमचीरैश्च संहतैः ॥ ७ ॥
स बद्धस्तेन वल्केन विमुक्तोऽस्त्रेण वीर्यवान् ॥
अस्त्रबंधः स चान्यं हि न बंधमनुवर्तते ॥ ८ ॥
अथेंद्रजित्तं द्रुमचीरबद्धं विचार्य वीरः कपिसत्तमं तम् ॥
विमुक्तमस्त्रेण जगाम चिंतामन्येन बद्धोप्यनुवर्ततेऽस्त्रम् ॥ ९ ॥
अहो महाकर्म कृतं निरर्थं न राक्षसैर्मंत्रगतिर्विमृष्टा ॥
पुनश्च नास्त्रे विहितेऽस्त्रमन्यत्प्रवर्तते संशयिताःस्म सर्वे ॥१०॥
अस्त्रेण हनुमान्मुक्तो नात्मानमवबुध्यते ॥
कृष्यमाणस्तु रक्षोभिस्तैश्च बंधैर्निपीडितः ॥ ११ ॥
हन्यमानस्ततः क्रूरै राक्षसैः कालमुष्टिभिः ॥
समीपं राक्षसेंद्रस्य प्राकृष्यत स वानरः ॥ १२ ॥
अथेंद्रजित्तं प्रसमीक्ष्य मुक्तमस्त्रेण बद्धं द्रुमचीरसूत्रैः ॥
व्यदर्शयत्तत्र महाबलं तं हरिं प्रवीरं सगणाय राज्ञे १३॥इत्यादि

दोहा—रावणसभा विलोकिकै, चकित चित्त हनुमंत ॥
करजोरे ठाढे उचित, सुर अरु असुर अनंत ॥ ४६ ॥

प्र० ॥ हनुमन्नाटके ॥ श्लोक ।

ब्रह्मन्नध्ययनस्य नैष समयस्तूष्णीं बहिः स्थीयतां स्वल्पं जल्प बृहस्पते जडमते नैषा सभा वज्रिणः ॥ वीणां वारय नारद श्रुति-कथालापैरलं तुम्बुरो सीतारल्लकभल्लभग्नहृदयः स्वस्थो न लंकेश्वरः॥ ॥ १४॥ इंद्रं माल्यकरं सहस्रकिरणं द्वारप्रतीहारकं चंद्रं छत्रधरं समी-रवरुणौ संमार्जयंतौ गृहान् ॥ पाचक्ये परिनिष्ठितं हुतवहं किं नाम नेहेक्षसे रक्षोभक्ष्यमनुष्यमात्रवपुषं रे राघवं स्तौषि किम्॥ १५॥ इत्यादि

दोहा–दशमुख साज समाज वर, तेज प्रताप सरूप ॥
निरखि सराहत मनहिं कपि, गुणत समस्त अनूप ॥ ४७ ॥
लंकनाथ हनुमानको, बल वपु तेज निहारि ॥
सोचत विधि हरि शंभुको, आयो कपितनु धारि ॥ ४८ ॥
यौं गुणि रावण छिनहि छिन, हेरत करि दृगबंक ॥
त्यौं उतंक तिहि लखत कपि, लोचन लाल निशंक ॥ ४९ ॥
तब प्रहस्त प्रति दशवदन, कही सुबूझौ याहि ॥
वन भंजन किहि काज किय, क्यों आयो को आहि ॥ ५० ॥

चौ०–सुनि प्रहस्त बूझी सब कीशै ❀ कह हनुमंत सुमिरि निजईशै ॥
कपि हौं पवनपुत्र हनुमाना ❀ रामदास लघु करत बखाना ५१ ॥
राज दरश हित विपिन उजारा ❀ निज तनु रक्षाहित दलमारा ॥
जनकसुताहि लखन हित आयो ❀ पुनि कपीश शिख देन पठायो ५२
यौं प्रहस्त प्रति कहि कपि वंका ❀ पुनि बोले रावणहि निशंका ॥
निश्चरनाथ परमहित मानी ❀ अंगीकार करिय ममवानी ५३ ॥

सवैया कवित्त ।

लुकि कीजत है कहुँ नेकी बदी वह देखत है सबही गति साफै ॥
यह भूलि न जानियो जीमें कबौं जुकरैं हम काम सु कोउ न भाफै ॥
रसिकेश इहाँ कछु जैसी करी तिहिमें तिलहू न घटै न इजाफै ॥
उत वैसिहि हेत तिहारे तयारहै ह्वां हरिके घर होत निसाफै ॥ ५४ ॥

दोहा–हौ निश्चरपति वेद विद, सकल ज्ञान गुणधाम ॥
तव हौं अति हितमानिकै, कहौं भजौ श्रीराम ॥ ५५ ॥

चौ०–शिबिका मध्य सियहि बैठारी ❀ दासी भाव सकल तुवनारी
पुत्र बंधु युत निश्चरनाथा ❀ राम शरण गमनौ मम साथा ५६ ॥
याहीमें सब भाँति भलाई ❀ न तरु वृथा तुव सकल नशाई ॥
सुनि हनुमंत बचन दशशीशा ❀ कही सम्हरि बोलत नहिं कीशा ५७
राम लषण द्वै मनुज दुखारे ❀ त्यौं दुर्बल कपि भालु बिचारे ॥
जिनहिं सदा मम निश्चर खाहीं ❀ तिनके शरण वीर ह्वै जाहीं ५८ ॥

तब हनुमंत कही करि क्रोधा ❀ तू वेदज्ञ रंच नहिं बोधा ॥
हौं जानौं आयो तुव काला ❀ सुनि रिसाय बोलो दशभाला५९

दोहा—है कटुवादी कीश अति, वेगि करौ वध याहि ॥
सुनि आज्ञा निश्चर उठे, लै लै शस्त्र उछाहि ॥ ६० ॥
तबहि विभीषण जोरि कर, भ्रातहि कही बुझाय ॥
नाथ नीति जानै सकल, दूत अवध्य सदाय ॥ ६१ ॥
वध कारागृह द्वै न अरु, इते दूत हित दंड ॥
अंग विरूप सुताड़ना, मुंडनादि सब चंड ॥ ६२ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ सुं० का० स० ५२ ॥ श्लोक।

वैरुप्य मंगेषु कशाभिघातो मौंडयं तथा लक्षण सन्निपातः ॥
एताह्नि दूते प्रवदंति दंडान्वधस्तु दूतस्य न नः श्रुतोस्ति ॥ १६ ॥

चौ०सुनि रावण तब नीति प्रमाना ❀ कही बोलि निश्चर बलवाना ॥
कीशहि पुच्छ परम प्रिय होई ❀ याते भस्म करौ द्रूत सोई ६३॥
सुनत अनेक निशाचर धाये ❀ जीरन वसन तैल बहु लाये ॥
कपि विचार युत पुच्छ बढाई ❀ यातुधान सो लखि रिसलाई ६४
पुच्छ लपेटे वसन घनेरे ❀ सिंचि तैल बहु घट चहुँ फेरे ॥
तामधि पावक दई लगाई ❀ चले कपिहि लै ढोल बजाई ६५॥
नगर माहिं फेरो चहुँ ओरा ❀ कौतुक लखैं सकल करि शोरा॥
ताछिन इक तिय सिय ढिग धाई ❀ हनुमत दशा समस्त सुनाई ६६॥
सो सुनि सीता भई दुखारी ❀ अति उताल उठि लै करवारी ॥
अनल दिपाय प्रदक्षिण दीना ❀ कहि वर वैन सत्य प्रण कीना६७

दोहा—मेरो मन वच कर्मते, सत्य पतिव्रत जोय ॥
तौ हनुमंतहि वेगही, अनल तोय सम होय ॥ ६८ ॥
यौंकहि मुख कपि ओर करि, सींचो अनल सुवारि ॥
शीत पुच्छ तच्छनलगो, वीर सुलयो विचारि ॥ ६९ ॥

चौ०—तब हनुमंत हीय ठहराई ❀ इमि औसर कब फेरि मिलाई ॥
सो गुणि लघुतनु करि बलवंता ❀ बंधन ते काढि निमुकि तुरंता ७०
प्रबल मेघ सम गर्जि कराला ❀ भये पर्वताकार विशाला ॥

बंध मोच लखि निश्चर भागे ❀ हनूमान अति आनँद पागे ७१॥
उछलि उताल उच्च गृह जाई ❀ प्रबल अनल चहुँ ओर लगाई॥
तहँ ते धाय अपर थल जारा ❀ कूदि सुधाम और पुनि वारा ७२॥
एक विभीषण सदन बचाई ❀ लंका अपर समस्त जराई॥
ताछिनु प्रबल पवन किय जोरा ❀ माचो नगर शोर अति घोरा ७३
धाय धाय चहुँ पवनकुमारा ❀ पैठि पंथ गढ सदन बजारा॥
लाई अनल उठी बहु ज्वाला ❀ छायो हाहाकार कराला॥ ७४॥

दोहा—अमित निशाचर निश्चरी, जान साज आगार॥
अग्नि उतंक सुलंक चहुँ, लगी होत जरिछार॥ ७५॥
रावण अति व्याकुल भयो, जन धावत चहुँ ओर॥
जरत मरत भागत परत, करत सुआरत शोर॥ ७६॥
एक विभीषण भौन अरु, सिया रहैं जिहि ठोर॥
बचे दुहूँथल राम बल, लंक जरी सब ओर॥ ७७॥
इमि हनुमंत सुवीर वर, लंक नगर सब जार॥
अनल सिराई पुच्छकी, कूदि पयोधिमझार॥ ७८॥
मंजन किय तनु स्वेदजो, परो सिंधु महँ भूरि॥
सो सफरी भषिकै जनो, मकरध्वज बल पूरि॥ ७९॥
करत सुमंजन कीश उर, बाढो सोच अपार॥
भो अनर्थ जारो सकल, राखो कछु न विचार॥ ८०॥
नगर वाटिका बाग बन, गढ़ गृह पुर प्राकार॥
सब जारो हौं क्रोध वश, कियो सकल क्षैकार॥ ८१॥
सुरति न राखी सीयकी, हाय कहामैं कीन॥
भयो अयश पातक मरन, अरु त्रिलोकपतिहीन॥ ८२॥

दोवई छंद।

सीय मरन सुनि राम न जीवैं तिन बिन लषण न रैहैं॥
सोलखिकै सुकंठ तनु त्यागैं तब सब कपि जियदैहैं॥
सुनि उत भरत सबंधु मातगण युत समाज मृत होवैं॥
कीशवंश रघुवंश दुहूँ ये मो करणी वश खोवैं॥ ८३॥

दोहा–धिग मम जीवन जन्म बुधि, धिग धिग बल धिग क्रोध॥
धिग विद्या गुण रूप धिग, जो नहिं राखो बोध ॥ ८४ ॥
मोहि उचित सब भाँति अब, प्राण त्याग इहि काल ॥
यौं सोचत विलपत अतिहि, व्याकुल अंजनिलाल ॥८५ ॥
तौ लग सुने सुबैन कपि, इत उत होत पुकार ॥
जरी वाटिका सिय बची, यह आचरज अपार ॥ ८६ ॥
उत सीता सब विधि कुशल, इतै विभीषण भौन ॥
बचे सु द्वै थल अरु सकल,जरे सु कारण कौन ॥ ८७ ॥
सो०–सुनी गिरा हनुमंत, यौं तब कछु उर धीर धरि ॥
आये धाय तुरंत, निरखि सियहि प्रफुलित भये ॥ ८८ ॥
स्वामिनि पद धरि शीश, करी विनय बहु धीरदै ॥
तब सिय सहित अशीश, कहे वचन अति प्रीति युत८९॥
सुनि हनुमत शिरनाय, पाय रजाय अनंद युत ॥
रामचरण हिय ध्याय, चलि आये पुनि सिंधुतट ॥ ९० ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० लंकादहन
वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

दोहा–सागर तट हनुमंत कपि, गिरि अरूढ़ ह्वै वीर ॥
पार गमन हित हर्ष युत, कीनो भीम शरीर ॥ १ ॥
अंग फुल्ल रोमांच भो, पुच्छ गुच्छ शिरधार ॥
कुधर चापि उछले सबल, गमने व्योम मझार ॥ २ ॥
सिंहनाद करि वीर कपि, नभ मंडल ह्वै जात ॥
सिद्धि भयो प्रभुकाज गुनि, छिन छिन हिय हरषात ॥ ३ ॥
सुर किन्नर गंधर्व मुनि, खड़े व्योम चहुँ ओर ॥
ताछिन कपिहि सुनाय कै, विनय करत कर जोर ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ऐसो ओज सुयश विराजै महि मंडलमें परम प्रचण्ड तनु तेज भूरि भानको ॥ जाकी कलकीरति बखानैं राम आप मुख शेष हू न गाय सकैं ताके गुण गानको ॥ रसिकविहारी सुखदायक सदाही वीर

दूजो जनपाल दानी करुणा निधानको॥ दीननको त्राता मोद मंगल विधाता बहू ऋद्धि सिद्धि दाता वंदों नाम हनुमानको॥५॥संकट हरन दुष्ट दानव दरन छल छिद्रके छर्रन शोक सिंधुके तरन हैं॥अंबुज बरन बहु वित्तके भरन वेगि औढर ढरन दीन पालन करन हैं ॥ अशरन शरन सुभक्त उद्धरन जोम जंगके लरन पूरी पैजके परन हैं ॥ रसिकविहारी हेतु सुफल फरन सदा ऐसे कपि केशरीकिशोर के चरनहैं ॥ ६ ॥ दाताहैं अतुल जन त्राता वरवंड बहु दुष्टनके घाता हैं प्रचंड सो घनेरे हैं॥ रसिकविहारीके कलेशके निपातां सदा भक्त भय हाता चहुँ येही निरवेरे हैं ॥ केशरी किशोर रणरोर वर जोर वीर पकर पछौरें विघ्न जेते सब नेरे हैं ॥ वैरीबल भंजा उद्धखल दल गंजा धीर दीन मन रंजा ऐसे पंजा युग तेरे हैं ॥ ७ ॥ गिरि सों गंभीर प्राण हरत सुवीरनके वैरिन विदीरनको वज्र सों करेरोहै ॥ पव्वै सो परे है खल झुंडनके मुंडनपै परम प्रचंडित उदंड सो घनेराहै ॥ उद्धत अपार जाके बलको न वारापार रसिकविहारी दीन रक्षक निवेरोहै ॥ केशरीकुमार निज वीरता विचार वीर दुष्ट हर जुष्ट रुष्ट पुष्ट मुष्ट तेरोहै ॥ ८ ॥ भंजत अरिष्ट कोटि अति उतकृष्ट रहै दुष्टन तलिष्टन पै क्रुद्धित करेरी है ॥ दीनके अभिष्टनको पूरत वरिष्ट वेगि अमित गरिष्ट इष्टवान हित हेरी है॥ दृष्टको अदृष्ट औ अदृष्टहूकों दृष्ट करै उतपति पालक सँहार सृष्टिके रीहै ॥ अधिक कुदृष्ट सदा रहत मलिष्टनपै रसिकविहारी पै सुदृष्ट दृष्ट तेरी है ॥ ९ ॥ तूतो वीर सुखद सदाही दीन दासनको रसिकविहारी हेत संपतिकी सैकरै॥मुष्टनसे मारिकै विदारत अतुष्टनकों जोमजुष्ट रुष्ट पुष्ट दुष्टनकी क्षैकरै॥चर्व चर्व डारत अखर्व गर्व गर्विनको विघ्नकै कृतघ्ननको मारि विघ्नतै करै ॥ येरे हनुमान बलमान गुणके निधान वेगि हो सहाय मेरी तूही नित्य जैकरै॥१०॥ बंध जीभनिंदक प्रमादी औ चवाइनकी बंधढीठ मूठ भूत प्रेत रोग बंध बंध ॥ बंध दोष परकृत यंत्र मंत्र तंत्र बंध भानु भौम मंद आदि कुग्रह सुबंध बंध ॥ बंध बुद्धि दुष्टनकी वाक्य बंध गति बंध दल खल झुंडनके

कर पद बंध बंध ॥ बंध विष डाढ नख शृंग शस्त्र अस्त्र सबै वेगि वजरंग कुरु चराचर बंध बंध ॥ ११ ॥ बन्ध बंध अनल अकाश जल थल बंध योगिनी मशान यक्ष गन्धरव बन्ध बंध ॥ बंध बंध शाकिनी औ डाकिनी पिशाचिनीको बंध वीरदानव सु ब्रह्मदेव बंध बंध ॥ बंध बंध काल औ कराल वैरी बंध बंध दीह दुख दारिद जु दुर्दिनको बंध बंध ॥ बंध बंध सकल समर्थ खल झुंडनकी वेगि हनुमंत कुरु दुष्ट बल बंध बंध ॥ १२

मणिप्रवालरीति।

देहि वरदानं वीर सम्प्रति यथेच्छितं हि कुरु चानुकंपां तव चरणौ भजाम्यहम् ॥ दुर्जनान् भंजय विभंजय सुदुर्दिनानि शृणु चांजनेय दीनवचसा वदाम्यहम्॥झटिति गृहाण हे निलात्मज तवाशनाय कलुष दरिद्रारातियूथं प्रददाम्यहम्॥ पूरय सुवित्तं रसिकेशस्यानुमोदं दातुं पवनात्मजो मां पातु शिरसा नमाम्यहम् ॥ १३ ॥ माकुरु विलंबं वीर संकटादुद्धारयाशु दासोहं तवास्मीत्यभियाचमानो दीनोहम् ॥ दिक्षु वितनोतु कीर्तिं विपुलां तनोतु लक्ष्मीं देहि रसिकेशस्याभिलाषं त्वदधीनोहम् ॥ निर्भयो हि भूमौ विचरामि भवदाश्रयेण सकलसुकर्ममनोवचनान्मलिनोहम् ॥ करुणाकटाक्षेणावलोकयाशु मां भो कपे नान्यम् ॥ भावयामि पवनात्मजा विहीनोहम् ॥ १४ ॥

दोहा—इमि अपार अस्तुति विविध, होत व्योम चहुँ ओर।
सिय सुधिलै आनंद युत, जात वीर वर जोर ॥ १५ ॥
प्रबल पवन सम वेग बहु, मेघ सरिस कर नाद।
सिद्धि काज भो राजको, यौं टेरत अहलाद ॥ १६ ॥

चौ०—जाम्बवंत अंगद बहुवीरा ❀ जे सब सागर उत्तर तीरा ॥
ते लखि वेग गर्जना भारी ❀ उठि उठि दक्षिण दिशा निहारी १७॥
कीनो सकल सत्य अनुमाना ❀ नहिं घन पौन सु है हनुमाना ॥
काज सिद्धि करिकै कपि आयो ❀ यह आनंद शोर सरसायो ॥१८॥
इमि भाषत तौ लग हनुमंता ❀ आये व्योम निकट बलवंता ॥

दूरहिते कह कीश पुकारी ❀ हौं देखी श्रीजनकदुलारी ॥ १९ ॥
यौं भाषत नभ ते गुणमाना ❀ गिरि पर कूदि परे हनुमाना ॥
हेरि अंगदादिक सब धाये ❀ यथायोग मिलि हिय हुलसाये २० ॥
हनूमान तब लघु वपु कीना ❀ कहि समस्त सबही सुख दीना ॥
वीर पराक्रम सुनि हरषाहीं ❀ पुनि पुनि मिलन पवन सुतकाहीं २१
सिद्धि काज गुणि कपिगण नाना ❀ किलकैं नवैं करैं बहु गाना ॥
धाय धाय सुंदर फल लावैं ❀ हनुमंतहि करि प्रेम खवावैं ॥ २२ ॥
छिन छिन सब हनुमतहि सराहैं ❀ हेरि हेरि मुख हीय उमाहैं ॥
जाम्बवंत प्रमुदित यौं भाषे ❀ सकल प्राण तुमहीं कपि राखे २३ ॥

दोहा—कीश भालु गावत नचत, कहत सुनत वर वैन ॥
यौं हीं अति आनंदमें, तहँ बीती सब रैन ॥ २४ ॥
प्रात होत सब भालु कपि, जुरि बैठे इक ठाम ॥
करन लगे वर मंत्र तब, कह अंगद बलधाम ॥ ॥ २५ ॥
जिते भालु कपि हैं इते, ते सबही बलवंत ॥
पै रावण वध हेत बहु, कै हम कै हनुमंत ॥ २६ ॥
सो हम लंकहि जाय द्रुत, सदल रावणहि मारि ।
जनकसुतहि लै आवहीं, इते पृष्ठ निज धारि ॥ २७ ॥
पुनि चलि सब सानंद अति, रामहिं सौंपैं सीय ।
कपिपति रघुपति काज लखि, सिद्धि मुदित हो हीय ॥ २८ ॥

चौ०—ऋच्छराज सुनि अंगद वानी ❀ कही सुरीत नीत हित सानी ॥
कीशपाल रघुलाल सुदोऊ ❀ दीनी यह रजाय नहिं कोऊ ॥ २९ ॥
सिय दरशन आज्ञा जो दीनी ❀ सो प्रतिपाल पवनसुत कीनी ॥
याते मम संमत यह आई ❀ चलि दीजे सब प्रभुहि सुनाई ॥ ३० ॥
पुनि जिमि ईशरजायसु होई ❀ शिर धरि मुदित करैं सब कोई ॥
जाम्बवंत मत सकल सराहा ❀ उठे वीर भरि हृदय उछाहा ॥ ३१ ॥
द्रुत महेन्द्र गिरिते सब वीरा ❀ उछले व्योम पंथ रणधीरा ॥
किष्किंधा ढिग वेगहि आये ❀ सकल भालु कपि आनँद छाये ३२ ॥

जो मधुवन कपिपति प्रियकारी ❀ जिहि दधिमुख वानर बलभारी ॥
कीशपाल मातुल सो धीरा ❀ रक्षै सदा सहित भट भीरा ॥ ३३ ॥

दोहा—आये मधुवन मध्य सब, लखे सरसफल भूर ।
विविध पत्र मधु वेलि तरु, विमल नीर सुखपूर ॥ ३४ ॥
हनुमानादिक वीर सब, लै युवराज रजाय ।
पैठे मधुवन मध्य द्रुत, कहि जैजै कपिराय ॥ ३५ ॥

दोवई छंद।

धाय धाय चहुँ ओर सुवानर जाति महा उतपाती ।
अशन करैं अरु तोरि बहावैं शाख फूल फल पाती ॥
भंजैं तरु गंजैं बर वेलिन मधु पीवैं किलकारैं ।
भरैं द्रोण कर धरैं मत्तह्वै ढोरि महीतल डारैं ॥ ३६ ॥
कोऊ चढ़ि द्रुम धरि झकझोरैं कोउ शाखगहि झूमैं ।
कोऊ इक तरुतै दूजेपर उछलि बैठि तिहि दूमैं ॥
कोऊ पुच्छ उठाय सुनाचै कोऊ मुखहि बजावैं ।
कोऊ छंद प्रबंध उचारैं कोऊ हँसै जुगावैं ॥ ३७ ॥
कोऊ मल्लयुद्ध हठि ठानैं बैठैं कोउ चुपाई ।
कोऊ रुदनकरैं शिरकर धर सोवैं कोऊ जाई ॥
गर्जैं कोउ शोरतें कोऊ पौढैं मृतक समाना ॥
इहिविधि कपि उनमत्त मोद युत विरचैं कौतुक नाना ॥ ३८ ॥
घोर शोर मधुवन मधि छायो सो सुनि दधिमुख धाये ॥
लखि विध्वंस दंडगहि क्रोधित कीशनमारि भगाये ॥
पुनि अंगद रुखपाय प्लवंगम हनुमदादि बलवाना ॥
सन्मुख ह्वै सुकंठ मातुलके भये युद्ध अगवाना ॥ ३९ ॥
रहे जिते वनपाल कीश तिन हनुमदादि वरवीरा ॥
दंतन नखन तलन पद मुष्टन हनि हनि किये अधीरा ॥
कहे विविध दुर्वचन सकल पुनि देव मार्ग दरशाये ॥
अति अपमान जान सो दधिमुख रक्षक सकल बुलाये ॥ ४० ॥

भाषी क्रोध सहित हम जानी यह अंगद रुख दीना ॥
चलौ कहिय सुग्रीवहि तब सब फल पावैं निजकीना ॥
यौं दधिमुख वनपाल सकल लैआये निपट उदासा ॥
ताछिन कीशनाथ जन संयुत रहे रामके पासा ॥ ४१ ॥
तहँ आय मातुल कपि पतिके चरन गहे बिलपाई ॥
निज वाणी मधि कही सकल गति सुनि बोले हरिराई ॥
वीर धीर हौ वृद्ध सयाने करौ न हिय कछु रोषा ॥
फल मधु अशन पान तिन कीने सो मम हिय अतितोषा ॥४२॥
दोहा–ताछिन लषण सुकंठसों, बूझी कह यह बात ॥
क्यों अधीर ह्वै वृद्धकपि, विनय करत विलपात ॥ ४३ ॥
राम अनुज प्रति कीशपति, बोले हिय हुलसाय ॥
मम मातुल ये मधुवनहि, दक्षैं सदल सदाय ॥ ४४ ॥
सो मधुवन फल फूल मधु, अंगदादि सब आय ॥
अशन पान किय मत्त ह्वै, कानन दियो नशाय ॥ ४५ ॥
बहुरि निवारत रक्षकन, ताड़िकियो अपमान ॥
दरशाये निज देवमग, हैं वनपाल प्रधान ॥ ४६ ॥
सुनि हँसि बूझी लषण पुनि, यह तव कपि कुलमाहिं ॥
कहा रीति सुनि कीशपति, वचन कहे तिनपाहिं ॥ ४७ ॥
देवमार्ग निज कीशकों, कीश दिखावै जोय ॥
तौ दरशावै जाहि तिहि, भूरि निरादर होय ॥ ४८ ॥
याते दधिमुख वृद्ध कपि, मम मातुल वनपाल ॥
वीर प्रधानहि दुख भयो, कीश न करी कुचाल ॥४९॥
पै या छिन उनमत्तकपि, कियो भूरि मधुपान ॥
पुनि मो मत सिय शोध दृढ, करि आये हनुमान ॥५० ॥
सिय न लखी होती तु पै, करते इतो न द्वंद ॥
करि आये ध्रुव काज तब, छाके परम अनंद ॥ ५१ ॥

चौ०सुनि सुकंठ मुखते वरबैना ❀ मुदित भये दुहुँ राजिव नैना ॥
बोले रामसखा तव वानी ❀ हैं सत हमहुँ परत यह जानी५२
तब कपीश मातुलहि बुझाई ❀ कही वेगि मधुवन मधि जाई ॥
मम ढिग पठवो सबहिं उताला ❀ सुनि शिरनाय गये वनपाला५३

प्र० वा० सुं० कां० सर्ग ६१ ॥ श्लोक।

प्रीतिमंतस्ततः सर्वे वायुपुत्रपुरःसराः ॥ महेंद्राग्रात्समुत्पत्यपुप्लुवुः प्लवगर्षभाः ॥१॥ प्लवमानाः खमाप्लुत्य ततस्ते काननौकसः ॥ नंदनोपममासेदुर्वनं द्रुमशतायुतम् ॥ २ ॥ यत्तन्मधुवनं नाम सुग्रीवस्याभिरक्षितम् ॥ अधृष्यं सर्वभूतानां सर्वभूतमनोहरम् ॥३॥ यद्रक्षति महावीरः सदा दधिमुखः कपिः॥मातुलः कपिमुख्यस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ॥ ४ ॥ ततः कुमारस्तान्वृद्धान् जांबवत्प्रमुखान्कपीन् ॥ अनुमान्य ददौ तेषां निसर्गं मधुभक्षणे ॥५॥ भक्षयंतः सुगंधीनि मूलानि च फलानि च ॥ जग्मुः प्रहर्षं ते सर्वे बभूवुश्च मदोत्कटाः ॥६॥ गायंति केचित्प्रहसंति केचिन्नृत्यंति केचित्प्रणमंति केचित् ॥ पठंति केचित्प्रचरंति केचित्प्लवंति केचित्प्रलपंति केचित् ॥ ७ ॥ ततो वनं तत्परिभक्ष्यमाणं द्रुमांश्चविध्वंसितपत्रपुष्पान् ॥ समीक्ष्य कोपाद्दधिवक्त्रनामा निवारयामास कपिः कपींस्तान् ॥ ८ ॥

पुनः ॥ तत्रैव सर्गः ६२ ॥

तेपि तैर्वानरैर्भीमैः प्रतिसिद्धा दिशो गताः ॥
जानुभिश्च प्रघृष्टाश्च देवमार्गं च दर्शिताः ॥ ९ ॥ इत्यादि ॥

चौ०दधिमुख वेगहि मधुवन जाई❀ कपिपति आज्ञा सबहि सुनाई॥
ताछिन वनचर अति अकुलाने ❀निज अपराध विचारि डराने५४
पुनि धरि धीरज सपदि सिधारे ❀ अंगद अग्रगण्य करि सारे ॥
उछले नभमारग ह्वै धाये❀अति उताल गर्जत कपि आये५५
गिरिवर पर युत सकल समाजा ❀ राजत राम लषण कपिराजा ॥
ताछिन अंगदादि सब कीशा ❀ सादर आय नवायो शीशा ५६
जाम्बवंत अंगद हुलसाई ❀ अति उताल वर गिरा सुनाई॥
सिद्धि काज हनुमत करि लाये❀राघव कृपा कुशल सब आये५७

सुनि सुग्रीव सहानुज रामा ❀ मुदित भये गुणि पूरण कामा ॥
गदगद कंठ अंग पुलकाने ❀ प्रिया प्रीति रघुवर उमगाने ८८
रही न धीर वीर दिशि हेरी ❀ निज समीप अतिआतुर टेरी ॥
सादर अंकलाय बैठारे ❀ राजकुँवर मृदु वचन उचारे८९

दोहा—कहाँ प्राण प्यारी सिया, भाषौ पवनकुमार ॥
हौं धाऊं अति वेगि तहँ, जहँ जीवन आधार ॥ ९० ॥

घनाक्षरी कवित।

मेरी प्राणप्यारी तुम निज दृग देखी सत्य भाषौ वेगि नेकहू न शंक हिय राखो वीर ॥ कितहैं कहाँहैं किहि देश किहि भेष माहिं ग्राम नाम ठाम धाम वरणि धरावो धीर॥रसिकविहारी कही जनकदुलारी काह जीवै किमि बाला कैसे सहत वियोग पीर ॥ मेरो दिन रात विरहानल जरावै गात सपदि सिरावो वरसायकै सुबैन नीर ॥९१ ॥

दोहा—तब हनुमान सुवीर वर, बोले दुहुँ कर जोर ॥
सिंधु पार लंका नगर, अनुपम दक्षिणओर ॥ ९२॥
तहाँ अमित निश्चर प्रबल, भूपति रावण नाम ॥
लै राखी सो जानकिहि, वन अशोक वर धाम ॥ ९३ ॥
परम प्रबंध अपार चहुँ, दशमुख राखत आप ॥
बिकट निश्चरिनमध्य सिय, बैठी करहिं विलाप ॥ ९४ ॥
सत्य पतिव्रत धर्म युत, प्रभुपद सुमिरहिं सीय ॥
दरश आश करि छिनहि छिन, वरवस राखहिं जीय ॥९५ ॥
मोहिं रावरो दास दृढ, जानि महा सुखपाय ॥
मम स्वामिनि प्रभु हेत यह, विनय करी शिरनाय ॥ ९६ ॥
हौं दासी प्रभु चरणकी, दीन आपनी जानि ॥
मोहिं दरश दीजे सपदि, हौ सुभक्त सुखदानि ॥ ९७ ॥
भयो होय भारी जुपै, मोते कछु अपराध ॥
तौ सबही कीजे क्षमा, प्रभु उर दया अगाध ॥ ९८ ॥
मेरे मन वच कर्म नित, प्रभु बिन और न कोय ॥
पराधीन अबला दुखी, देखि कृपा द्रुत होय ॥ ९९ ॥

दरश आश द्वै मास लग, औरहु राखौं प्राण ॥
अवधि गये तनु त्यागिहौं, दुसह कलेश निदान ॥ ७० ॥
यौं कहिकै हनुमंत पुनि, बोले दृग जल ढार ॥
जनकसुता दुख कहत प्रभु, मो हिय होत दरार ॥७१॥
सो सुनि रघुवर श्वास लै, हिलकि उससि अकुलाय ॥
कही हाय ममवल्लभा, अब किहि भाँति मिलाय ॥ ७२ ॥
यौं कहिकै कपि ओर लखि, दृग भरि ह्वै मुख दीन ॥
विरह प्रेम दुख सुख उमँगि, बोले निपट अधीन ॥ ७३ ॥
मम हित निज भूषण वसन, प्रिया न दीनो वीर ॥
विनपाये तिहि चिह्न कछु, मो उर धरै न धीर ॥ ७४ ॥
तब हनुमंत उताल अति, सिय भूषण सो दीन ॥
हेरतही उमँगाय कै, राजकुँवर करलीन ॥ ७५ ॥
निज प्यारीके शीशको, भूषण दृढ पहिचान ॥
लीनो हृदय लगाय तिहि, अति अनंद उमगान ॥ ७६ ॥
ह्वै प्रसन्न बहु कपिहि पुनि, लायो अंक मझार ॥
बहु बखान हनुमानको, कीनो राजकुमार ॥ ७७ ॥

चौ०-पुनि रघुवीर धीर उर धारी ❀ जीवत सिय दृढ हृदय विचारी॥
तब बूझी कीशहि रघुवीरा ❀ लंक कथा वरणो सब वीरा७८॥
सुनि हनुमंत प्रभुहि शिरनाई ❀ सकल कथा विस्तृत निज गाई॥
सुनि बोले कर जोरि सुकीशा ❀ यह तव कृपा सकल जगदीशा७९
सुनि हनुमंत कर्म रघुवीरा ❀ अपर भालु कपि सब वरवीरा॥
बुद्धि नीति बल भूरि सराहे ❀ सिद्धि काज गुणि हृदय उछाहे८०

इति श्री० रा०र० वि० वि० सीतासंदेशप्राप्तिवर्णनो नाम दशमोविभागः॥ १०॥

दोवईछंद।

सुनि हनुमत मुखलंक कथा सब रघुनंदन धनुधारी ॥
सिया ध्यान करिकै सुकंठ सों मंजुल गिरा उचारी ॥
हे कपिराज आज अगहनकी असित अष्टमीनीकी ॥
पुनि नक्षत्र उत्तरा फालगुनि आश पुजावैं जीकी ॥ १ ॥

तदुपरि हस्त समस्त योगवर है प्रशस्त शुभदाई ॥
पुनि मुहूर्त अभिजित यहि औसर अरु बहु सगुन जनाई ॥
ऐसे समय पयान अनी युत होय विजय चालिकीजे ॥
याते सखा वेगि कपि ऋच्छन गमन रजायसु दीजे ॥ २ ॥

प्र० ॥ वाल्मी० ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग ४ ॥ श्लोक ।

अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीवः प्रयाणमभिरोचते ॥ युक्तो मुहूर्ते विजये प्राप्तो मध्यं दिवाकरः॥१॥उत्तराफाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते॥ अभिप्रायाम सुग्रीवः सर्वानीकैः समावृतः ॥ २ ॥ उपरिष्टाद्धि नयनं स्फुरमाणमिमं मम ॥ विजयं स मनुप्राप्तं शंसतीव मनोरथम् ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोवई छंद ।

सुनि सुग्रीव बुलाय वेगि भट यथा योग समुझाई ॥
दई रजाय चले प्रमुदित सब कीश भालु समुदाई ॥
पवनसुवनके कंध राम लछमन अंगदके कांधे ॥
शोभित भये भ्रात दुहुँ गमने वरणि खंग कटिबांधे ॥ ३ ॥
पंथ सुधारत जात नील कपि भालु लक्षलै आगे ॥
कुमुद सदल शोधत मग चहुँ दिशि चलैं सजग सँग लागे ॥
तिन पाछे गज गवय गवाक्षहु गवनै अनी समेता ॥
ऋषभ वाहिनी सहित दाहिनी ओर सिधार सचेता ॥ ४ ॥
गंध हस्ति दुर्धर्षतरस्वी गंधमादनहि आदी ॥
चलैं वामदिशि बहु वीरन युत गर्जैं कीश प्रमादी ॥
बली सुषेण बेगदरशी अरु जाम्बवंत भट आछे ॥
विकट भालु कपि विपुल सहित वे गमन करत हैं पाछे ॥ ५ ॥
लै शतबली कोटि दश वानर अनी चहूँ दिशि चालै ॥
कपि शतकोटि पनस केसरि लै ते तिनहूं प्रतिपालै ॥
इहि विधि विकट कटकचहुँ गमनै यथा उचित सह चेता ।
मध्य सबंधु राम तहँ कपिपति कीश अपार समेता ॥ ६ ॥

कीशभालुदल अमित भूमि नभ मारग मुदित सिधावैं ॥
नगर ग्राम आराम कृषी बहु गमनत सकल बचावैं ॥
होत शकुन शुभ निरखि राम युत हर्ष सबै मनमाहीं।
गर्जहिं कपि तरु गिरि गहि धावैं करि कलोल किलकाहीं ॥ ७॥
कंद मूल फल फूल पत्र मधु अशन करै हरषाई।
सब तरु वेलि सफल छाये चहुँ निज निज समय विहाई ॥
इहि विधि अमित भालु कपि संयुत राम सप्तदिन माहीं।
पहुँचे आय उताल सिंधु ढिग दल छायो चहुँ घाई ॥ ८ ॥
चढि महेंद्र गिरिपर रघुनंदन लखि सबंधु वारीशा ॥
सादर दुहुँ कर जोर विनय युत ताहि नवायो शीशा ॥
पुनि तहँते वेगहि तट आये सब कह दई रजाई ॥
कियो वास कपि भालु त्रिमंडल उचित सु आयसुपाई ॥ ९ ॥
द्विविद मयंद नील नल आदिक लै कपि भालु अपारा।
लखत फिरत महि व्योम सजग बहु चहूं सुभट रखवारा ॥
अपर अनेक प्रबंध यथोचित दृढ कीने सुग्रीवा ॥
नीति रीति भय प्रीति सहित सब रहे वीर बलसीवा ॥ १० ॥
योंथपि सैन त्रिदिन सागर तट रघुवर कियो निवासा ॥
बैठे लषण सुकंठ पवनसुत आदि रामके पासा ॥
ताछिन राजकुँवर दक्षिण दिशि निरखि नैन भरि नीरा ॥
लै उसाँस कहि हाय लाडिली बोले निपट अधीरा ॥ ११ ॥
दोहा—अहो बंधु याही दिशा, हैं सिय प्राण अधार ॥
मिलन होय किमि बीच यह, परोनदीश अपार ॥ १२ ॥

हाय धरौं किमि धीर उर, काह करौं कित जाउँ।
हौं किहि सौं विनलाडिली, यह निज दुख बतराउँ ॥ १३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नैनजलगेरनि वा हेरनि अधीन ताकी बोलनि सुदीन ताकी नेक नहिं भूलै है ॥ प्यारे कहि टेरनि सनेहभुज भेरनि सो सकल छबीलीकी भुराई हियहूलै है ॥ रहि रहि

बार बार छिन छिन धाय धाय आय आय विरहा सुरतिशूल शूलै है ॥ रसिकविहारी सुखकारी प्राणप्यारी सदा रैनि दिन मेरे दृग दोउनमें झूलै है ॥ १४ ॥

दो०—पुनि मोहिय नित रैनि दिन, यह कलेश अधिकाय ॥
प्यारी वैस बिलासकी, किमि वियोग सहिजाय ॥ १५ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

नवल छबीली बाल गुण सरसीली मंजु मोद उमगीली और गीली रूप वारी है ॥ रसिकविहारी तरुणाई अंग अंग छाई वैस वर आई चारुशोभा मनहारी है ॥ प्यारीको विधाता सुख औसर दियैहै दुख किहि विधि रैहैं प्राण अति सुकुमारी हैं ॥ यदपि अनेक सोच सोचों पै सदाही एक सबतें कलेश यह मेरे उर भारीहै ॥ १६ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० क० ॥ स० पू श्लो० ॥

न मे दुःखं प्रिया दूरे न मे दुःखं हृतेति च ॥
एतदेवानुशोचामि वयोस्या ह्यतिवर्तते ॥ ४ ॥

दोहा–यौं कहि निराखि सुकंठ दिशि, बोले जलभरिनैन ॥
प्यारीबिन मोको सबै, भये रहत दुखदैन ॥ १७ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

विरह भभूकैं तनुलूकैसी लगी हैं अति मनसिजहूकैं अंग अंगनछई रहैं॥नीर औ समीर छाहँ चन्द्रनिशि चंद्रिकादि शीतल सकल वस्तु तपानि तईरहैं॥रसिकबिहारी कितजाऊँ हाय कासों कहौं दशौ दिशि देखौं तितै अनल मईरहैं॥पावस शरद हिम शिशिर वसंत मोहि प्यारी बिन सबै ऋतु ग्रीषम भई रहैं ॥ १८ ॥ उरकी उमाह सबजानतहि मेरीप्रिया नीकी भाँति जानौं हौं जुप्यारीके जिये रही ॥ रसिक बिहारी उरधारी जो विचारीबाल सोऊ रुचिकारी बात चित्तमें दिये रही ॥ हाय का उपाय कीजे अब न वसाय कछू भयो यह काह अ-भिलाष का कियेरही ॥ करी करतार ऐसी कठिन कुचाल जाते निज

निज चाह दोउ हियकी हिये रही ॥१९॥ लाज मरयाद पितु मातके सकोच वश जौलों रहों सदन न तौलौंचित्त दीनोंमैं॥ बहुरि सिधारो वन तबते दुखारी अति सहित सुबंधु वेष तापसको लीनोंमैं॥ रसिकविहारी सुख समय निरायो जब तब प्रथमैं ते भयो लाडिली विहीनोंमैं ॥ शूलैगी सदाही यह शूल उर मेरे हाय प्यारीको न प्यार कबौं जिय भरि किनोंमैं ॥ २० ॥

दो०–इमि विलखतहीं औचके, लखौ द्वितीया चंद ॥
तिहि वन्दन करि उमँगि उर, पुनि बोले रघुनंद ॥ २१ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

निपट निशंक आज द्वितिया मयंक बंक उदित उतंक सुखहेत नर नारिके ॥ संध्यासमै शोभित सुछंद जगवंदनीय रहत अमंद यौंहीं भाल त्रिपुरारिके ॥ निरखति ह्वैहै उतै जनककिशोरी इतै हौंहूं अबै दरश करोंहों नभ चारिके ॥ रसिकबिहारी इहि औसर भयेहै आय दोऊ इकठोर दृग मेरे अरु प्यारीके ॥ २२ ॥

दोहा–यौं रघुवर अति सीयकी, विरह कलपना कीन ॥
सो लखि लषण सुकंठ दुहुँ, बहु विधि धीरजदीन ॥ २३ ॥
परम विवेकी बुद्धि निधि, राघव हृदय विचारि ॥
युद्ध समै लखि शोक तजि, रहे धीर उर धारि ॥ २४ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० लंकप्रयाण-
वर्णनो नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥
इति श्रीरसिकविहारीकृते श्रीरामरसायन ग्रंथे वियोग
चरित्रवर्णनो नाम पंचमोविधानः ॥५॥

सो०–इत इहि विधि रघुवीर, सदल प्रबल वारीशतट ॥
कियो निवास सुधीर, सहसुकंठ हनुमत लषण ॥ १ ॥
उत दशमुख बलवंत, सहित सुभट निश्चर विविध ॥
करैं सुमंत्र अनंत, सुमिरि सुमिरि हनुमंत बल ॥ २ ॥

चौ०—सभा मध्य बैठो दशभाला ❀ युत सुत सेवक बंधु विशाला॥
ताछिन धाय चारि चर आई ❀ शीशनाय बोले अकुलाई ॥ ३ ॥
नाथ राम वारिधि तट आये ❀ संग भालु कपि दल युत छाये ॥
सुनि हँसि कही मूढ़ अभिमानी ❀ कहा करैं तापस धनुपानी ॥४ ॥
यौं कहि बहुरि निशाचर राजा ❀ बोलो करहु मंत्र दृढ़ आजा ॥
सुनि वच यातुधान बहु यूथा ❀ भाषि उठे भट मुख्य वरूथा॥५॥
महाराज तव अमित प्रतापा ❀ तिहूँ लोक भुजबल यश व्यापा ॥
देव नाग कोउ सकै न हेरी ❀ कहा भीति नर वानर केरी ॥ ६ ॥
सुनि प्रहस्त दुर्मुख बलवाना ❀ कुंभ निकुंभ आदि भट नाना ॥
लै कर शस्त्र अनेक कराला ❀ उठि बोले रावणहिं उताला॥७ ॥
अबहिं जाय हम आवहिं मारी ❀ सह नृप सुवन भालु कपि झारी॥
सुनि तिन दिशि लखि भौंह चढ़ाई ❀ कहे विभीषण वचन रिसाई८ ॥
बैठहु मूढ़ जाहु कित धाये ❀ बिन निज ईश रजायसु पाये ॥
यौं कहि पुनि भ्रातहि कर जोरी ❀ बोले वचन विनीत निहोरी॥९ ॥

दोहा—नाथ सकल ये मंदमति, हैं अयान वश पान ॥
इनके वचन न मानिये, प्रभु बल बुद्धि निधान ॥ १० ॥
मो संमत उर आनिये, जिहि ते बहु हित होय ॥
रहै राज तनु कुटुम यश, नीक कहै सबकोय ॥ ११ ॥
सो गुनि गुण गनि दीजिये, सिय रामहि हरषाय ।
समर किये कह जानिये, धौंकिहिविजय मिलाय ॥ १२ ॥
बंधु वचन सुनि दशवदन, कछू न उत्तर दीन ।
सबहि शीष दै आप उठि, भवन गवन द्रुत कीन ॥ १३ ॥
तहाँ सदन एकांत मधि, बहुरि विभीषण जाय ॥
समझायो भ्रातहि विविध, प्रीत भीत दरशाय ॥ १४ ॥
कही जोरि कर तात इत, जबते आनी सीय ॥
तबते अशकुन होत बहु, सकल विचारिय जीय ॥ १५ ॥

हवन अग्नि नाहिं दिपति पुनि, उठत धूम बहु श्याम ॥
झरैं अनल कन अरु शिखा, आहुति मंत्र निकाम ॥ १६ ॥
हवन पठन पूजन थलहि, दरशत व्याल कराल ॥
अशन पान साकल्य चहुँ, हो पिपीलिका लाल ॥ १७ ॥
सुरभी पयमद गजनको, सूखि गयो सब ठौर ॥
पुनि वसुदीन पुकारहीं, अश्वादिक बहु तौर ॥ १८ ॥
खच्चर ऊंट तुरंग नित, ऊरध रोम रहात ॥
पुनि रोवत दिन रैनिये, अतिहि विकल दरशात ॥ १९ ॥
बोलत काक उलूक बहु, रैनि दिवस खघोर ॥
गृद्ध देत मंडल सदा, पुर ऊपर चहुँ ओर ॥ २० ॥
पुनि दुहुँ संध्या समय नित, बोलत अशुभ शृगाल ॥
नगर द्वार सो क्रूर स्वर, करत आप मृग माल ॥ २१ ॥
ये लक्षण सूचक अशुभ, होत लंकके माहिं ॥
याते सीतहि दीजिये, राम सदल फिरि जाहिं ॥ २२ ॥
सुनि सुरारि क्रोधित कही, रामहिं देउँ न सीय ॥
कहा करैं नर कीश मिलि, कछु न भीति मम हीय ॥ २३ ॥
यौं कह बहुरि विभीषणै, बिदा कियो दशभाल ॥
प्रात होत आयो सभा, चढि रथ अतिहि उताल ॥ २४ ॥
बंधु सचिव सेवक सखा, सुत हित अपर अपार ॥
दशमुख आज्ञा पाय सब, आये सभा मझार ॥ २५ ॥
बैठे सब सादर उचित, तब रावण वरिबंड ॥
सभहि सुनाय प्रहस्त प्रति, भाषे वचन उदंड ॥ २६ ॥
सीता दिये बिहीन जिमि, वेगि विजय निज होय ॥
इमि मतिवंत विचारि दृढ़, मंत्र करौ सब कोय ॥ २७ ॥
सुनि निश्चरपतिके वचन, कुंभकरण रिस लाय ॥
बोलत भयो उताल अति, दुहुँ दृग भौंह चढाय ॥ २८ ॥

सचिव

तोमर छंद।

जब हरी सीय स्वतंत्र। किहिते कियो तब मंत्र ॥
अब काल शीश चढाय ॥ बूझौ उपाय बुलाय ॥ २९ ॥
सुन भ्रात हो कछु कार। जो करत विनहिं विचार ॥
सो अंत अति पछितात ॥ दुहुँ लोक तासु नशात ॥ ३० ॥
पै जो भई अब बात। सो भई क्यों अकुलात ॥
हिय धीर धारहु नाथ। हौं मारिहौं रघुनाथ ॥ ३१ ॥
तब महापार्श्व उदंड। बोलो वचन खल चंड ॥
हे नाथ निश्चर राज। क्यौं करिय दुख बिनकाज ॥ ३२ ॥
प्रभु जाय कै निश्शंक। बरबस सियहि गहि अंक ॥
सजि राखिये रनिवास। रहिये मुदित सविलास ॥ ३३ ॥
तब कही दशमुखताहि। मुहि घोर शाप जुआहि ॥
परतिय रमौं बलठान। हो नाश द्रुत तनु प्राण ॥ ३४ ॥
सुनि अपर निश्चर भूर। बोले यथारुचि क्रूर ॥
ताछिन समै लखि ऐन। भाषे विभीषण बैन ॥ ३५ ॥
विनवौं दुहूँ कर जोरि। हित बात मानिय मोरि ॥
प्रभु वेगि सीतहि देउ। निज हाथ मीच न लेउ ॥ ३६ ॥
सो सुनि प्रहस्त उमाहि। भाषी विभीषण पाहि ॥
नर भालु कपि कह बात। हम सुरन नाहि डरात ॥ ३७ ॥
तब रोष करि हिय माहि। भाषी विभीषण ताहि ॥
क्यों करहु सब मिलि नास। नहिं शुभ चहौ रहि पास ॥ ३८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

तब कछु वीरता न काहू ते बनैगी नेक, जब कपि भालु वीर धाय आय जूटैंगे ॥ ताछिन बचैना कोउ भागेहू त्रिलोक माहिं, जाही छिन राम बाण पन्नगसे छूटैंगे ॥ राघव विरोधी यातुधानके रहैं ना प्राण सहित समाज राजसाज सब खूटैंगे ॥ रसिकविहारी सिय दीनेही भली है बात नत बहु मुंड दधि कुंड सम फूटैंगे ॥ ३९ ॥

तोमर छंद।

यौंकहि दशानन बंधु ॥ भाषी बहुरि मतिसिंधु ॥
मंत्री जु तवसम होय ॥ तौ रहै भूप न कोय ॥ ४० ॥
दोहा-अज्ञानी लोभी निठुर, निकट न राखै कोय ॥
जो नृप सेवक होय इमि, तौ जावै सब खोय ॥ ४१ ॥

सवैया कवित्त।

भिक्षुक मान चहै तौ वृथा औ वृथा गति उत्तम चाहै जुकामी ॥
जो यश लोभी चहै तौ वृथा सुख चाहै वृथाहि कुमारगगामी ॥
यौं रसिकेश विचारौ हिये है वृथा जु पै मुक्ति चहै नरवामी ॥
त्यौं तिहिके सब काज वृथा जिहिके ढिग सेवक होय हरामी ॥४२ ॥
दोहा-सेवक होवै दुष्ट पुनि, भूप मिलै मतिहीन ॥
तहाँ लाभ सुखराजकी, आशा तजैं प्रवीन ॥ ४३ ॥
पै ऐसेही कुमति बहु, क्रूर मंडली माहिं ॥
बुद्धिमंत ज्ञानी गुणी, बडे सुवीर कहाहिं ॥ ४४ ॥
प्रथम बखानत फूलि जे, बड़ी बड़ी बहु बात ॥
ऐसे ते औसर परे, दरशत हैं कदरात ॥ ४५ ॥
इमि प्रहस्त प्रति वचन बहु, भाषे सबहि सुनाय ॥
बहुरि विभीषण बंक लखि, बोले रोष बढ़ाय ॥ ४६ ॥
राम दूत कपि एकही, आयोहो हनुमान ॥
वीर मारि पुर जारिकै, गयो सबै बलभान ॥ ४७ ॥
कछु न बनी तब काहुते, अब बोलत बहु फूल ॥
राम कोपकी अग्निमें, वृथा होत क्यों तूल ॥ ४८ ॥
एक बेर जो कैसहू, जाते लहैं कलेश ॥
फेरि काज सो शंक युत, करै विचारि हमेश ॥ ४९ ॥

सवैया कवित।

फेरि नहीं वह काम करै जिहिते इक बेर कलेश लहे ॥
भीति हिये अति पैठि गई पुनि भूलि न लागहिं काहू कहे ॥

होरसिकेश सुदेश घनो तऊ चौंके रहैं चित चेत गहे ॥
छाँछहु फूंकिकै पीवहिं ज्यौं डरिकै बहु जे जन दूध दहे ॥५०॥
दोहा—पै सबही सिख सुमतिको, दीजे तौ भल होय ॥
क्रूर व्यर्थ मानी हठी, तापर वश नहिं कोय ॥ ५१ ॥
यौं कहि रावण बंधु पुनि, बोले सबहिं सुनाय ॥
हौं जानौं सब शीश पै, कालचक्र मडराय ॥ ५२ ॥
मम भाषित कटु बैनये, अंतर हैं अति मिष्ट ॥
सबहि व्याधि मद ग्रसित हैं, याते लगैं अनिष्ट ॥ ५३ ॥
पै भाषौं मैं हाँकदै, सभा बीच प्रणठान ॥
राम विजय निश्चर अजै, ह्वै है यह ध्रुव जान ॥ ५४ ॥
याते अजहूँ है भली, सकल मंत्र करि आज ॥
चलि रामहिं सिय दीजिये, रहै प्राण कुल साज ॥ ५५ ॥
इहि विधि बहु कटु बैन वर, अंतरप्रीति समेत ॥
कहे विभीषण सचिव प्रति, भ्रात बुझावन हेत ॥ ५६ ॥
चौ०सुनत विभीषण वचन कठोरा ❀ चितवत दशमुख दृग करि घोरा॥
तबहिं इन्द्रजित क्रोधित भाषी ❀ तात भ्रात लघु लघु मति राखी ५७
कही विभीषण तब करि क्रोधा ❀ मूढ अयान तोहि कह बोधा ॥
जो तुहि मंत्र मध्य इत लायो ❀ सो खल वध लायक ठहरायो ५८
दोहा—मत्त बाल तिय मंदमति, हठी पिशुन खलवाम ॥
येते सभा अयोग पुनि, मंत्र मध्य कह काम ॥ ५९ ॥
तू खल पितु युत कालवश, हित अनहित नहिं जान ॥
यातुधान ये मंदमति, करैं अन्यथा मान ॥ ६० ॥

चार्छंद ।

सुनिकै विभीषण बैन निश्चरपतिहि छायो कोप ॥
भाषी अरे मतिमंद तू कुलधर्म कीनो लोप ॥
पुनि शत्रु पक्ष बढाय निंदहि मोहिं तोहिं न शंक ॥
लखि बंधु क्षमहुँ अनीति नत बध योगहै खलरंक ॥ ६१ ॥

दश कंठ कहि कटु बैन बहु किय बंधुको अपमान ॥
तबहीं विभीषण उठे निश्चर चार सँग बलवान ॥
लीने गदा कर उछलि बोले कुपित नभ पथ जाय ॥
हित वचन मानत अहित घेरो काल निश्चर राय ॥ ६२ ॥
कछु दिवस बीते होय गति सो देखिहौ दशमाथ ॥
तजिकै सकल खल दलहिहौं अब जात ढिग रघुनाथ ॥
यौं कहि विभीषण चहूँ निश्चर सहित कीन पयान ॥
सिय राम पद पंकजहि ध्याये हीय सुख उमगान ॥ ६३ ॥
दोहा—इत रावण दरबार ते, उठो गयो निज धाम ॥
उतै विभीषण राम ढिग, चले सुमिरि गुणग्राम ॥ ६४ ॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत रामरसायन ग्रंथ युद्धविधाने
रावणसभामंत्रवर्णनो नाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

दोहा—राम चरण उर ध्यायकै, ठानि सुदृढ विश्वास ॥
चले विभीषण प्रभु शरण, छिन छिन होत हुलास ॥ १ ॥
मन प्रसन्न तनु पुलक अति, प्रीति न हृदय समात ॥
नैन नीर पग डगमगत, करत मनोरथ जात ॥ २ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

सुंदर ललाम सुखधाम अभिराम अति सेय वसुयाम उर आनंद बगारि हौं ॥ ऊरध कमल वज्र अंकुशादि चिह्न सबै परसि प्रमोद पाय शोक श्रमटारिहौं ॥ रसिकविहारी रजनैनन लगाय नित लोचन सिराय निज जनम सुधारि हौं ॥ नाथहैं अनाथनके ऐसे रघुनाथ जूके दृग भरि आज पदपंकज निहारि हौं ॥ ३ ॥ मिटत सकल दुखद्वंद भ्रमफंद घने रहत अमंद सुखकंद छबि पेखि हौं ॥ जाहि लखि कोटि चंद होतहैं दुचंद मंद ताहि मैं विलोकौं धन्य सुकृति विशेषि हौं ॥ दरशत भूलैं छलछंदके प्रबंद सबै रसिकविहारी युग पल सम लेखिहौं ॥ दशरथ नंद हैं अनंदके अनंददानि आज रघुचंदजूको मुख चंद देखिहौं ॥ ४ ॥ आय हैं लषण कपिराय हैं सुभाय भले पायकै रजाय धाय वेगही बुलाय हैं ॥ देखि रघुराय

मुसकायकै बढाय प्रीति सुख सरसाय मीठे बचन सुनाय हैं ॥ रसिकविहारी कृपा लाय हैं दिवाय अभै मोद उमगाय तनु तपन सिराय हैं॥ मुख दरशाय कुरकंज परसाय शीश कौशलकिशोर आज मोहिं अपनाय हैं ॥ ५॥ पाऊँगो हमेश अंग वसन उतारे सबै दीन जानि अधिक कृपालु मन भाऊँगो॥भाऊँगो अहेर संग धाऊँगो बताऊँ पंथ दुर्लभ पुनीत नित्य जूंठनको खाऊँगो ॥ खाऊँगो प्रसाद दास रामको कहाँऊँ भलो रसिकविहारी तजि अनत न जाऊँगो॥जाऊँगो अवध निज जनम गमाऊँ तहाँ गाऊँगो सु कीरति परमपद पाऊँगो॥६॥धरम न जानौं सतकरम न जानौं कछू मरम न जानौं क्यों सुढार मोपै ढरिहैं॥ रावणको भैया हौं कुपंथको चलैया पुनि लंकको वसैया चित्त औगुण जुधरि हैं ॥ जाति हौं निशाचर अरातिनकी पाँतिको हौं रसिकविहारी कौन भाँति मोद भरि हैं ॥ लोक विधि वेद विधि एकहू न जानौं राम किहि विधि मोको विधि अंगीकार करिहैं ॥७॥ जनम गमायो राम नामको न गायो कछू कीनो ना उपाय भवसिंधुके तरनको ॥ शरन मैं जैहौं कौन वदन दिखैहौं हाय औगुण भरो हौं गुण एकौना शरनको ॥ रसिकविहारी है न आपनो भरोसो रंच को सहाय शोक नद पारके करनको ॥ परौ मझधारबीच हौं तौ निराधार अब एकही अधार रघुरायके चरनको ॥ ८ ॥ एकही भरोसो दृढ़ आवत खरोसो यह उपल निषाद गीध अधम विचारे हैं। शबरी औ शाखामृग रीछ कौन वेदपाठी जाते इन ओर कृपा कोरतें निहारे हैं ॥ दीन हैं पियारे दीनबंधुको सुभाव मृदु रसिकविहारी सोई रक्षक हमारे हैं ॥ काहूते न घाट पातकी हों क्यों तजैगे मोहिं वेगि अपनैहैं जो पै इतने उधारे हैं ॥ ९ ॥

सो०—इहि विधि करत विचार, तनु पुलकत हुलसत हियो।
बाढी प्रीति अपार, सियपति पदपंकज सुमिरि ॥ १० ॥
पहुँचे आतुर आय, दूतनसे मृदु यों कहो ।
अरज सुनावो जाय, कौशलराज किशोरको ॥ ११ ॥

विनय

तुरतहिं चरवर जाय, रामानुज कपिराज ढिग।
सादर शीशनवाय, वियन सुनाई तिनहिं सब ॥ १२ ॥
सुनत लषण कपिराज, चकित चित्त सोचत हिये ॥
कहा विभीषण काज, आयो है छल बल कछू ॥ १३ ॥
समाधान करि हीय, जात भये रघुराज ढिग।
करि प्रणाम कमनीय, रुख विलोकि बोले वचन ॥ १४ ॥
नाथ दशानन बंधु, नाम विभीषण ताहिको।
आयो करुणासिंधु, शरणागत सो रावरे ॥ १५ ॥
विहँसि कही रघुवीर, यह विचार कीजे कहा।
तुमहौ निपुण गँभीर, कहो उचित मत होय जो ॥ १६ ॥
बोले दुहुँ कर जोरि, प्रभु सन्मुख कहिबो न भल।
पुनि मम मति अतिथोरि, तदपि कहत बुधि बल यथा १७
एक निशाचर रूप, दूजे रिपुको बंधु है।
सुनिये कौशल भूप, माया मय सब काज है ॥ १८ ॥
तिहि राखिवो न योग, बहुरि रजायसु रावरी।
कहत सयाने लोग, रिपु प्रतीति नहिं कीजिये ॥१९॥
हँसि बोले श्रीराम, नीति उचित सो तुम कही।
दीनबंधु मम नाम, कहत घटित सो होय क्यों ॥ २० ॥

सवैया कवित्त।

एकहु बेर पुकारत आरत दीनगिरा जनकी सुनि पाऊं ॥
तौ तिहि ऊंच न नीच लखौं गहिकै भुज कंठहि वेगि लगाऊं ॥
देउँ अभैपद लोक तिहूं बिच ताहि कबौं छिन हूं न भुलाऊं ॥
सो रसिकेश सुकंठ कहौ शरणागतको किहि भाँति भगाऊं २१॥
गो द्विज घातक होय जुपै तजिकै छल जो शरणागत आवै ॥
छोडि सबै जग प्रीति प्रतीति सु एकही मेरो भरोस दिढावै ॥
ज्यों धन रंकहि भावत है तिहिते अधिको मुहि सो हिय भावै ॥
जो गति याचतहैं मुनि वृंद प्रयास बिना रसिकेश सुपावै ॥२२॥
वेद पुराणनमें सबही शरणागतकी खट रीति बखानैं ॥

नेम सदा अनुकूलहि को अरु वर्जन त्यों प्रतिकूल को ठानैं ॥
राखै प्रतीत जु रक्षणकी अरु भाषै सुगुप्तकथाहि विधानै ॥
त्यौं रसिकेश जु अर्पहि प्राण सुदीन घनोरसहै यह जानै ॥२३॥
जो इतनी शरणागतमें विधि एकहु होय सुहै मुहि प्यारो ॥
सो बिछुरै छिनहूं न कबौं तिहिते पलहू भरि मैं नहिं न्यारो॥
है षटरीति विभीषणमें अब सादर वेगि बुलाउ सवारो ॥
आवतही रसिकेश अभै करि लंकपती कहि ताहि पुकारो ॥२४ ॥
हे कपिराय सुनो मन लाय सुवाणि सदाकी कहों निज हीकी ॥
जीव चराचर होय कोऊ दृढ़ प्रीति घनी मुहि लागत नीकी ॥
रावरोहौं इक बेर कहै तिहिकी न मलीनता देखहुँ जीकी ॥
नीति अनीति न मानौं कछू रसिकेश करौंसम नाकपतीकी२५॥
जो विचरैं छलछंदनमें नर भूलिहु सो मम भक्ति न पावे ॥
जो कुटिलाई विभीषणमैं शरणागत क्यों तजिकै सब आवै ॥
यद्यपि हैं रिपु बंधु सही रसिकेश घनो मुहि सो हियभावै ॥
कौगुण औगुणको निरखै हित जानि हिये जिहि जो अपनावै ॥
त्याग करै शरणागतको तिहिकी सम पातक और नहीं है ॥
रौरवनर्क परै भरि जन्म चहूँ युग चारहु वेद कही है ॥
आपनी होय कछू हितहानि घनो प्रतिपालन ताको सही है ॥
आवै विभीषण वेगि मिलौं प्रण मेरो सुएकहि आँक यहीहै॥२७॥
दीन पुकारहिगो जबही सुनि कानन क्यों हिय धीर धरौंगो ॥
देखि दुखी शरणागतको तब आतुर धायके बाँहगहौंगो ॥
मेटौं कलेश सबै तिहिको निरसंक ह्वै आपनी हानि सहौंगे ॥
मेरोहि एक भरोसो जिनै तिनके वश मैं फिर काह कहौंगो॥२८॥
योगी जपी द्विज दानी तपी नर नारी चराचर होय जु कोऊ ॥
साँची सुप्रीति प्रतीति विना मुहिं रंचहु हीय न भावत सोऊ ॥
पावत है जग दुःख घने भ्रम भूल परे सुख नेक न होऊ ॥
जो रसिकेश अनन्य भजै मुहिं सो शरणागत हैं प्रिय दोऊ॥२९॥
एकहि बेर कहौं सुकहौं कहिकै पुनि औरको और न भाषौं ॥
कीनी कृपा जिहि पै तिहिपै अपराध निहार न रंचहु माखौं॥

जाहि लियो गहिकै अपनाय तिनै रसिकेश न भूलिहु नाषौं ॥
लावो कपीश विभीषणको करि देउँ अभै शरणागत राखौं ॥ ३० ॥
कोतिहिते अधिको प्रिय है तजिकै सब जो शरणागत आयो ॥
राजकुटुंब घने हित बंधु तिनै तृणकी सम देखि भुलायो ॥
मेरोहि एक लयो अवलंब कहौ किहि भाँति सो जात भुलायो ॥
लंकको राज सु आजहि द्यौं रसिकेशजुहौं अवधेशको जायो ३१
दोहा—दीनबंधुके वचन सुनि, मंजुल मृदुल अनूप ॥
चले विभीषण पासको, रामानुज कपि भूप ॥ ३२ ॥
रामानुज कपिराज सों, बोले वचन उताल ॥
कहो कहा करिये अबै, भई रजायसु हाल ॥ ३३ ॥

नगस्वरूपिणी छंद।

सुकंठ शुद्ध यों कही। सही जुनाथ है कही ॥
विचार काह कीजिये। बुलाय ताहि लीजिये ॥ ३४ ॥
कही सुराम बंधुयों। विभीषणै बुलाउँ क्यों ॥
अराति भ्रात आयहै। कछू भली न लायहै ॥ ३५ ॥
कठोर घोरहै महा। नजानिये हिये कहा ॥
करै अकाज काजसो। डरै न रंच लाजसो ॥ ३६ ॥
कछू न फंद लावतो। इतै न भूलि आवतो ॥
सुबंधु बीसबाहुको। हितू न जान काहुको ॥ ३७ ॥

तोटक छंद।

हँसिकै कपिराय सुबात। प्रभुसौं अपनो कछु जोरनहीं ॥
शरणागतको न तजैं कबहूं। अपराध अनेक करै जबहूं ॥ ३८ ॥
पुनि या सु उपाय भली करिये। सुनिये गुनिताहि हिये धरिये ॥
अब एक विभीषण आवतहैं। रघुराज तिनै अपनावतहैं ॥ ३९ ॥
अब नेक विलंब नहीं करनैं। हम औ तुम दोऊ चलैं शरनैं ॥
गहिकै पदपंकज मोद भरै। कहिकै प्रभु पाहि प्रणाम करैं ॥ ४० ॥
शरणागत राखहिंगे जबहीं। करजोरि करैं विनती तबहीं ॥
यह मंत्र हिये दृढ़ ठान भले। बहुरे रघुनायक पास चले ॥ ४१ ॥

रघुराज प्रसन्न विराजतहैं । लखि कोटि दिवाकर लाजतहैं ॥
चहुँ पंथ विभीषणको परखैं । लखिप्रीति प्रतीति हिये हरखैं ४२॥

तोमर छंद ।

तहँ जाय लषण कपीश । कहि पाहि प्रभु जगदीश ॥
आये शरण हम नाथ । अपनाइये गहि हाथ॥ ४३ ॥
सुनि वचन रघुकुलचंद । हँसि कही प्रभु सुखकंद ।
आवो शरण निरशंक ॥ लाये सुकर गहि अंक ॥ ४४ ॥
कपिराज लषण बहोरि । बोले दुहू कर जोरि ॥
महराज सब गुणसिंधु । जनपाल आरत बंधु ॥ २५ ॥
आवत विभीषण एक । तिहि नाथ राखत टेक ॥
आये सु द्वै हम शर्ण ॥ अवलंबलै प्रभुचर्ण ॥ ४६ ॥
अब एकको कहकाज । सुनि हँसि कहो रघुराज ॥
वह शरण प्रथमहि आय । सोकहो क्यों तजि जाय ॥ ४७ ॥
तुम औ विभीषण दोउ । मेरे सरिस प्रिय होउ ॥
लावो बुलाय तुरंत । इमि कही श्रीसियकंत ॥ ४८ ॥
तब चले लषण कपीश । कहि जैति कौशलधीश ॥
आये विभीषण पास । मिलि भेटि हृदय हुलास ॥ ४९ ॥
गहि लषणके पदकंज । अति सुखद कोमलमंजु ॥
दुहुँ कर विभीषण जोरि । कीनो प्रणाम बहोरि ॥ ५० ॥
दीनो जु सुभगअशीश । हियहर्ष लषण कपीश ॥
रिपुबंधुको अनुराग । लखि कहत दुहुँ बड़भाग ॥ ५१ ॥
सादर सुलै तिन संग । बहुप्रीति उमँगत अंग ॥
आतुर चले कुलदीप । कौशल किशोर समीप ॥ ५२ ॥
पहुँचे तहां सुखकंद ॥ राजत जहां रघुचंद ॥
आनँद विभीषण धारि ॥ कीनो प्रणाम पुकारि ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

राजनके राजा महाराजा कौशिला किशोर, रावरो प्रताप है सदाहीं दिन पंद्रमा ॥ हौं तौ हों अभागीभो शरण आय बड़भागी नजरनकी

जेये कृपालु मम रंद्रमा ॥ रसिकविहारी अवलंब पद पंकजको लोक परलोककी न चाह जिय अंद्रमा ॥ कीजिये सनाथ हौं अनाथ रघुनाथ मोहिं पाहि पाहि पाहि रघुवंश वंश चंद्रमा ॥ ५४ ॥ अधम अभागी अनुरागी हौं कुसंगतको जाति हौं निशाचर कुबंधु दशशीशको ॥ नाम है बिभीषण विहाय सुत दारा गेह आयो हौं शरण अवलंब एक ईशको ॥ रसिकविहारी दीनबंधु अपनाय मोहिं कीजे खास दास अब लषण कपीशको ॥ नाथ गुण गैहौं निज लोचन सिरैहौं भेद दैहौं सब मरम बतैहौं भुजवीशको ॥ ५५ श्रवण सुनी है गिरा दीन यौं बिभीषणकी भरे जल नैन अंग पुलक जनायो है ॥ धीरज रहीना अति आतुर उठि कृपालु कृपा करि शीश करकंज परसायो है ॥ रसिकविहारी मृदु वचन सुनाय भले जरत विभीषणको हृदय सिरायो है ॥ ताप अघ कीने दूरि आनँद दियो है भूरि राम घनश्याम गहि अंकसे लगायो है ॥ ५६ ॥

दोहा–यों लगाय सादर हिये, बैठारे निज पास ॥
बूझो सब वृत्तांत सो, वरणो सहित हुलास ॥ ५७ ॥
सुनि ताही छिन सिंधु जल, अति उताल मँगवाय ॥
करि अभिषेक विभीषणै, थपो लंकको राय ॥ ५८ ॥
सोलखि भूमि अकाश चहुँ, छायो जैजैकार ॥
कहत सबै को राम सों, वीर दयालु उदार ॥ ५९ ॥

चौ०-ताछिन अति प्रमुदित कर जोरी ❋ बूझी कपिपति प्रभुहि निहारी
लंकप किये विभीषण नाथा ❋ आवै जुपै शरण दशमाथा ६०॥
तौ प्रभु काहि लंकमधि राखैं ❋ अरु लंकापति किहि को भाषैं ॥
सुनि बोले रघुवीर कृपाला ❋ सत्य उदार धर्म प्रणपाला ६१॥
निश्चरपति विभीषणै कीना ❋ सकल राज्य लंका करदीना ॥
अब जो शरण दशानन आवै ❋ दीजे अवध राज सो पावै ६२॥
तब हरीश बोले पुनि नाथा ❋ हैं नृप भरत कहा प्रभु हाथा ॥
सुनि रघुवीर कही सतबाता ❋ पै सुधर्म रत हैं मम भ्राता॥६३॥
भरत प्रतीत मोहिँ दृढ़ जोई ❋ भाषौं बंधु करै दृढ सोई ॥
सुनि प्रभु वचन सबहि सुख माना ❋ कह जैजैजै कृपानिधाना॥६४॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० विभीषण शरणागत
वर्णनो नाम द्वितायोविभागः ॥ २ ॥

२१

चारीछंद ।

इमि करि विभीषणको तुरत अभिषेक श्रीरघुवीर ॥
पुनि कही उतरिय सिंधु किमि सो करहु मंत्र सुधीर ॥
तब ठनो सत्य विचार कीजे विनय सागर पाहिं ॥
सोई विचार बतावहीं जिमि सहज सब उतराहिं ॥ १ ॥
दृढ ठानि यह सरिनाथ तट रघुवीर दर्भ डसाय ॥
शिरनाय विनय सुनाय प्रण ठहराय बैठे आय ॥
सो लषण हिय न सुहाय पै कछु कहत भय वश नाहिं ॥
जिय चहत प्रभु रुचिपाय सोखौं सिंधु छिन इक माहिं ॥ २ ॥

चौ०–इमि सर्वज्ञ राम बलवाना ❀ सिंधु तीर बैठे प्रण ठाना ॥
ताछिन यातुधानपति दूता ❀ शारदूल लखि चमू अकूता ॥३॥
जाय विकल रावणहि सुनायो ❀ प्रभुकपिकटक सिंधु तट छायो॥
दशयोजन प्रमाण चहुँ फेरा ❀ परो राम दल करि बहु घेरा॥४॥
साम दान भेदादि उपाई ❀ करियवेगि वर दूत पठाई ॥
न तरु समरहोइहि दृढ भारी ❀ प्रथम जतन याते सुखकारी॥५॥
सुनि रावण शुक दूत बुलायो ❀ सिखै सुकंठ पास पठवायो ॥
कीशपाल मम बंधु समाना ❀ सो किमि वृथा समर प्रण ठाना६
हम हरि लई राजसुत दारा ❀ पै कछु नाहिँ तुमार बिगारा ॥
यातें जिय विचारि कपिनाथा ❀ जाहु भवन लै निज दल साथा७
सो नभ मग कपिपति ढिग गयऊ ❀ अंतरिक्ष रहि बोलत भयऊ ॥
हे कपीश हौं तुव ढिग आयो ❀ लंकनाथ मो कहँ पठवायो ॥८॥
तब सुग्रीव कही कह बाता ❀ काह कहो दशमुख दुखदाता ॥
सुनि शुक सकल सँदेश सुनायो ❀ जो रावण तिहि सिखै पठायो॥९॥
सुनि तिहि वचन अपर कपि धाये ❀ उछल पकरि नभते महि लाये॥
ताड़न करन लगे रिस धारी ❀ हनि तल मुष्टि सुपंख उखारी १०
तब शुकदीनी राम दुहाई ❀ सुनि कृपालु तिहि दयो छुड़ाई॥
सभय वेगि पुनि नभ पथ जाई ❀ बूझी कहौ प्रभुहि कह जाई ११॥
तब सुकंठ तिहि उत्तर दीना ❀ कहो जाय खल बुद्धि मलीना ॥

राम विरोध कुशल तव नाहीं ❀ लंकनशाय फेर हम जाहीं॥१२॥
ताछिन वालितनय तिहि हेरी ❀ बोले वेगि गहो खल फेरी॥
यह सँदेश मिषते इत आयो ❀ भेद लेन दशकंठ पठायो॥१३॥
सुनतहि कीश कूदि गहि लाये ❀ पुनि तिहि ताडि पंखविनशाये॥
तब शुक आरत विकल पुकारो । सुनि मुख मूँदि बहुरितिहि मारो १४
पुनि जिमि तिमि चर वचन उचारा। प्रभुहि सुनाय सुकीन पुकारा॥
हैं निश्चर अघ औगुणखानी ❀ सदा अनीति रीति बहु ठानी १५॥
जनम मरन मधि पाप जुमेरे ❀ भये होंय ते सकल घनेरे॥
मोकृत राम आप द्रुत पावो ❀ जुपै वेगि नहिं मोहिं बचावो॥१६॥
सुनि प्रभु वेगि कपिनको वरजो ❀ दूत अवध्य होत जानि तरजो॥
पाय रजाय न ताड़न कीना ❀ पै तिहि लंक जान नहिं दीना॥१७॥

हरिगीतिका छंद।

इहि भांति श्रीरघुवीर सागर तीर दृढ़ प्रणधारिकै॥
त्रैदिन बिताये अशन पान विहीन धर्म विचारिकै॥
जड़ सिंधु कछु नाहिं दीन उत्तर राम तब क्रोधित भये॥
सोखौं समुद्रहि अबहिं यौंकहि वेगि कर धनु शर लये॥१८॥
सजिबाण चापहि तान करि संधान जब घालन चयो॥
भय पाय माणिगण लाय जलनिधि आय तब चरणन नयो॥
कीनी विनय सुनि राम बोले कहौ इषु कित डारहूँ॥
तव हेत धारो है अमोघ सुअब न याहि उतारहूँ॥१९॥
सुनि सिंधु भाषी नाथ मोजल अमितहै मरु देशमें
तहँके निवासी पातकी मुहिं छुवत लहत कलेशमें॥
याते अतुल यह बाणते वह नीर शोखन कीजिये॥
प्रभुको रहै यश मोर दूरित नशाय सो चित दीजिये॥२०॥
तब तीर सो रघुवीर ताजि मरु नीर सागर शोषिकै॥
तिहि देश हित करुणानिधान जु दयो वर परितोषिकै॥
पशु अल्परोग विशाल होवै शीर रस बहु छावही॥
फल कंद मूल अतूल औषधि गंध अति उपजावही॥२१॥

प्र० ॥ वा०॥ यु०॥ का०॥ स० २२ ॥ श्लोक० ॥

उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तस्य दस्यवः ॥ आभीर प्रमुखः पापाः पिबंति सलिलं मम ॥ १ ॥ तैर्न तत्स्पर्शनं पापं सहेयं पापकर्मभिः ॥ अमोघः क्रियतां राम अयं तत्र शरोत्तमः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

हरिगीतिका छंद

तब सिंधु प्रभुतापेषि बोलो नाथ करहुँ सहायहौं ॥
नल कीश विरचहिं सेतु ईश प्रताप उपल तरायहौं ॥
इमि भाषि सविनय जलधि गमनो राम अति आनँद लहो ॥
अब वेग वारिधि बाँधि चलहु बुलाय नल नीलहि कहो ॥ २२॥
सुनि ईश आयसु वेगहीं कपि भालु चहुँदिशि धायकै ॥
बहु उपल तरु गिरि जाय भारी देन लागे लायकै ॥
सो लेहिं नल कर वाम डारत नीर दक्षिणते सजैं ॥
सुत बुद्धि बल अरु चातुरी लखि विश्वकर्मा हिय लजैं ॥ २३ ॥
दिन प्रथम योजन चार दश पुनि द्वितिय वीस सुधारिकैं ॥
साजो त्रितिय इकवीस चौथे दोय विंश सँवारिकैं ॥
पंचम रचो त्रयविंश सौं दश वितत आयत सतवनो ॥
लखि सेतु अनुपम शोर भो तिहुँ लोक जैजैजै घनो ॥ २४ ॥

चौ०–सेतबंधु पूरणको शोरा ❋ जैजैकार मचो चहुँ ओरा ॥
सुनि कपि ऋच्छ जुतरु गिरिधारे ❋ जहाँ तहाँ अधबीचहि डारे २५
त्यौं इक गिरि हनुमंतहु डारा ❋ मधु दानवके देश मँझारा ॥
तिहि ताजि चलन लगे बलवाना ❋ तबसो शैल निपट दुखमाना २६
कपिहि कही भूधर कर जोरी ❋ सब गिरि तें करणी लघु मोरी
श्रीरघुवर पद रजनहिं परशौं ❋ ऐसे समै फेर कब दरशौं॥२७॥
यातें वीर कृपा उर लाई ❋ मोहिं देहु प्रभु निकट पठाई ॥
तब हनुमंत धीर तिहि दीनी ❋ वेगि आय गति विदित सुकीनी २८
सुनि रघुवर गिरि विनय सप्रेमा ❋ बोले होय तासु सब क्षेमा ॥
तितहीरहे धीर उर धारे ❋ कुधर मनोरथ पूजहिं सारे ॥ २९ ॥

दोहा—द्वापर युग यदुवंश मधि, हो अष्टम अवतार ॥
सब अभिलाषा पूजिहै, तब सो गिरि करधार ॥ ३० ॥
सुनि प्रभु आज्ञा पवनसुत, वेगि शैल ढिग जाय ॥
कही लहो सुख सौ बहुरि, कपि आये हुलसाय ॥ ३१ ॥
भयो शोर चहुँ ओर अति, सागर बाँधो राम ॥
सुनि अविलोकन सुर असुर, धाये तजि तजि धाम ॥ ३२ ॥

हरिगीतिका छंद।

सुनि उदधि बंधन कीशकृत दशशीश चित चकृत भयो ॥
तबहूँ न खल कछु भीति लायो, रंचहू नहिं शिरनयो ॥
लखि सेतु रघुकुल केतु आनँद पाय वर वाणी कही ॥
इक रचहु सदन विशाल इत हौं सविधिशिव थापौं सही ॥ ३३ ॥
सुनि राम आयसु कपिन वेगि विशाल शिव आलय करो ॥
पूजन प्रतिष्ठा हित यथोचित साज सजि सबही धरो ॥
पुनि ज्ञान गुणनिधि मुनिन राघव बोलि यौं सविनय कही ॥
को वेद वर ज्ञाता प्रतिष्ठा सविधि सो ठानै सही ॥ ३४ ॥

पद्धरी छंद।

सुनि कही ऋषिन हे जक्तईश ॥ हैं अखिल निगम ज्ञाता मुनीश ॥
पै तिहूँलोक रावण समान । वर बुद्धि वेदविद है न आन ॥ ३५ ॥
तब कही राम निर्भय उताल । दशबदन पास चर जाय हाल ॥
सो ह्वै निशंक इत मुदित आय । वरसविधि शंभु थापन कराय ३६ ॥
सुनि राम बैन कह कपि प्रधान । नहिं उचित तासु आगम सुजान ॥
माया निधान खल यातुधान । पुनि भूप वीर अरु रिपु महान ३७ ॥
जो करहि आय मिलि नीच घात । तौ फेरि नाहिं कछु बनहि बात ॥
पुनि एक और कीजे विचार । सो मूढ़ मत्त मानी अपार ॥ ३८ ॥
प्रभु दूत गये आवै न जोय । तौ वृथहि मान निज हानि होय ॥
याते प्रवीन ये ऋषय वृंद ॥ शिव थपहिं सविधि प्रभु युत अनंद ३९
सुनि बिहँसि कहे रघुवीर बैन । सब कही नीति पै शंक है न ॥
हो कोउ सत्य वेदज्ञ जौन । विश्वासघात सो कर कवौन ॥ ४० ॥

यौंकहि बुलाय वर कीश चार । भेजे सिखाय लंका मँझार ॥
सो जाय दशानन ढिग उताल । युत नीति रीति भाषो सुहाल४१ ॥
सुनि यातुधानपति अति निशंक ॥ भाषी अनंद वाणी उतंक ॥
तुम चलहु दूत मैं अबहिं आय। वरंस विधि देहुँ थापन कराय ४२॥
तब यातुधान बोले विचार । नहिं उचित गमन रिपु दल मझार ॥
जो अवशि चलिय तौ सैन साजि॥भट शस्त्र संग गजमत्त वाजि४३
सुनि कही लंकपति कछु न भीति । नीतिज्ञ राम न करैं अनीति ॥
यौं भाषि वेगि द्विज रूप धारि। गवनो अकेल निर्भय सुरारि ॥४४॥
आयो विलेकि प्रभु द्विज सुजान।युतनीति रीति तिहि कीन मान ॥
भाषी सुवेगि जै शंभु हेरि ॥ द्रुत हिय डसाय कुश कपिहि टेरि४५ ॥
करि विविध रीति संयुत प्रमान । दशकंठ कही पुनि समय जान ॥
हेराजपुत्र हो सुरुचि जौन ॥ सो कहिय करैं संकल्प तौन ॥ ४६ ॥
सुनि सत्यसिंधु भाषी सुछिप्र ॥ हम विजय हेतु शिव थपहिं विप्र ॥
दश मौलि सोई संकल्प ठानि ॥ थापे सुवेद विधि शूलपानि ॥ ४७॥
रामेश्वर नाम सअर्थ जान॥ दशकंठ धरो मुनि मत प्रमान ॥
पुनि राम हाथ पूजन कराय ॥ कीनों सुगौन गृह लंकराय ॥ ४८ ॥
दशवदन बुद्धि विद्या निहारि । भे चकित सर्व कपि भालु झारि ॥
तिहि समय हरषि भाषी मुनीन । इन सकल वेद पर तिलक कीन४९॥
पुनि राम लषण हनुमत कपीश ॥ लंकेश भालु कपि युत मुनीश ॥
पूजन समस्त विधि सहित कीन ॥ वर दरश पाय आनंद लीन ५०॥
तब कहा वीर रघुवीर धीर ॥ जो हरषि चढ़ाइहि गंगनीर ॥
अथवा रामेश्वर दरश आय ॥ करिहैं सुमुक्ति पैहैं सदाय ॥ ५१ ॥
सुनि सत्यसिंधुके सत्य बैन ॥ बोले समस्त जय कमलनैन ॥
पुनि राम मुनिन करि उचित मान । दीनीरजाय गे सकल थान ५२

इति श्रीरामर० र० वि० यु० सेतुबंधनवर्णनो नाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

दोहा—इहि विधि सागर सेतु रचि, राम नाथ पधराय ॥
चले लंककपि भालु दल, रघुवर दई रजाय ॥ १ ॥

सुनि प्रभु आयसु मुदित ह्वै, गवनो कटक अपार ॥
दिवस तीनमें सकल दल, भयो सिंधुके पार ॥ २ ॥
छाये चहुँ दिशि भालु कपि, गहि तरु कुधर सचेत ।
रहे व्यूह रचि राम मधि, बंधु सुकंठ समेत ॥ ३ ॥
कहि तब रघुपति कपिपतिहि, दीनो शुकहि छुटाय ॥
अति उताल सो रावणहि, वरणी सब गति जाय ॥ ४ ॥
पुनि शुकभाषी जोरिकर, समर किये भल नाहिं ॥
सियहि दीजिये बंधु दुहुँ, सकल धाम फिरि जाहिं ॥५॥
सुनि शुकवच दशमुख कुपित, कह तुहि कपि दुख दीन ॥
तिहि भय तव मति विकल अति, रिपु बल बहु गनि लीन ६॥
ताहि निदरि इमि दशवदन, पुनि शुक सारन और ॥
तिनहिं बोलि आज्ञा दई, जाहु वेगि तिहि ठौर ॥ ७ ॥
बल विचार आचरन बुधि, अपर प्रबंध अनंत॥
सकल भेद रिपुसैन दुरि, आवो निरखि तुरंत ॥ ८ ॥

चौ० सुनि शिरनाय चले शुकसारन ❀ दोऊ किये कीशवपु धारन ॥
आय राम दल मधि मिलि डोलैं ❀ लखैं सकल मिलि काहु न बोलैं९
तिनहिँ विभीषण लखि पहिचाने ❀ गहि रघुवीर पास दुहुँ आने ॥
सो सशंक नमि वचन सुनाये ❀ लंकनाथ प्रेरित हम आये १० ॥
किमि दल बल किहि विधिको कीशा ❀ लखहु रजाय दई दशशीशा ॥
सुनि रघुवर लंकेशहि भाषी ❀ लावो सब दिखाय सँग राखी ११॥
तब दुहुँ साथ विभीषण जाई ❀ लाये दल समस्त दरशाई ॥
पुनि तिनके कर लषण प्रवीना ❀ रावण हेत पत्र लिखि दीना १२॥
छोड़िदये चर सभय सिधारे ❀ आय वेगि रावणहिं जुहारे ।
कहि निज गति पत्री द्रुत दीनी ❀ वाम हाथ लंकापति लीनी १३॥
सो पत्री मंत्री कर दीनी ❀ वेगि सुनावो आयसु कीनी ॥
सचिव प्रवीन रजायसुपाई ❀ बाँचन लागो प्रभुहि सुनाई १४॥

घनाक्षरी कवित्त।

स्वस्ति श्रीचतुर दशबदन सुरारि, योग पहुँचे लषण लैख जैश्री कौशलेशकी ॥ इत है कुशल उत मंगल चहौ तौ आय

पाँय परि लाय देहु सुता मिथिलेशकी ॥ रसिकविहारी अपराध सब
है हैं क्षमा दीन देखि दीनी सीख पत्री या सुदेशकी ॥ न तरु कदंब-
साज सहित कुटुंब राजनाश तुव होत बात जात है हमेशकी॥ १५ ॥

दोहा—सो सुनि रावण हँसि तुरत, लेखक निपुण बुलाय ॥
पत्र लिखावत लषण हित, उत्तर सुमति दिढाय ॥ १६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

स्वस्ति तूरज श्रीयुक्त तापस लषण योग लिपिकृत लंकनाथ जै
श्रीत्रिपुरारीकी ॥ मंगल सदाहै इत कुशल उतै है यही सदन सिधारो
निज आशा त्यागि नारीकी ॥ ताडका सुबाहु शंभुचाप औ जयंत
तरु वाली है न जानियो समान सिंधु वारीकी ॥ रसिकविहारी साम
दानको न काम कछू हिम्मत जुहो तो लखौ शूरता सुरारीकी ॥१७॥

दोहा—लिखि उत्तर चरकर दयो, दयो सुलषणहि जाय ॥
पुनि आयो दशवदन ढिग, गमनो शीश नवाय ॥१८॥
पुनि शुकसारन जोरिकर, कही नाथ कपिभूरि ॥
महाबली छिन एकमें, लंक मिलावैं धूरि ॥ १९ ॥
याते प्रभु दीजे सियहि, राम सदल गृह जाहिँ ॥
यातुधान कुल रहनकी, और उपाय जु नाहिँ ॥ २० ॥
सुनि रिसाय दशमुख तिनै, कहे विविध कटुबैन ॥
पुनि दुहुँले प्रासाद माधि, गयो उच्च अति ऐन ॥ २१ ॥
तहँ ते लखि कपि भालु दल, शुकसारनहि बहोरि ॥
कही बतावो वेगि अब, सत्य शंक सब छोरि ॥ २२ ॥
तब उठाय सारन भुजा, करि अंगुलि निरदेश ॥
सकल बताये रावणहिँ, कहि बुधि बल दल वेस ॥ २३ ॥
ताही विधि कपि भालुको, कुल थल बल गुण रूप ॥
कहो यथारथ शुक सकल, सुनो निशाचर भूप ॥ २४ ॥
पुनि शुक भाषी नाथहौं, कहँ लग करौं बखान ॥
अमित राम दल मुख्य पै, कछु संख्या इमि जान ॥ २५ ॥

शत सहस्रके शतकको, कोटि कहै सबकोय ॥
कोटि सहसके शतकको, शंकुनाम है सोय ॥ २६ ॥
सहस शंकुके शतकको, महा शंकुहै जान ॥
महाशंकुके सहसको, शतक वृंद पहिचान ॥ २७ ॥
वृंद सहसके शतकको, महावृंद कहिजात ॥
महावृंदके सहसको, शतक पद्म ठहरात ॥ २८ ॥
पद्मसहसके शतकको, महापद्म कह ज्ञात ॥
महापद्मके सहसको, शतक खर्व है ख्यात ॥ २९ ॥
सहस खर्वके शतकको, कह समुद्र मतिधाम ॥
शतक समुद्र सहस्रजो, है महोघ तिहि नाम ॥ ३० ॥
इमि संख्या मय भालु कपि, रहैं यूथपन पाहिं ॥
ते यूथप दल मध्य वर, पद्मअष्टदशआहिं ॥ ३१ ॥
ते सब बली समर्थ इमि, एकहि जीतै लंक ॥
इनते अपर अपार सो, समर उतंक निशंक ॥ ३२ ॥

चौ०सुनत क्रोधकरि दशमुख भाषी। दुहुँ खल नेक शंक नहिँ राखी॥
मो सन्मुख किय शत्रुबडाई ❀ हो दृग ओट वदन मसिलाई ३३॥
सुनत दुहूं गवने शिरनाई ❀ भाषी बहुरि निशाचर राई ॥
वेगि महोदर भेजहुदूता ❀ रिपुदल बल करि आवहिं कूता ३४
अशन सैन किमि कबै कराहीं ❀ राम निकटको सुभट रहांहीं ॥
हैं दलमधि किहिके सुत नाती ❀ पुनिकह होत मंत्र दिनराती ३५ ॥
सुनत महोदर दूत बुलाये ❀ शारदूल आदिक द्रुत आये ॥
पठये तिन दशवदन बुझाई ❀ चले वेगि सो रूप दुराई ॥ ३६ ॥
दलमाधि आय भेद सब लीना ❀ ताछिन तिनहिं विभीषण चीना ॥
गहिताडे सो बहु बिलपाये ❀ सुनि रघुनायक वेगि छुड़ाये॥ ३७
ते चर द्रुत रावण ढिग आई ❀ गति समस्त निज सभय सुनाई॥
शारदूल पुनि कह कर जोरी ❀ नाथ राम सेना नहिं थोरी ॥३८॥
गरुडव्यूह रचि भट समुदाई ❀ रहे सुबेलकुधर ढिग छाई ॥
यौं कहिशारदूल मति माना ❀ पूरब कथित समस्त बखाना ३९॥

पुनिदशमुखहिदूत नमिभाषी ❀ सियदै लीजिय लंकहि राखी ॥
रावण सुनत क्रोध बहुकीना ❀ शारदूल लखि मारगलीना॥४०॥
तबदशमुख कछु करिदुचिताई ❀ कियो मंत्र मंत्रीन बुलाई ॥
ठनिविचार पुनिभवन सिधायो ❀ विज्जुजीभ निश्चर तहँ आयो४१

दोहा—ताहि कही दशमुख झटित, सीतहि भीति दिखाव ॥
मायामय रघुनाथको, शिर धनु शर रचिलाव ॥ ४२ ॥
वेगि यथारथ विरचि सो, लायो लखि दशशीश ॥
भयो मुदित भूषण विशद, ताहि दियो बकसीस ॥ ४३ ॥
बहुरि दशानन जायकै, मृषा सियहि भय दीन ॥
कही प्रहस्त सुराम को, रैनसैन वध कीन ॥ ४४ ॥
यौं दशमुख कहि वेगही, विद्युजीभ बुलवाय ॥
धनु शर शिर माया रचित, सिय ढिग दियो धराय ॥४५॥
सो लखि सीता विकल ह्वै, भूमि गिरी मुरझाय ॥
रुदन करन लागी महा, लै शिर करि करि हाय ॥ ४६ ॥
तब बोलो दशमाथ अब, वृथा करौ जानि सोच ॥
होहुनारि मम जानकी, मुदित रहौ दुख मोच ॥ ४७ ॥
यौं सीतहि दिखराय भय, भवन गयो भुजवीस ॥
भयो गुप्त ताही समै, सो धनु शर अरु शीश ॥ ४८ ॥
चकित भई सिय सुगति लखि, हिय नहिं धीर धरात ॥
सरमा कही बुझाय बहु, यह खल माया बात ॥ ४९ ॥
यों कहि सरमा गुप्त ह्वै, लंकहि जाय उताल ॥
लखि आई पुनि सीय प्रति, मुदित कही सब हाल ॥ ५० ॥
सुनि हिय हरषीं मैथिली, सखिहि मिलीं भरि अंक ॥
सदल कुशल दुहुँ राजसुत, जानि भई निश्शंक ॥ ५१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० रावणदूत
प्रेषणो नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोहा–सीतहि भय दिखराय जब, दशमुख आयो धाम ॥
सुनो शोर चहुँ ओर तब, कहत कीश जै राम ॥ १ ॥
गुणि रिपु दल बल प्रबलता, सबही वेगि बुलाय ॥
सभासदन जोरी सभा, कही कहौ ठहराय ॥ २ ॥

काव्यछंद ।

माल्यवान वर बैन तबै रावणहिं सुनाये
अशकुन तबते होत नाथ जबते सिय लाये ॥
खर बोलत बहु क्रूर मेघ शोणित वरसावै ।
वाहन दृग जल ढरत व्योम मंडल रज छावै ॥ ३ ॥
मांस अहारी जीव मृत्यु दुखकारि घनेरे ।
जुरि घर पुर वन बाग घोर बोलैं चहुँ फेरे ॥
श्याम रूप तिय हँसहिं स्वप्न मधि करहिं अहारा ।
पुनि दरशावैं भीति कहै कटु वचन अपारा ॥ ४ ॥
परसत नहिं बलिभाग कागतिहि श्वान भखावैं ।
मृग पक्षी नित रोय अशुभ रव घोर मचावैं ॥
भवनन माहिं कपोत लवा सारिखा जुधावैं ॥
पुनि ये बहु तृण लाय तहाँ निज सदन बनावैं ॥ ५ ॥
तेइ परस्पर ग्रथित होय महि गिरैं सुयुद्धत ।
दिन उलूक निशि काग विषम बोलैं रव उद्धत ॥
रुदन करैं मंजार श्वान दिन रैनि सदाहीं ॥
स्वप्नमाहिं नर नारि हँसैं अरु नृत्य कराहीं ॥ ६ ॥
मैथुन कर खर धेनु नकुल सँग मूषक ठानै ।
श्वान साथ मंजार श्वान शूकर रति आनै ॥
किन्नर निश्चर संग फेरि नर नरन विहारैं ॥
नर नारि न इमि जीव विषम संभोगहि कारैं ॥ ७ ॥
सदन सदन प्रति साँझ समै इक पुरुष कराला ॥
मुंडित श्याम कुरूप लखै सबही नित हाला ॥
इते अपर बहु अशुभ चिह्न लंकामधि भासैं ॥
याते सीतहि देहु नतरु निश्चर सब नासैं ॥ ८ ॥

सुनि रावण करि क्रोध निदरि तिहि कछु कटु भाषी ॥
तब मंत्री कहि जैति गयो निज गृह मन माषी ॥
सभहि बिदादै वेगि मुख्य सचिवन लै राजा ॥
दीनी रहसि रजाय जाय चहुँ सुभट समाजा ॥ ९ ॥

दोहा—करि विचार तब लंकपति, सचिवहि कही बुझाय ॥
यथा योग इमि द्वार मधि, चमू युद्ध हित जाय ॥ १० ॥
महापार्श्व बहु सैन लै, सहित महोदरबीर ॥
गहैं सुदक्षिण द्वार दृढ़, युद्ध करैं रणधीर ॥ ११ ॥
पाश्चिम द्वार अनीकलै, मेघनाद बलवान ॥
होय समर अवरुद्ध सो, साजि शस्त्र तनु त्रान ॥ १२ ॥
सेनापती प्रहस्तवर, पूरब द्वारहि जाय ॥
युत अभंग चतुरंग दल, करै युद्ध हरषाय ॥ १३ ॥
शुक सारन बलवंत वर, संयुत सुभट अपार ॥
ठानैं दृढ़ संग्राम द्रुत, जाय सु उत्तर द्वार ॥ १४ ॥
वही द्वार उत्तर गहैं, अपर सुभट समुदाय ॥
होंतितहीं रघुवीर सों, संयुग करिहों जाय ॥ १५ ॥
विरूपाक्ष बहु बीर युत, मध्यरहै मति श्रेय ॥
द्वार द्वार प्रति सुरति लै, सबहि सहाय सुदेय ॥ १६ ॥
इहि विधि लंकापति उतै, थपे वीर चहुँ द्वार ।
इतै विभीषण राम सों, बोले वचन विचार ॥ १७ ॥
नाथ आज मम सचिव बहु, लाये लंक हवाल ॥
चहूँ द्वार माधि सुभट दल, थपो विकट दशभाल ॥ १८ ॥
सुनि रघुवीर सुमंत्र करि, दई रजाय सुहाल ॥
यथा योग कपि ऋच्छ चहुँ, घेरौ लंक उताल ॥ १९ ॥
रहैं चमूपति नील नल, सदल सु पूरब द्वार ॥
दक्षिण द्वार अनीक युत, रुद्धैं वालिकुमार ॥ २० ॥
हनूमान कपि सैन लै, घेरैं पच्छिम द्वार ॥
ऋच्छराज बहु सुभट युत, रहैं मध्य रखवार ॥ २१ ॥

हम सबंधु सुग्रीव अरु, लंकापति बलधाम ॥
उत्तर द्वार अनीकलै, करि हैं दृढ़ संग्राम ॥ २२ ॥
इहि विधि दोऊ दल रुपे, यथा कथित चहुँ ओर ॥
जै रावण जैराम रव, छाय रहो बहु शोर ॥ २३ ॥
सुनि दशमुख निकशंक अति, उच्च धाम चढ़ि जाय ॥
लखो राम दल अमित पै, कछू न तिहिके भाय ॥ २४ ॥
तहँ बैठो दरबार करि, नृत्यगान बहु होय ॥
रावण युत मंदोदरी, मुदित पानवश जोय ॥ २५ ॥
इत सुवेल गिरि राम चढि, लखो लंक अभिराम ॥
चहूं दिवाकरसे दिपत, कंचन मय बहु धाम ॥ २६ ॥
पुनि बिलोकि दक्षिण दिशा, घन दामिनि अभिराम ॥
चकित विभीषण प्रति कहे, मधुर वचन श्रीराम ॥ २७ ॥
इत हेरो लंकेश किमि, दामिनि दमकत आज ॥
उठे अनूपम जलद अरु, गरजत मधुर गराज ॥ २८ ॥
सुनत विभीषण जोरि कर, बोले वचन विशाल ॥
मेघ न चपला नाथ वह, तिय युत है दशभाल ॥ २९ ॥
छत्र मेघ सम लखि परै, दामिनि तिय ताटंक ॥
गरज मृदंग अवाज सो, रावण सभा उतंक ॥ ३० ॥
सुनि रघुवीर सँधानि शर, छाँडो सहज सुभाय ॥
भूषण छत्र किरीट सो, इषुडारे महि जाय ॥ ३१ ॥
भूषणादिके भंगको, भेद न जानो कोइ ॥
सकल सभा रावण सतिय, चकित रहे चहुँ जोइ ॥ ३२ ॥
सोचत सब अशकुन भयो, ताहि निदरि दशमाथ ॥
गयो सैन मंदिर विहँसि, लै मंदोदरिसाथ ३३ ॥
रहसिपाय मंदोदरी, समुझायो बहु भाँति ॥
कही सपदि सिय देहु पिय, नातर लंक नशाति ॥ ३४ ॥
सुनि दशमुख वर नारिको, निजबल तेजसुनाय ॥
कही प्रिया जनि भीति करु, नर वानर कह आय ॥ ३५ ॥
इमि बुझाय बहु मुदित मन, रहो सकल निशि धाम ॥
अशन पान सुख सैन करि, लहो सतियविश्राम ३६ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० दलथापनवर्णनो नाम पंचमोविभागः ॥ ५ ॥

दोहा–पुनि प्रभात नितकृत्य करि, दशमुख बैठोजाय ॥
विशद उच्च प्रासाद वर, जुरे सभासद आय ॥ १ ॥
इत सुवेलगिरिते लखो, कपिपति निश्चरराय ॥
ह्वै सकोप तहँते उछलि, परे सभाबिच आय ॥ २ ॥
गिरि समान सुग्रीव वपु, औचक लखि सब कोय ॥
यातुधान रावण झझकि, उठे चकित चितहोय ॥ ३ ॥
पुनि विलोकि कपि जानिकै, बैठे सबै सशंक ॥
ह्वै सकोप दशवदन तब, बोले निपट निशंक ॥ ४ ॥

तोमर छंद ।

रेकीश तू कहु कौन । कीनो इहाँ किमि गौन ॥
ठाढो कहा चुप होय । कहु विनय वेगि जुहोय ॥ ५ ॥
सुनिकै सकोप सुकंठ । भाषी सपदि सुनशंठ ॥
तूअजहुँ मोहिं न जान । कस जानि होत अजान ॥ ६ ॥
लीनो सखा प्रभुमान । हौंदास निज दिशि जान ॥
सुग्रीव नाम कपीश । तुवकालमैं भुजवीस ॥ ७ ॥
श्रीराम त्रिभुवन ईश । तिन सामुहे दशशीश ॥
बैठो सिंहासन आनि । राखी न तू कछुकानि ॥ ८ ॥
यौं कहि सुकंठ उताल । करि कीशकोलिसुहाल ॥
दशवदन मुकुट उतारि । दीने महीतलडारि ॥ ९ ॥
पुनि उछलि वेगि कपीश । गहि दशहु दशमुख शीश ॥
करकेश धरि झकझोरि । द्रुतकूदि खडे बहोरि ॥ १० ॥
दश वदन लखि रिसलाय । कपिपतिहि पकरिभ्रमाय ॥
पटको महीतलमाहिं । तिनभयो कछु श्रम नाहिं ॥ ११ ॥
भूपरतही बलवान । कपि उछलि कंदुक मान ॥
भरि वेगि दशमुख अंग । महिडारि दीन निशंक ॥ १२ ॥
पुनि उठि भिरो दशशीश । भरि क्रोध निश्चर कीश ॥
भे मल्लयुद्ध निरुद्ध । दोऊ सरिसबल उद्ध ॥ १३ ॥
दुहुँ करत दाँव अनेक । जीतन चहत इक एक ॥
कोऊ न मानत हार । बहु लरत भिरत प्रचार ॥ १४ ॥

दुहुँ भिरहिं भुज भुज मेलि। दुहुँलेत दुहुँन सकेलि॥
दुहुँ झपटि रपटत धाय। दुहुँ छपटि पुनि छुटकाय॥ १५॥
दुहुँ देत झपक सुझांकि। खाली करत दुहुँताकि॥
दुहुँ बगलह्वै कढ़िजात। दुहुँ भिरत पुनि बिलगात॥ १६॥
दुहुँ कढत दक्षिण बाउँ। पुनि करत निज निज दाउँ॥
तल चरण मुष्टि प्रहार। दुहुँ करत दुहुँन प्रचार॥ १७॥
दुहुँ जानु बीच दबाय। मर्दत भुजान रिसाय॥
महि लगत काहु न पीठ। दुहुँ मल्ल शिक्षित ढीठ॥ १८॥
दुहुँ गिरत उठत बहोरि। गहि भिरत अंगन मोरि॥
दुहुँ चलत वक्र सुचाल। पुनि देत झपट उताल॥ १९॥
दुहुँ भरत मंडल मंडि। इक एक पदगति बांडि॥
धरि चक्र सरिस भ्रमात। रंचहु न कोउ श्रमात॥ २०॥
गहि एक एकहि रेलि। शिर शिरहि भेरत पेलि॥
कटि गहत धरत सुकंद। भुजकंठ करत निबंध॥ २१॥
दुहुँचरण दुहुँ उरझाय। चाहत सुदेहुँ गिराय॥
पुनि बचत काटत दाव। लखिघात देत भुलाव॥ २२॥
इक एक डारत भूमि। चढि पीठ मर्दहिंहूमि॥
पुनि उछलि बलकरि झूमि। दै चक्र ठेलत घूमि॥ २३॥
नभ ओर उछलत कीश। गहि पद पटक दशशीश॥
लंगूर माहि लपेटि। कपि तिहि पछार समेटि॥ २४॥
जे मल्ल युद्ध बखान। वत्तीस दाँव प्रमान॥
गत प्रत्यगत वह सर्व। दुहुँ वीर करत सगर्व॥ २५॥
दुहुँ अंग स्वेद प्रवाह। तनु धूसरित रज माह॥
दुहुँ गात रुधिर बहात। नहिं श्वास उदर समात॥ २६॥
पै थकत जकत न कोय। सब चाकित दुहुँ बल जोय॥
कपिराज निश्चरराज। दुहुँ तेज गुण सम साज॥ २७॥
दुहुँ भिरे जात अकाश। महि परत पुनि दुहुँ आस॥
दुहुँ गिरत परिखहि माहि। तितहूँ सकोप लराहि॥ २८॥
पुनि दोउ उछलत आय। गोपुर सुयुद्ध कराय॥

इमि दंड द्वै दुहुँ वीर । किय मल्ल युद्ध सुधीर ॥ २९ ॥
कीने अनेकन दाव । जे चारि करन कहाव ॥
पै कोउ नाहिँ हरात । छिन छिन दुहूँ अधिकात ॥ ३० ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० ॥ कां० ॥ स० ४० ॥ श्लो० ।

मंडलानि विचित्राणि स्थानानि विविधानि च ॥ गोमूत्रिकाणि चित्राणि गतप्रत्यागतानि च ॥ १ ॥ तिरश्चीनगतान्येव तथा वक्रगतानि च ॥ परिमोक्षं प्रहाराणां वर्जनं परिधावनम् ॥२॥ अभिद्रवण माप्लावमवस्थानं सविग्रहम्॥परावृत्तमपावृत्तमपद्रुतमवप्लुतम् ॥ ३ ॥ उपन्यस्तमपन्यस्तं युद्धमार्गविशारदौ ॥ तौ प्रचेरतुरन्योन्यं वानरेन्द्रश्च रावणः ॥ ४ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ भरतोक्तानि ॥

एकपादप्रचारेण चारिसंज्ञं तु मंडलम् ॥ द्विपादक्रमणं यत्र करणाख्यं तु मंडलम्॥५॥ करणानां समायोगात्खंडमंडलमीरितम् ॥ खंडै स्त्रिभिश्चतुर्भिर्वा महामंडलमीरितम् ॥ ६ ॥ वैष्णवं समपादं च वैशाखं मंडलं तथा ॥ प्रत्यालीढमनालीढं स्थानान्येतानि षण् नृणाम् ॥ ७ ॥ इत्यादि ॥

तोमर छंद ।

दश वदन तब हिय ठान । माया करन अनुमान ॥
जानी सुगनि सुग्रीव । गो उछलिं नभ बलसीव ॥ ३१ ॥
रघुवीर ढिग द्रुत आय । भेंटे अनंद अघाय ॥
वरणो समस्त सुहाल ॥ सुनि चकितभे कपि भाल ॥ ३२ ॥
दोहा—हिये लगाय सुकंठसो, कही नेहयुत राम ॥
यौं अकेल कोऊ सखा, जात शत्रुके धाम ॥ ३३ ॥
सुनि सुकंठ बोले कृपा, तुव जिहि पै दृढ होय ॥
ताको तीनहुँ लोकमें, करि न सकै कछु कोय ॥ ३४ ॥
सुनि सबही जैजै कही, छायो परमानंद ॥
उत दशमुख सुग्रीव बल, वर्णत मुदित सुछंद ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० रावण सुग्रीव
मल्लयुद्धवर्णनो नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०-लखि कपीश बल भूरि, सकल सराहत अमित विधि ॥
सब हिय आनँद पूरि, रामविजय सूचित भई ॥ १ ॥
चौ०-ताछिन कही लषणप्रति रामा ❀ होइहि बंधु बिकट संग्रामा ॥
विग्रह लक्षण बहु दरशावैं ❀ इनके फल अति शीघ्र जनावैं॥२॥
घोर पवन चलि रज चहुँ छावैं ❀ सहजहिं नग तरु महि थहरावैं ॥
गिरि घहरात लखिय दिन तारा ❀ बिन घन गर्जन होत अपारा ॥३॥
धूसर मेघ घोष कर भारी ❀ चंद्र चंद्रिका बहु तपकारी ॥
सांझ प्रभात अधिक अरुणाई ❀ नभ संध्या दारुण दरशाई ॥ ४ ॥
रविते अनल झरै दुहुँ वेरा ❀ श्याम रक्त शशि मंडल घेरा ॥
उदै होत नित केतु अनेका ❀ क्रूर विशाल एक ते एका ॥ ५ ॥
चहूँ याम दिन दुर्दिन होई ❀ निशि मलीन शशि उड़गण सोई ॥
रवि परिवेष लखिय लघुलाला ❀ पुनि तिहि मंडल श्याम कराला॥६॥
तप्त नीर वरषा कछु होई ❀ शोणितबुंद सहित पुनि सोई ॥
भरे अयोग प्रसव बहु ठामा ❀ अपर अकर्म अमित वसु यामा॥७॥
वज्रपात वर्षा बिन होई ❀ काक गृद्ध युद्धत महि दोई ॥
इते अपर बहु अशुभ जनावैं ❀ रुंड मुंड धरणी चहुँ छावैं ॥ ८ ॥
दोहा-यौंकहि उतरि सुवेल ते, दल युत रघुकुलदीप ॥
गिरि गहि उत्तर द्वारको, छाये लंक समीप ॥ ९ ॥
यूथप छत्तिस कोटि युत, पूरव कथित प्रमाण ॥
घेरी लंक सुभालु कपि, अपर अमित बलवान ॥ १० ॥
काहू तनु दशनाग बल, काहू शत गज मान ॥
काहू सहस मतंग सम, काहू लक्ष प्रमाण ॥ ११ ॥
हनुमत कपिपति वालिसुत, नीलादिक रिछराय ॥
अपर मुख्य बहु भालु कपि, तिनबल अतुल सदाय ॥१२॥
यथा बली कपि भालु तिमि, यातुधान बलवान ॥
अगणित भट दुहुँ कटक मधि, कोकरिसकै बखान ॥ १३॥
दुहूँ ओर भट दल रुपे, घोर शोर चहुँ होय ॥
निज निज प्रभु आज्ञा चहत, धीर वीर सब कोय ॥ १४ ॥

तब रघुवर दृढ मंत्र करि, अंगदको समुझाय ॥
पठयो रावण पास द्रुत, राजनीति ठहराय ॥ १५ ॥
अंगद प्रभुपद नाय शिर, आये लंक मझार ॥
प्रविशतही भेटो तिनै, इक दशवदन कुमार ॥ १६ ॥
दुहुँ बूझी दुहुँ बंक दुहुँ, बोले दुहूँ उतंक ॥
तिहि अंगद पद गहि पटकि, वध कीनो निश्शंक ॥ १७ ॥
वालितनय रावण निकट, पहुँचे जाय उताल ॥
निर्भय निपट विलोकि हँसि, बूझत भो दशभाल ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोहै कपि दूत काको रामको सुराम कौन सोई तब भगिनीकी नासिका जु काटीहै ॥ आयो कहाँ तेरेपास कहि शिषदेन काह होस कर क्यों तू दुरबुद्धि उदघाटीहै ॥ कीनोका सियाको हरी होका नाश कोकरैं जुचौदहसहस्र चमू छिंद छिंद छाटीहै॥रसिकविहारी यों निशंक बैन अंगदके सुनि यातुधान मति सकल उचाटी है ॥१९॥ सभासद बोले सुनि बोलैना विचारि कपि आयो किहि काज ह्यां फिरैया मंदरनको॥तू है पशुकीश कहा जानै नृप नीति रीति तापै वनवासी औ निवासी कंदरनको ॥ रसिकविहारी यश जाहर त्रिलोक, जाको जाकी भीति भागैं देव भौन अंदरनको ॥ निश्चराधिराज महाराजको समाज देख यह दरबार है न ऋच्छ बंदरनको ॥२०॥ सुनिकै उतंक बैन अंगद निशंक बोले सब मति बंक रंक मोहिं दरशावै है॥लोलुप लबार चोर निपट कठोर घोर कायर कलंकी सदा कुयशी कहावै है॥ बीस बीस पाये श्रौन नैन पै वधिर अंध ऐसो महापातकी जो प्रगट लखावै है ॥ रसिकविहारी ताहि भाषौ महाराज वृथा सकल निलज्ज काहू लाज नहिं आवै है॥२१॥ धिग वह वीरता बड़ाई चतुराई धिग धिग प्रभुताई जहँ लेश है न लाजको॥रसिकविहारी जो न भाषै सत्य ताको धिग होत है अनीति तहां धिग सब काजको॥धिग बल रूप कुल विभव सुविद्या धिग सुयश दराज धिग राज धिग साजको ॥ परतिय चोरी सदा करहि ठगोरी जोरी धिगहै समाज धिग ऐसे महाराजको ॥ २२ ॥

दोहा—सुनि अंगदके वचन तब, दशमुख बहु रिस आन ॥
कही प्लवंगम मूढ़ तू, मो प्रताप नहिं जान ॥ २३ ॥
मो सन्मुख रवि तेजहू, होत सदा अतिमंद ॥
चंद्रहास असि भीति वश, स्रवत सुधा नित चंद ॥ २४ ॥
लोकपाल दिगपाल अरु, देवपाल नरपाल ॥
नाम सुनत दशभालको, सबही होत विहाल ॥ २५ ॥
यातुधान पतिके वचन, भरे भूरि अभिमान ॥
सुनि बोले तिहि निदरिकै, वालितनय बलवान ॥ २६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

जौलौं दशशीश भुजवीश ना नशाँय तौलौं चार दिन औरहू अनंद उर धरिले ॥ येरे मतिमंद निज वीरता बढ़ाय झूठी सकल वृथाहीं अभिमान हीय धरिले ॥ रसिकविहारी तोहिं जानत जहान जैसो होवै जो लबारी तिनैं फेरिहू उचरिले ॥ और तौ न कोऊ तोकों नेकहू सराहै याते आपनी बड़ाई तू घनेरी आप करिले ॥२७॥ बोले पुनि अंगद अरे मलीन मंदमति भयो मतवारो तोहि रंचहू न चेतहै॥ कायर कलंकी निशिचारी अनाचरी चोर देव दुखकारी दुष्ट पातक निकेत है ॥ सीख या हमारी तू सुरारी शुभंकारी मान रसिकविहारी होय भारी तुव हेतहै ॥ त्यागि अभिमान सिय लैकै अगवान गहु रामपदत्रान क्यों वृथाही प्राण देत है ॥ २८ ॥

सो०—सुनि अंगदके बैन, कही दशानन क्रोध युत ॥
रे खल मौन रहै न, मोहिं सिखावत मंदमति ॥ २९ ॥
राज काज बहु युद्ध, किये करौं पुनि करहुँगो ॥
बुधि विद्या बल उद्ध, मोसमान को और कहु ॥ ३० ॥
तब युवराज प्रवीन, हँसि भाषी निश्शंक तिहि ॥
रे निश्चर मतिहीन, तोते हो शुभकाज कह ॥ ३१ ॥

सवैया कवित्त।

टीका कियो सब वेद पै तू हौं सुनी जु सबै वहबात अलीका ॥
लीका नहीं बुधिमंतनमें तुव द्रोही भयो तिहुँ लोकपतीका ॥

तीकारहै मद पी नित लोलुप है यह धर्म न वीर गुनीका ॥
नीका करै कह काम निलज्ज तू भ्रात कहावत है नकटीका ॥ ३२ ॥

तोंटक छंद ।

सुनिकै दशकंठ रिसाय कही । शठ हौं बहुती कटु बात सही ॥
खल तो शिर पै ध्रुव बीच नचै । भगुकीश न तौ अब प्राण बचै३३॥
इत बैठ घनी बकवादकरी । रजनीचर कोउ न हीय धरी ॥
यह तो रसना जुङतंक चलै । गहिभंजहि आय निशंकमलै ॥ ३४ ॥
सुनिकै तब अंगद रोषदहे । भ्रुकुटी करि बंक निशंककहे ॥
चुपहो बहु बात बकै खलयों । तन हो प्रगटै सुनहीं बल क्यों ॥३५॥
जुभिरै मुहिते प्रण सत्य धरौं । द्रुतही दशकंठ विकंठ करौं ॥
तव पुत्र कलत्र जुभ्रातसबै । सहसैन लखात सँहात अबै ॥ ३६ ॥
इमि वालितनय कहि रावनसों । वरणी पुनि बात सिखावनसों ॥
सुन निश्चरनाथ कहौं हितसों । ध्रुवमान हिये गुनिकै चितसों ॥३७॥

घनाक्षरी कवित ।

बुद्धि ते विचार निरधार दोऊ सारासार स्वबल निहार कै सम्हार फेर रार करु ॥ येरे दशशीश बेगि जोरकर वीश लै सियाको संग शीशनाय ईशहीके पाय परु ॥ रसिकविहारी प्रभुदूत हौं , सिखाऊँ तोहिं एकौ तू न जानै राम बाणको प्रभाव गरु ॥ चौदह सहस्र भाल भेदे ताल छेदहाल सोई तीर सिंधु शोखि नीर बिन कीनो मरु ॥३८ द्रोही क्यों भयो है मतिमंद रामचंद जूको येरे भुजवीश शीश नाहक लयो है अघु ॥ अजहूँ भली है सियसौंप हठ छोड़ वेग राम रोष ज्वालमें न सहित कुटंब दघु॥ इन्द्र विधि वरुण कुबेर यम सूर चंद जाके डर डरत त्रिलोक तू कहाहै लघु ॥ रसिकविहारी वंश प्रभुता प्रसिद्ध जाने ह्वै गये प्रतापी कैसे चक्रवै नरेश रघु ॥ ३९ ॥ नूर ना रहैरे यो गरूर ना रहैरे लंक धूर ना रहैरे खल जोपै तुव ऐसी चालु॥ धीर ना रहैरे एको वीर ना रहैरे तीर ह्वै है पलमाहिँ तोहि देखत सुयेही हालु ॥ येरे दशकन्ध वीस लोचन तऊ भो अंध हठते वृथाही जनि सकल कुटुंब घालु ॥ रसिकविहारी हितकारी धनुधारी आज आये संग सबल अभंग दल कीश भालु ॥ ४० ॥

तोटकछंद।

सुनिकै दशकंधर क्रोध कियो। कपि बैन सिखी करि दग्ध हियो॥
द्रुत अंगद सों झहराय कही। शठ तू निज प्राण चहै कि नहीं॥४१॥
कहु कीश कहा तुव नामकहै। किहिको सुत तू किहि ठौर रहै॥
बतरात निशंक उतंक यहाँ॥ खल रंक भयो मतिबंक महाँ॥ ४२॥
तब बालितनयहँसि बैन कहे॥ तुव बीसहु लोचन जातरहे॥
तुहि रंचकहू नहिं सूझहिरे॥ तिहि ते सुन मोहिँ जु बूझहिरे॥४३॥

घनाक्षरी कवित्त।

अंगद है नाम मेरो धाम किषंकिंधामाहीँ नीकी भांति जानै यातुधान तू कपीशको॥ वाली बलसीम भीम तांहीको सुवन जान आयो हौं मथन तेरे बल भुजवीसको॥ तोहिं बिनशैया तुव सैनको नशैया इहि लंक उजरैया उखैरया दशशीशको॥ देव दुखहारी दुष्ट दलके सँहारी वीर रसिकंविहारी हौं सुदास जगदीशको॥ ४४॥

सो०—सुनि भांषी दशशीश, रे कपि तुहि जानो अबै॥
तू अजान शिशु कीश, मुहि जानत हो तव पिता॥ ४५॥

घनाक्षरी—कवित्त।

देव औ अदेव शीश मेरीही रजाय एक देखि भुजवीश यमराजहू जकत है। वापुरो सुकंठ कपि रीछलै लरन आयो देखौ कालि बन्दर सो कंदर तकत है॥ येरे कीश कोहै और मोविन त्रिलोक ईश जाको तेज निरखि सुरेशहू सकत है॥ रसिकविहारी कहा मानुष विचारे दीन मौनहो लबार बार बार क्यों बकत है॥ ४६॥

सो०—इमि कहि पुनि दशशीश, कह कपीश सुत तोहिँ धिग॥
अब न बोल कछुकीश, गति जानौं तुव ईशयुत॥ ४७॥

घनाक्षरी कवित्त।

येरे कपि मूढ क्यों बखानत बडाई बहु ज़ाहिर जहान माँहिं जे तो हाल सारो है॥ रसिकविहारी तू वही है जो पिताको नेक बदलो न लीनो औ सुकंठ साथ धारो है॥ है सुकंठ सो जो बालि डरते भगो है बालि सोई जाहि राम एक बाणहीं ते मारो है॥ सोई राम जाको देखि निपट निकाम बंधु वामके समेत बाप धामते निकारो है ४८॥

दोहा–स्वामिनिंद सुनि क्रोध करि, वालितनय बलरास ॥
चार मुकुट दशवदनके, गहि फेंके प्रभु पास ॥ ४९ ॥
तब निश्चर लखि अंगदहि, ताडन धाये कोपि ॥
कपि निशंक रघुवर सुमिरि, ठाढ भये पदरोपि ॥ ५० ॥
वीर निशाचर भूरि बहु, बलकरि बैठे हारि ॥
रामदूतको चरणते, कोऊ सकै न टारि ॥ ५१ ॥
तब सकोप कपि कूदि गहि, शिखर धाम प्रासाद ॥
वेगि विभंजिबहाय चहुँ, कियो सिंहसम नाद ॥ ५२ ॥
पुनि अंगद जैराम कहि, तहँते उछलि अकाश ॥
रिपुबल मंथन करि तुरत, आये प्रभुके पास ॥ ५३ ॥
शीशनाय कहि सकल गति, पुनि बोले युवराज ॥
दशमुख हठ त्यागै न प्रभु, तिहि शिरकाल विराज ॥ ५४ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० अंगदरावण
वर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

चौपैयाछंद ।

अंगदकी वानी सुनि धनुपानी बोलि कपीशहि भाषी ।
जो किय दशशीशा सो वह रीसा हौं बहु दिन हिय राखी ॥
अब देहु रजाई बहु भट धाई करैं समर निश्शंका ॥
कपि भालु उतंका हितिखलरंका वेगि नशावैं लंका ॥ १ ॥
तबहीं सुग्रीवा बहु बलसीवाँ आयसु करी उताला ॥
सुनतहि भटभारी तरु गिरिधारी धाये कुपित कराला ॥
जैजै जगदीशा जैति कपीशा कहि कपि भालु अपारा ॥
चहुँ दिशिते जाई करि वरियाई कीनो पंथ सुढारा ॥ २
तरु गिरिते भूरी परिखा पूरी पुर प्राकार ढहायो ॥
सो सुनि दशभाला करि दृग लाला मारो कपि न कहायो ॥
तब निश्चर यूथा विविध वरूथा चहुँ हथ्यार लै धाये ॥
दुहुँ दिशि वर योधा भिरे सक्रोधा रण उमंग उर छाये ॥ ३ ॥
उतपट्टिसबाना परिघ कृपाना शक्ति शूल कोदंडा ॥

नख दशन विशाला इत विकराला गहि गिरि तरु गिरिखंडा ॥
निश्चर कपि ऋच्छन करि करि शिच्छन हनत भूमि हति पारैं ॥
तेखल दल झुंडन रुंड सु मुंडन मर्दि गर्द करि डारैं ॥ ४ ॥
काटैं कपि दाँतन हानि तल लातन मुंड मुष्टिकन फोरैं ॥
बहु उपल चलावैं प्राण नशावैं पकरि गात झकझोरैं ॥
रजनीचर लक्षन करैं सु भक्षन शस्त्रन मारि गिरावैं ॥
इहि भाँति परस्पर दुहुँ दल बल भर लरत न मनहिं फिरावैं॥५॥

चारी छन्द ।

इमि यातुधान सुभालु कपिको होत समर मझार ॥
ताही समै पुनि औरहू धाई निशाचर धार ॥
तिन भिरतहींभो आय औचक द्वंद्व युद्ध अपार ॥
दुहूँ ओर सम बल वीर एकहि एक लरत प्रचार ॥ ६ ॥
घननाद अंगद जंबुमाली पवनसुत बलसींव ॥
पुनि वज्रमुष्टि मयंद युद्धत प्रघस अरु सुग्रीव ॥
भट विज्जुमाली सँग सुखेन प्रजंघते संपाति ॥
प्रतपनहि नलसनि प्रभहि द्विविद निकुंभ नील भिरात ॥ ७ ॥
वरवीर लछमन संग युद्धत विरूपाक्ष प्रचंड ॥
रघुनाथ साथहि अग्निकेतु सु रश्मिकेतु उदंड ॥
अरु यज्ञकोप कराल पुनि मित्रघ्न ये भट चारि ॥
इक एक ह्वै बहु समर कीनो हते तिनहि खरारि ॥ ८ ॥
अरु तपन गजसों भिरि विभीषण शत्रुहन बलवान ॥
इमि अपर निश्चर भालु कपि मिलि द्वंद्व युद्धहि ठान ॥
घननाद कर गहि गदा अंगद अंगकीन प्रहार ॥
सो छीन लै कपि सारथी रथ वाजि दीन विदार ॥ ९ ॥
हनुमंत उरमधि जंबुमाली हनी शक्ति प्रचंड ॥
तब कोपि कपि तिहि तल प्रहारो कीन शिर शतखंड ॥
भट वज्रमुष्टिहि मुष्टिकाते हनो वेगि मयंद ॥
महि सारथी रथ वाजि संयुत गिरो खल मतिमंद ॥ १० ॥

बाणन विदारो गात कपिपति को प्रघस करि खीस ॥
पत्री उखारि विशाल सो तिहि हनो वेगि हरीश ॥
तजिबान विद्युनमालि वीर सुखेन विहवल कीन ॥
गिरि शृंगलै कपि तिहि प्रहारो भो विकल रथहीन ॥ ११ ॥
संपाति अंग प्रजंघ हनि शर तीन कीन विहाल ॥
तरुलै प्लवंगम यातुधानहि दलो अतिहि कराल ॥
प्रतपन कियो बल धाय नलपहँ त्यौं सुकपि बल ऐन ।
हनि मुष्टि लातन वेगि नखन विदारि डारे नैन ॥ १२ ॥
पत्रीनते तनुछिदि द्रिविदहि विकल सनिप्रभकीन ।
तिहि कीश तरु हनि सारथी रथ वाजि युत हति दीन ॥
नीलहि विदारो शरनते जु निकुंभ तब कपिधाय ।
रथचक्र तिहिलै सारथी तिहि शीश दीन नशाय ॥ १३ ॥
करि कोप निश्चर जबहि धायो लषण पै धनुतान ।
तबहीं विरूपाक्षहि हतो तिन वेगि एकहिबान ॥
तल गजहि ताडो तपन कपि तिहि नखन डारो फारि ॥
लंकेश लेकर खंड्ग रिपुहन अंग दीन विदारि ॥ १४ ॥
इमि द्वंद्वयुद्ध अपार एकहि एक करत प्रहार ।
कपि भालु निश्चर हनतते तिन दलत विविध प्रकार ॥
बहु समर होतहि दिवस बीतो जबहिं अथयोभान ।
तब पाय निशि खल धाय भालु कपीन लागे खान ॥ १५ ॥
तमछाय कछु न जनाय निज पर नेक परहि न दीस ।
कपि बूझहीं तू रैनिचर बूझें सु तूहै कीस ॥
कपि कपिन निश्चर निश्चरन अरु ऋच्छ ऋच्छन मार ।
हत यातुधानन भालु कपिते तिनहि करहिं प्रहार ॥ १६ ॥
इत भालु कपि उत रैनिचरके रुंड मुंड अपार ।
छाये महीतल वाजि गज रथ शस्त्र समर मझार ॥
कटकटहिं मर्कट ऋच्छ गर्जहिं यातुधान कराल ।
दुहुँ ओर छायो शोर जै रघुलाल जै दशभाल ॥ १७ ॥

बहु शंख झांझ मृदंग दुंदुभि तूर ढोल जुझाव ।
बाजत चहूँ वर बाजने सुनि बढ़त वीरन चाव ॥
भटलरत आछे पगन पाछे धरत भरत उमंग ।
महि गिरत पुनि उठि भिरत दुहुँ दल समर होत अभंग ॥१८॥
चहुँ ओर शोणित धार धरणी धीर नाहिं धरात ।
वरवीर निश्चर भालु कपि तजि प्राण आश लरात ॥
भट इंद्रजीत उदंड लै सँग यातुधान अपार ।
शर शक्ति शूल कृपाणते कर भालु कपि संहार ॥ १९ ॥
शुक और सारन वज्रदंष्ट्र जु यज्ञशत्रु सुधीर ।
उद्धत महोदर महापार्श्व प्रचंड ये षटवीर ॥
रघुवीर सन्मुख युद्धहीं भरि क्रुद्ध हिय भरि मान ।
तिन सबहिं शरन विदारि नृप सुत कंठगत कियप्राण ॥ २० ॥
पुनि अपर निश्चर वीर बहु मारे समर रघुवीर ।
रणधीर लछमन यातुधानन हते सजि धनु तीर ॥
तिहि समय खल दल प्रबल रण थल विचल खलभल हेरि ।
कपि भालु भिरे प्रचारि प्रमुदित एक एकन टेरि ॥ २१ ॥
घननाद लखि निज सैन गति नभ मध्य जाय दुराय ।
छाँड़न लगो शर विशिखते ह्वै व्याल लपटहिं आय ॥
रघुवीर लषण समेत नखशिख नाग फाँस मझार ।
द्रुतबाँधिडारे भूमि तल पुनि तजे तीर अपार ॥ २२ ॥
नल नील द्विविद मयंदको शर तीन तीन चलाय ॥
रिछराज अरु हनुमंत प्रति दश दश हने रिसलाय ॥
पुनि शरभ और गवाक्ष आदि कपीन द्वैद्वै बान ॥
सुग्रीव अंगद अंग अगणित शरहने बलवान ॥ २३ ॥
अरु अपर बहु कपि भालु भट तिन यथा योग निहार ॥
वरबान मारे इंद्रजीत सुगिरे भूमि मझार ॥
इमि नाग फाँस प्रचंड सबहि निबंध करि हरषाय ॥
निज सैन संयुत जाय कहि गति गहे पितुके पाय ॥ २४ ॥

सुनि मुदित दशमुख विजय निज लखि सुतहि लिय हिय लाय॥
चहुँ शोर छायो लंकमें जैजैति निश्चरराय ॥
आनंद युत लंकेश वेगहिं प्रात सियढिग जाय ॥
भाषो सदल सह बंधु मारे इंद्रजित रघुराय ॥ २५ ॥

चौ० यौं कहि पुनि निश्चरिन बुझाई ❀ पुष्पकयान मध्य बैठाई ॥
नभ मग ह्वै सीतहि लैजाई ❀ लावो द्रुत दिखाइ दुहुँ भाई ॥२६॥
यौंकहि गयौ भवन दशभाला ❀ त्रिजटा लाय विमान उताला ॥
तामधि सियहि वेगि बैठाई ❀ दरशाये रामहि नभजाई ॥२७॥
पतिगति देखि रुदन कर सीता ❀ त्रिजटहि बोली वचन विनीता॥
हाय सखी अब मैं का करहूँ ❀ मरों गिरौं कै पावक जरहूं २८॥
अलि विधिना मोही पर रूठे ❀ भये शास्त्र द्विज वचनहु झूठे ॥
तिय वैधव्य चिह्न जे आंहीं ❀ ते मम अंग एकहू नाहीं ॥२९॥
केश न भूरे कुटिल कठोरा ❀ मुख न रोमवाणी नहिं घोरा ॥
जुरी भौंह नहिं विरल न दंता ❀ अशुभ चिह्न ये तिय पतिहंता३०
जंघन रोम नैन लघु नाहीं ❀ कर पद गुल्फ न विषम लखाहीं
नखनदीह सितश्याम जनावैं ❀ कुचनहिं विरल न शुष्कदिखावैं३१
पदतलसंधि न परत दिखाई ❀ कर पद अंगुलि विषमन आई॥
सब सौभाग्यचिह्न मम गाता ❀ ते निष्फलकिमि किये विधाता३२
यौंकहि जनकसुता विलपानी ❀ तब त्रिजटा बोली मृदुवानी ॥
राजकुमारि सोच जनि करहू ❀ भुवपति जियत धीर उर धरहू३३
मुख न मलीन तेज नहिं हीना ❀ पुनि कपि भालु न देखिय दीना॥
याते धीर धरौ वैदेही ❀ जियत बंधुयुत तव पतिनेही ३४॥
यौंकहि पुष्पक भूमि उतारी ❀ लै सिय पूरव थल बैठारी ॥
सोच विवस सीता अकुलाहीं ❀ छिनछिन तिनहिं कल्पसम जाहीं३५

दोहा—इत सिय सोचति विकल अति, करि दुहुँ नृप सुत शोच ॥
उत दशकंठ समेत सब, मुदित निशाचर पोच ॥ ३६ ॥

छायो लंक अनंद अति, दुखित भालु कपि वृंद ॥
इंद्रजीत शरबंध परि, विकल भये रघुचंद ॥ ३७ ॥
अपर भालु कपि विवशबहु, ता छिन चहुँ दिशि धाय ॥
कियो विभीषण वेग ही, उचित प्रबंध दिढाय ॥ ३८ ॥
पुनि लंकेश कपीश ढिग, आय लखो बेहाल।
लै जल मंत्रित करि तुरत, सींचे नैन उताल ॥ ३९ ॥
परसत नीर सुकंठके, नैन खुले भो चेत।
लिय लंकेशहि लाय उर, कहे वचन वर हेत ॥ ४० ॥
पुनि रामहि सुग्रीव लखि, कियो विलाप अपार।
धीर दई लंकेश तिन, कहिकारि विविध विचार ॥ ४१ ॥
यों कहि पुनि लंकेश चहुँ, जाय सबहि दै धीर ॥
थापे सैन प्रबंध हित, कीश भालु बहुवीर ॥ ४२ ॥
तौ लग दिनकर उदय भो, मिटो सकल तम घोर।
लखि निज दल गति भालु कपि, विलपि कियो बहु शोर४३॥
ताछिन कछु मुरछा मिटी, रघुवर खोले नैन।
करि विलाप लखि बंधु गति, कहे सुकंठहि बैन ॥ ४४ ॥
हाय सखा हौं बंधु बिन, नहिं राखौं निज प्राण।
भयो न है नहिं होइ गो, भ्राता लषण समान ॥ ४५ ॥
यौं कहि भाषी राम मुहिं, सोच आपनो है न।
सोच विभीषणको जुहो, कहो राज्य वर दैन ॥ ४६ ॥
पै कह कीजे हे सखा, भावीतें न वसाय।
जाहु सदन अब संगलै, कीश भालु समुदाय ॥ ४७ ॥
यौं कहि विलपत विकल ह्वै, रघुवर द्दग जल ढार।
ताछिन आये लंकपति, करि चहुँ सैन सम्हार ॥ ४८ ॥
निरखि रामको विकल अति, ऋच्छ कीश विलपात ॥
धरौ धीर कपिपति कही, युद्धसमै अकुलात ॥ ४९ ॥
ताछिन बोले वालिसुत, मोहिं न कछू लखाय।
द्दग न लगे शर तात कहँ, लषण सहित रघुराय ॥५०॥

सुनि सुकंठ कह वीर सुत, धरौ धीर हिय माहिं ॥
लखि लंकापति राम दिशि, बोले कपिपति पाहिं ॥ ५१ ॥
हाय कहा अब कीजिये, दुहुँ नृप सुवन विहाल ॥
हम सब भये अनाथ अरु, प्रमुदित भो दशभाल ॥ ५२ ॥
अंक लगाय विभीषणै, तब बोले कपिराज ।
धीर धरौ हिय लंकपति, हौं करि हौं सब काज ॥ ५३ ॥
हति दशकंठहि कुलसदल, तव अभिषेक कराय ।
सियहि अवधलै जाहुँगो, राम लषण दुहुँ भाय ॥ ५४ ॥
तौ लग कछु मुरछा जगी, लहो सुचेत सुखेन ॥
लखि कपीश तब ससुर प्रति, कहे वचन भरिनैन ॥ ५५ ॥
व्यथित भालु कपि ते सबै, अरु दुहुँ राजकुमार ॥
किर्ष्किधा लै जाहु तहँ, कीजो सकल सम्हार ॥ ५६ ॥
हौं इत रावण सदल हति, दै विभीषणै राज ॥
जनक सुतहि लै वेगहीं, ऐहौं सहित समाज ॥ ५७ ॥
सुनि सुखेन कह बात भल, पै औषधि इक जोय ॥
आवै तौ दुहुँ बंधु युत, विरुज सकल दल होय ॥ ५८ ॥
क्षिरिसिंधु तट द्रोणगिरि, तामधि औषधि आय ॥
मथन भयो सागर तबै, प्रगटी अमित प्रभाय ॥ ५९ ॥
स्वर्ण करी संजीवनी, अरु विशल्य कर जान ॥
ते औषधि द्रुत लावहीं, पवनतनय बलवान ॥ ६० ॥
इमि सुखेन जामात प्रति, कही सुतौलग भूर ।
पवन वेग छायो चहूँ, उड़ी धूर नभ पूर ॥ ६१ ॥
ता छिन चितये चौंकि सब, आय गये खगराज ॥
परसत पौन सुपंखकी, दुरे व्याल सब भाज ॥ ६२ ॥
आय गरुड दुहुँ बंधु तन, परसो भये अनंद ।
लखि सब दल रुजहीन कह, जै जै जै रघुचंद ॥ ६३ ॥
मिलि सप्रेम दुहुँ बंधुको, कहि बहु बैन सुदेश ।
सबहि विरुज करि वेगही, जात भये विहँगेश ॥ ६४ ॥

रसिकविहारी विरुज ह्वै, राम लषण सब वीर।
लै धनु शर तरु गिरि समर, उद्धत भये सुधीर॥ ६५॥
रसिकविहारी मुदित ह्वै, वानर भालु अपार।
किलकैं कूदि कलोल करि, कह जैराम पुकार॥ ६६॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० नागफाँसबंधमोचन
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः॥ ८॥

भीम छंद।

दशवदन सुनि कपि भालु कृत बहु शोर। भेजे तमीचर भेद हित चहुँ ओर॥ तिन कही तिहि अकुलाय वेगहि आय। अहिफाँसते छूटे सदल दुहुँ भाय॥ १॥ चित चकित भो युत इंद्रजित दशभाल। बाढो सुनिश्चर निश्चरी उरशाल। सरमा उताल सिधाय वरणो हाल। सुनि मिली सीय सखीहि भईं निहाल॥ २॥ लंकेश वीर सुधीर धरि करि हंक॥ धूम्राक्ष प्रति भाषे सुबैन निशंक॥ द्रुतजाहु लै बहु सुभट सुभट प्रवीन। नृप सुतन मारौ सहित भालु कपीन॥ ३॥ धूम्राक्ष लै भट विपुल साज सजाय। रथ बैठि गमने भये अशकुन आय॥ सो वीर कपि दल मध्य जाय तुरंत। मर्दन लगो बहु भालु कीश अनंत॥ ४॥ तिहि देखि लै गिरि शृंग पवनकुमार। घालो सुताजि रथ आय भूमि मँझार॥ गहिगदा निश्चर कपिहि कीन प्रहार। पुनि वीर बहु गिरि तरुन धरि धरि मार॥५॥ अरु अपर निश्चर कीश ऋच्छ अपार। भिरि लरत मारत मरत करत पुकार॥ हनुमंत तब करि क्रोध गहि गिरि खंड। बलयुत हनो तिहि शीश भो शत खंड॥ ६॥ पुनि वीर तिहि हति ताल तरु गहि धाय। मारे निशाचर गये लंक पराय॥ तिन कहो सुनि धूम्राक्ष वध दशमाथ। करि क्रोध लेत उसाँस मींजत हाथ॥ ७॥ तब वज्रदंतहि बोलि कह दश शीश। भटसैनलै द्रुत जाय मारहु कीश॥ सो पाय आयसुवेगि कटक सजाय। रथ बैठि संयुग करन लागो आय॥८॥ कपि वृंद युद्धत धाय गहि गिरि वृच्छ। तिमि यातुधानन दलत करि बल ऋच्छ॥ गहि भिन्दिपाल कृपाण अमित हथ्यार॥ निश्चर

करैं भरि कोप कपिन सँहार ॥ ९ ॥ बाणन विदारत वज्रदंत कपीन । लखिधाय अंगद शाल तरु इकलीन ॥ सो वीर भूरभमाय मारो ताहि । भो विकल निश्चर भीजि शोणित माहि ॥ १० ॥ पुनि वज्रदंत सुवीर सुरति सम्हार । हनि शरन विहवल कीन वालिकुमार॥ अंगदहनो तिहिधाय तरु गहि चंड ॥ लाघव सुकीनो इषुनते बहु खंड ॥ ११ ॥ पुनि वालिसुत लै कुधर भारी भूर ॥ मारो सुरथ युत सारथी भो चूर ॥ पुनि और गहि गिरि खंड कीन प्रहार ॥ लगि बही निश्चर शीश शोणित धार ॥ १२ ॥ तब लै गदा करचंड कपि उर मार ॥ पुनि भिरे दुहुँ दुहुँ मुष्टिकीन प्रहार ॥ तब कोपि लै करवाल वालिकुमार ॥ करि शीश खंडित दीन भूतलडार ॥ १३ ॥ लखि तासुवध भागे निशाचर झार ॥ किय वज्रदंतहि घात वालिकुमार ॥ यौं विकल दशमुख पाहिं भाषी जाय ॥ सुनि क्रोध शोक कलेश करि अकुलाय ॥ १४ ॥ बोलो अकंपन पाहिं रावण वैन ॥ नृप सुतन मारहु वेगि संयुत सैन॥सोसाजि दल रथ बैठि आतुर जाय ॥ कपि भालु मर्दन लाग चहुँ दिशि धाय ॥ १५ ॥ शाखामृगहु बहु कुधर तरु पाषान ॥ गहि हनत लागत ताहि सुमन समान ॥ सो शक्ति शूल कृपाण बाणन मार ॥ करि कोप भालु कपीन करत सँहार १६ पुनि अपर निश्चर वीर युद्धत भूरि ॥ छाये धरामधि रुंड मुंड सपूरि ॥ दल घात निरखि मयंद गहि तरुधाय ॥ हनि यातुधानन दीन भूमि गिराय ॥ १७ ॥ सोलखि अकंपन वेगि बाणन मारि ॥ कीने विहाल मयंद सह कपि धारि ॥ अविलोकि निज दल विचल हनुमत धाय॥ मारो खलहि इक करहि कुधर भमाय ॥ १८ ॥ सोगिरि अकंपन बा-णते दिय काटि ॥ लखि कीश पुनि गहि वृक्ष धायो डाटि ॥ किय यातुधानहि विकल कटकसँहारि ॥ भागे निशाचर यूथ हाय पुकारि॥ ॥ १९॥ त्यौंही अकंपन घालि धनु शर चार ॥ कीनो विदीरण अंग पवनकुमार ॥ तब क्रोध भरि हनुमंत गहि तरु धाय ॥ तिहिं शीश हनि हति दीन भूमि गिराय ॥ २० ॥ पुनि अपर खल दल सकल

कीश सँहार ॥ निश्चरपराने विकल लंक मझार ॥ भाषो अकंपन घात सुनि दशशीश ॥ कछु दीन मुख भो कीन फिरि बहु रीस॥२१॥ करि हीय विविध विचार दृढ़ ठहराय ॥ वर सेनपति प्रति कही निश्चरराय॥भट भूरि भारी यातुधान प्रवीन॥ ते कपिनमारे काहु विजय न कीन ॥ २२ ॥ हौ कुंभकरण बलिष्ठ तुम घननाद ॥ अथवा निकुंभसुवीर कर अहलाद ॥ याते अबै सजि साहनी लैजाय ॥ मारौ सदल दुहुँ भाय विजय बढ़ाय ॥ २३ ॥ सुनिकै प्रहस्त उताल निज गृह जाय ॥ करि हवन दीने दान विप्र बुलाय ॥ पुनि साजि तन रथ बैठि कीन पयान ॥ भे अमित अशकुन पै न निश्चर मान ॥२४॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० का० ॥ स० ५७ ॥ श्लोक।

लंका राक्षसवीरैस्तैर्गजैरिव समाकुला ॥ हुताशनं तर्पयतां ब्राह्मणांश्चनमस्यताम् ॥ १ ॥ आज्यगंधप्रतिवहः सुरभिर्मारुतो ववौ ॥ स्रजश्च विविधाकारा जगृहुस्त्वभिमंत्रिताः ॥ २ ॥

भीमछंद।

वर मुख्य तीन प्रहस्त संग प्रधान ॥ उद्धत नरांतककुंभ हनु बलवान ॥ पुनि महानाद प्रचंड अपर अपार ॥ भट यातुधान उदंड समर मँझार ॥ २५ ॥ बहु भीर भारी विकट भट बलवान ॥ तिहि मध्य सेनापति प्रहस्त प्रधान ॥ किय घोर शोर सकोप निश्चर वीर ॥ मुद्गर मुशल असि चक्र गहि धनु तीर ॥ २६॥ लखि रैनिचर विकराल वनचर यूह॥धाये उपल तरु कुधर लै कर हूह ॥ दुहुँ ओरते भट भिरे भरि भरि रोष ॥ जै राम जै रावण छयो बहु घोष ॥२७॥ करि क्रोध निश्चर कपिन धरि धरि खात ॥ कपि यातुधानन करत मर्दि निपात ॥ इमि ऋच्छ कीश अपार निश्चर झुण्ड ॥ छाये चहूँ रण भूमि रुण्डहि मुंड ॥ २८॥ सह भट प्रहस्त प्रचंडकोप बढाय ॥ हति शरन दीनो राम दल बिचलाय ॥ निज सैन विहवल देखि द्विविद उताल ॥ मारो नरांतक शीश कुधर कराल ॥ २९ ॥ भोविकल पै बल भरि उठो करि खीस ॥ त्यौं बहुरि पत्री हनि हतो तिहि कीश ॥ ऋच्छेष गहि गिरि खंड भारी भूर॥उर महानादहिमारिकीनो चूर ॥ ३० ॥ इकशाल वृक्ष विशालगहि कपि तार ॥ द्रुत

कुंभ हनुहि प्रहारि डारो मार॥इहि अपरभट किय यातुधानन नाश॥ भो विकल निश्चर कटक छाई त्रास ॥ ३१ ॥ सो लखि प्रहस्त सकोप बाणन मार ॥ कपि भालु हति हति दीन संयुग डार ॥ तब ऋच्छ कपि अकुलाय कीन पुकार ॥सुनि नील दलपति धाय आय प्रचार ॥ ३२ ॥ नीलहि विलोकि प्रहस्त लाघव कीन ॥ बाणन विदारि गिराय भूतल दीन॥पुनि कीश उठि गहि विटप ताडो ताहि॥ सो बहुरि वेधे तीर कपितनु माहि ॥ ३३ ॥ तब धाय तिहि धनु छीन भंजो कीश॥कर मुशलधारि प्रहस्त मारोशीश॥पुनि क्रोध दुहुँ दुहुँ सैन पाल उदंड ॥ मुठभेर ह्वै इक एक हनत प्रचंड ॥ ३४ ॥ लहि घात कपि शिरहनो मुशल प्रहस्त ॥ भो विकल दलपति रुधिर भरि तनु त्रस्त ॥ पुनि वीर उठि तरु ताडि तिहि उर माहि ॥ निश्चर बहोरि प्रहार कीनो ताहि ॥३५॥ तब नील गहि गिरि खंड चंड विशाल॥मारो प्रहस्तहि शीशताकि उताल॥तिहि लगत निश्चर चूरभो ततकाल ॥ पुनि कीश क्रोधित अपर सैनहि घाल ॥३६॥ सोलखि प्रहस्त निपात पुनि निजघात॥कोउ लरतकोउ महि परत कोउ परात॥ तिन मर्दि मारे ऋच्छ कपि भटबंक॥कोउ प्राण लै निज भभरि भागे लंक ॥ ३७॥ इहि भांति निश्चर निकर भट विनशाय ॥ कपि भालु हर्षित भये विजय बढाय ॥ किलकैं सु कूदैं जीतिकै संग्राम ॥ सब कहहिं जै जै राम जै जै राम ॥ ३८ ॥

इति श्री० रा० र० वि० यु० धूम्राक्षप्रहस्तादियुद्धवध वर्णनो नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

भीम छंद ।

निश्चर पराने लखि प्रहस्त निपात ॥ करि हाय हाय विहालह्वै विलपात॥तजि शस्त्र वाहन वसन भूषण भूरि ॥ लै प्राण गमने लंकमधिभय पूरि॥१॥तिन जाय भाषौ विकल संयुग हाल ॥ सुनि सैनपति वध दुखित भो दशभाल ॥ पुनि दीन आयसु वेगि ह्वै बहु कुद्ध ॥ भट चलहु हौं अब करहुँगो सजि युद्ध ॥ २ ॥ सुनिकै रजायसु

बिकट वीर अपार ॥ दृढ़ कवच धारे अंग विविध हथ्यार ॥ गज वाजि रथ पैदर चमू चतुरंग ॥ साजी सबै लंकाधिराज अभंग ॥ ३॥

त्रिभंगी छंद।

नखशिखतनु साजे निश्चर भ्राजे बाजन वाजे छबि छाजे ॥
दीने चहुँ डंका शोर उतंका करि करि हंका भट गाजे ॥
फहरात निशाना रंग सुनाना दल अगवाना बहु चालैं ॥
घहरैं घर नालैं अरु करनालैं पुनि हथनालैं जंजालैं ॥ ४ ॥
तोपै गरुमंती रिपुदल हन्ती चल वरदन्ती शत लागे ॥
जिन अतुलित गोला साज अतोला हो भुवडोला तिन दागे ॥
तैसे अति छूरे सब विधि पूरे भूरि जमूरे बहु भाँती ॥
इमि अपर अपारा प्रबल हथ्यारा समर जुझारा मिलि पाँती ॥५॥
पनि पट्टिश बाना अरु धनुबाना शक्ति कृपाना खरसाना ॥
दृढ़ मुद्गर शूला खड्ग त्रिशूला फरस अतूला गहि नाना ॥
लै परिघ प्रचंडा चक्र उदंडा गदा अखंडा वरभारे ॥
लंबित बहु भाला सुलघु विशाला शस्त्र कराला करधारे ॥ ६ ॥
इमि निश्चर यूथा विविध वरूथा निज निज गूथा लख भूपा ॥
कोऊ विकरारा कोउ कुढारा कोउ सुढारा वररूपा ॥
शूकर मुख कोऊ गजमुख कोऊ खरमुख कोऊ मुखश्वाना ॥
केहरिमुख कोऊ मृगमुख कोऊ बिन मुख कोऊ मुखनाना ॥७॥
यौं अगणित भाँती देव अराती निज निज पाँती मिलि साजे ॥
बैठे सुठि वाहन ऐंठि सुवाहन भरे उछाहन बहु गाजे ॥
तबहीं दशभाला उठो उताला वर मखशाला गमन कियो ॥
लखिकै चहुँ घाहीँ कह मन माहीँ मोसम नाहीँ कोउ वियो ॥८॥
दोहा—जाय देवगृह सविधि शुचि, हवन कियो दशभाल ॥
द्विजन शीश नमि दान दै, कीने तुष्ट निहाल ॥ ९ ॥
यंत्र मंत्र करि विविध वर, अभिमंत्रित फल फूल ॥
अपर वस्तु बहु सिद्धि लिय, पत्र औषधी मूल ॥ १० ॥
पुनि तनु कवच हथ्यारसजि, निज इष्टहि शिरनाय ॥

स्यंदन सहस तुरंग युत, बैठो हिय हुलसाय ॥ ११ ॥
कियो पयान अनीक युत, जै दशमुख चहुँओर ॥
चलत भये अशकुन घने, गने न कछु वरजोर ॥ १२ ॥
बहु सिखदै चहुँ नगरको, कीनो परम प्रबंध ॥
पुनि कढि उत्तर द्वारते, चलत भयो दशकंठ ॥ १३ ॥
श्वेत छत्र चामर व्यजन, अपर सकल नृप साज ॥
यथा उचित भ्राजत चहूं, मध्य लंक अधिराज ॥ १४ ॥
लखि अपार दल साज बहु, वानर भालु तुरंत ॥
द्रुत आयुध नग उपलगहि, उद्धत भये अनंत ॥ १५ ॥
तब बूझी लंकेश प्रति, दूरहिते लखि राम ॥
सबै विभीषण चिह्न युत, दरशाये कहि नाम ॥ १६ ॥
रूप तेज दशवदन को, लखि बोले श्रीराम ॥
सत्य विभीषण भ्रात तव, बहु प्रताप बलधाम ॥ १७ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लंक अवनीश सोहै निपट निशंक वंक दशमुख पूरण मयंकसे प्रकाशमान ॥ बीसभुज रुंड लसैं परम उदंड चंड मंडित अखंड वरिवंड जे कृपान बान ॥ रसिकविहारी तेजधारी उद्ध युद्धकारी धीर वीर भारी है न जासम त्रिलोक आन ॥ जगत डरावन परावन सुदेवनको रावन महीको महारावन प्रतापवान ॥ १८ ॥ ख्याता तिहुँ-लोकनमें ज्ञाता बहु वेदनको उद्धत अनन्य ध्रुव ध्याता त्रिपुरारीको॥ परम अनूप दिव्य रूप यातुधान भूप जाहि अवलोकि तेज दुरत तमारीको॥ देव नर नाग यक्ष असुर अपार चहूं पैन कहूं कोऊ दशकंठ अनुहारी को ॥ रसिकविहारी रघुवीर धनुधारी इमि बार बार निरख सराहत सुरारी को ॥ १९ ॥

दोहा—यौं कहि पुनि रघुवंश मणि, करि सिय हरन विचार ॥
कवच निखंग सबंधु सज, वर धनु शर कर धार ॥ २० ॥
ताछिन दोऊ दल भिरे, भयो चहूँ दिशि शोर ॥
निश्चर वानर भालु बिच, समर होत अति घोर ॥ २१ ॥

त्रिभंगीछंद।

दृढ़ आयुधधारी बहु बलकारी निश्चर झारी वर योधा ॥
कपि ऋच्छन खंडैं भूमि न छंडैं घन रन मंडैं कर क्रोधा ॥
गहि भल्लन हूलैं शूलन शूलैं पकर धँधूलैं धरि खावैं ॥
इक एक प्रचारैं हनि महि डारैं, भटन सँहारैं, चहुँ धावैं ॥ २२ ॥
त्यों तरु गिरि धारे ऋच्छ अपारे कपि भट भारे रोष भरे ॥
निश्चरन ढहावैं मारि गिरावैं दल विनशावैं युद्ध अरे ॥
धरि धाय दपेटैं पुच्छलपेटैं हनत चपेटैं प्राण हरैं ॥
खल झुंडन झोरैं रुंड मरोरैं, मुंडन फोरैं फेरि अरैं ॥ २३ ॥
हनि लात अचुक्कन मारत मुक्कन तेउ मलुक्कन हतिडारैं ॥
सो बहुरिस लाई जांनु दबाई प्राण नशाई महि पारैं ॥
धरि दशनन काटैं कर पद छांटैं शीश उपाटैं झक झोरैं ॥
रसनाहिं मरोरैं दंतन तोरैं, नैनन फोरैं, मुख मोरैं ॥ २४ ॥
इमि कपिन अपारे, निश्चर मारे, विकल पुकारे ते सारे ॥
तबहीं दशभाला अतिहि उताला बाण कराला, करधारे ॥
हनि हनि खर तीरन अंग विदीरन करि बहु वीरन हति डारे ॥
कपि ऋच्छन त्रासे सुभटन नाशे पुनि इषु खासे सजि भारे२५॥
सुग्रीवहि घाले सब तन शाले भये विहाले हरि वीरा ॥
सो धरणिमँझारा गिरे पछारा कंप अपारा तजि धीरा ॥
नल आदिक योधा लखि भरि क्रोधा आय निरोधा, कीन घने।
बहु बल युत वाहन द्रुम गिरि पाहन, गहि गहि लाहन, धाय हने२६
तिन खंडि दशानन हनि हनि बानन कपि बलवानन, महिपारे॥
पुनि अपर अपारे, शस्त्र प्रहारे, बहु भट भारे हतिडारे ॥
ते वानर ऋच्छा तजि रणइच्छा करि पगपिच्छा, चहुँ भाजे।
रघुवर ढिग जाई अति विलपाई रामदुहाई कहि लाजे ॥ २७ ॥

तोमरछंद।

सुनि भालु कीश पुकार। करि क्रोध राजकुमार ॥
साजि धनुष बाण विशाल ॥ आतुर उठे रिपु शाल ॥ २८ ॥
तब कही लछमन नाथ। हौं करौं रण तिहि साथ॥

भाषी तिनै रघुवीर । हैं लंकपति अति वीर ॥ २९ ॥
तिहि संग ठानहु युद्ध । कीजो सुबुधि बल उद्ध ॥
सुनि लषण कह कर जोरा तव कृपा प्रभु वर जोर ॥ ३० ॥
इमि भाषि पुनि शिरनाय । द्रुत चले हिय हुलसाय ॥
बहु भालु कपि भट साथ । लीने कुधर तरु हाथ ॥ ३१ ॥
सजि लषण धनु शर भाथ । आवतलखे दशमाथ ॥
तव सहित भट समरत्थ । सन्मुख चलाय सुरत्थ ॥ ३२ ॥
बहु रीस भरि दशशीश । धायो सँहारत कीश ॥
सो देखि दौरि उताल । ढिग आय अंजनि लाल ॥ ३३ ॥
बोले अरे दशमाथ । मम देख दक्षिण हाथ ॥
है बाहु खल बल शाल । हो याहि ते तव काल ॥ ३४ ॥
सुनि क्रोध करि दशशीश । भाषी अरे लघु कीश ॥
क्यों करत मिथ्यहि मान । तू अजहुँ मोहिं न जान ॥ ३५ ॥
पै तोहिं निज मद भूरि । करु घात बहु बल पूरि ॥
पुनि हौं हतौं इक मुष्ट । हो प्राण तनु तुव तुष्ट ॥ ३६ ॥
जो अबहिं देहुँ नजाय । तौ उमँग तुव रहि जाय ॥
याते प्रथम कपि मोहिं । हन लेह तौ पुनि तोहिं ॥ ३७ ॥
सुनि कही रघुवर दूत । मारो जुहौं तव पूत ॥
सो सुमिरि तू हन मोहिं । फिर हौं हतौ खल तोहिं ॥ ३८ ॥
तब लंकपति रिस ठान । करि कूदि बल तल तान ॥
कपि उर हनो बलवान । तिहि लगत तनु थहरान ॥ ३९ ॥
उठि सम्हरि हनुमत हाल । दशकंठ हियतल घाल ॥
भो विकल होत प्रहार । तनु कंप चल जलधार ॥ ४० ॥
पुनि सम्हरि निश्चरनाह । बहु भाँति कपिहि सराह ॥
कह कीश धिगबल मोर । नहिं जिय कढो खल तोर ॥ ४१ ॥
पै बहुरि अब इक बार । करु वेग मोहि प्रहार ॥
तब तोहिं हौं हनि मुष्ट । लै प्राण होंउ संतुष्ट ॥ ४२ ॥

सुनि एक मुष्टि तुरंत । कपि उर हनी बलवंत ॥
सो होत अतुल प्रहार । भो विकल पवनकुमार ॥ ४३ ॥
तिन विकल लखि दशभाल । तहँते सिधारि उताल ॥
ढिग आय चापहि तान । नीलहि हने बहु बान ॥ ४४ ॥
तब कीश गहि तुर धाय । घालो जुशैल उठाय ॥
तिहि सप्तशरन विदारि । दशमुख दियो महिडारि ॥ ४५ ॥
ताछिन हनूमत वीर । गत मूरछा उठि धीर ॥
देखो चमूपति साथ । वर युद्ध कर दशमाथ ॥४६ ॥
तब वीर वर हनुमान । दृढ कीन उर अनुमान ॥
सह और युद्ध कराय । अब हनौ उचित न आय ॥ ४७ ॥
इहि भांति हीय विचारि । पुनि शैल तरु कर धारि ॥
जे अपर निश्चर भूर । तिन मर्दहीं कर चूर ॥४८ ॥
उत नील निश्चर राय । दुहुँ क्रुद्ध युद्ध कराय।
द्रुम शैल जो कपि मार । सो छिंदि भूतलडार ॥ ४९ ॥
तब कीश लघु वपु धार । चढि तासु ध्वजहि विदार ॥
तहँ ते उछलि पुनि आय । दिय दशहु क्रीट गिराय ॥ ५० ॥
पुनि धनुष गहि झकझोर । भजि कूदि शिरनन छोर ॥
इमि बार बार उताल। तिहि दरत भरत उछाल॥ ५१ ॥
छिन दशहु शीशन आय । गहि सबल देत हलाय ॥
छिन एक ते इक पाहिं । सब शिरन मध्य फिराहिं ॥ ५२ ॥
छिन श्रवण दंतन काट । नासा नखन छिन छाट ॥
छिन वाजि सारथि शीश । गहि दलत लघु वपु कीश ॥ ५३ ॥
बहु घात करदशमाथ । पै लगत कपि नहिं हाथ ॥
सो निरखि रघुकुल केत । हँस सकल सैन समेत ॥ ५४ ॥
दक्षमौलि तब रिस लाय । वर आग्नि अस्त्र चलाय ॥
नीलहि दयो महिडार । लखि पुत्र अनल न जार ॥ ५५ ॥
जब बाण लग दलपाल । भो प्राण निपट विहाल ॥
तब अपर वीरनचाल । हनि शक्ति शर दशभाल ॥ ५६ ॥

सो निरखि लछमन वीर । बोले वचन सजि तीर ॥
हे हे निशाचर ईश । मारत कहा लघु कीश ॥ ५७ ॥
मुहि देख हों तुव काल । इत आव धाय उताल ॥
सुनि लंकपति रथ लाय । ढिग आय कह रिस छाय ॥ ५८ ॥
रिपु बंधु है मति वंक । किमि कथित बैन निशंक ॥
हौं अबहिं वानर मारि । द्रुत देत भूतलडारि ॥ ५९ ॥
तब कहे लषण सुबैन । जे वीर ते गरजैन ॥
बल अस्त्र शस्त्र जुहोय । दरशाव अब सब सोय ॥ ६० ॥
सुनि वचन निश्चरपाल । शर सप्त घाल उताल ॥
द्रुत राम बंधु सुवीर । खंडित किये सब तीर ॥ ६१ ॥
पुनि क्रोध करि बलवान । छाँडे विशिख बहु बान ।
तेऊ लषण सब खंड । फिरि तजे निज शरचंड ॥ ६२ ॥
ते बाण बाणन भिंद । रावण किये सब छिंद ।
पुनि विशिख शर दशभाल । वेधे सुलषणहि भाल ॥ ६३ ॥
ते लगत शर विकराल । कछु विकल भे नृपलाल ॥
पुनि घालि बाण प्रचंड । कीनो सु रिपुधनु खंड ॥ ६४ ॥
अरु तीन शर विकराल । मारे निशाचर भाल ॥
इहि घात वंश दश कंठ । गुंठित भयो कछु कंठ ॥ ६५ ॥
पुनि सजग ह्वै बहु तीर । छोंडे निशाचर वीर ॥
वर लषणहू धनुतान । घाले अनेकन बान ॥ ६६ ॥
दुहुँ गात सायक छिंद । तनुत्रान भे दुहुँ भिंद ॥
दुहुँ अंग शोणित धार । नख शीश चलत अपार ॥ ६७ ॥
तब क्रोध करि दशभाल । विधिदत्त शक्ति कराल ॥
सो लषणके बलवान । मारी जु उर मधि तान ॥ ६८ ॥
तिहि लगत भूमि मँझार । द्रुत गिरे राजकुमार ॥
तिन धाय निश्चरनाह । भुज भरि उठावन चाह ॥ ६९ ॥
तिहि कोटिमेरु समान । भारी लगो तनु जान ॥

बहु बल कियो भुजवीश। नहिं चले रंच फनीश ॥ ७० ॥
सो शक्ति उरहि विभेदि। पुनि धसी भूतल छेदि ॥
गरु भूरि भार अनंत। बल करि थको बलवंत ॥ ७१ ॥
लखि धाय पवनकुमार। उर मुष्टि कीन प्रहार ॥
तिहि लगत निश्चरपाल। भो विकल निपट विहाल ॥ ७२ ॥
दुहुँ जानु टेकि सुकंपि। आतुर गिरो महि झंपि ॥
मुख श्रवण नैन मझार। बहि चली शोणित धार ॥ ७३ ॥
तब वायुसुत बलवंत। लषणहि उठाय तुरंत ॥
रघुवीर ढिग तिन धार। लीनी सु शक्ति निकार ॥ ७४ ॥
पुनि धाय पवनकुमार। आये जु समर मँझार।
लागेकरन बहु युद्ध। हनि निश्चरन करि क्रुद्ध ॥ ७५ ॥
लखि बंधुको रघुवीर। लाये हिये धरि धीर ॥
प्रभु अंग परसतवीर। भे तुरत विरुज शरीर ॥ ७६ ॥
उत चेत आय सुरारि। रथ बैठि धनु शर धारि ॥
बहु दलत ऋच्छ कपीन। हति सैन बिह्वल कीन ॥ ७७ ॥
लखि सैन विचल विहाल। उठि राम अतिहि उताल ॥
धाये सुधनुशर धार। सँग कीश भालु अपार ॥ ७८ ॥
आये सुसमर मझार। अवलोकि पवनकुमार ॥
लीने सुकंध चढाय। दशवदन सन्मुख जाय ॥ ७९ ॥
बोले सपदि रघुनाथ। हे लंकपति दशमाथ ॥
कह करत कीश प्रहार। इत आव मोहिं निहार ॥ ८० ॥
सुनि राम वचन सुरारि। धायो महारिस धारि ॥
धनु तान अगणित बान। छांडे प्रचंड सँधान ॥ ८१ ॥
नाराच रघुवर अंग। वेधे कवच करि भंग ॥
तब राम अतिहि उताल। शरहने विषम कराल ॥ ८२ ॥
हति सारथी अरु पत्र। वर क्रीट सहध्वज छत्र ॥
युत कवच भूषण वस्त्र। बहु साजमय सब वस्त्र ॥ ८३ ॥
दशवदनको यह साज। खंडित कियो रघुराज ॥

पुनि वीसहू भुज मूल । दीने शरनतें शूल ॥ ८४ ॥
लगिराम बाण अखंड । भो विकल निश्चर चंड ॥
शिख नख शिथिल सब गात । नाहिं नैन पलहु चलात ८५ ॥
यौं निरखि निपट अधीर । बोले विहँसि रघुवीर ॥
हे वीर निश्चरराज । तव वध करौं नहिं आज ॥ ८६ ॥
रण मध्य हो असमर्थ । तिहि वधत नाहिं समर्थ ॥
इहि हेतु ह्वै निरसंक ॥ अब वेगि गमनहु लंक ॥ ८७ ॥
सुनि राम बैन उताल । कीनो गमन दशभाल ॥
युत सैन लंकहि जाय । बैठो सुधाम लजाय ॥ ८८ ॥
रावण महा वरिबंड । सो सुमिरि ते शर चंड ॥
बहु सोच हीय मझार । गुणि करत भूरि विचार ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

भारी भूधरेशतें दिनेशहूते तापकारी शेषतें बिषारी वेग पौनते महानहैं ॥ रसिकविहारी तेजधारी जे हुताशनते प्राणतनहारी मृत्यु फाँसते निदानहैं । चंड जम दंड ते उदंड ब्रह्मदंडहूते बज्रते कठोर घोर जोर बे प्रमान हैं ॥ अमित हथ्यार नव खंडमें अखंड पैं न ऐसे कहुँ जैसे वरिबंड राम बान हैं ॥ ९० ॥

दोहा-सुमिर सुमिर यौं राम शर, चौंकि चितव चहुँ ओर ।
हिय पछिताय सुलंकपति, करत विचार बहोर ॥ ९१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

विधि वर थाप जानौं बहु निज शाप जानौं रघुको प्रताप जानौं सो न चित दीनो मैं । वेदके विधान जानौं शास्त्र औ पुरान जानौं ज्ञान ध्यान जानौं सो विचार नहिं लीनों मैं ॥ रसिकविहारी भली भाँति सियराम जानौं जानकै समस्त फेर भयो मतिहीनो मैं ॥ रंचहू न लायो बोध निपट अबोध रहो क्रोधते निरोध ह्वै विरोध हठि कीनो मैं ॥ ९२ ॥

दोहा-यों विचारि पछिताय पुनि, दशमुख गुनी सुहीय ।
होनी हुती जु सो भई, अब नहिं त्यागौं सीय ॥ ९३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कैतौ ना लगावै नेह कोऊ नर नारी साथ जोपै प्रीति जोरै तौ कछूहो फेरि तोरैना। रसिकविहारी काहू वचन न हारै कबौं जोपै वैन देवै तौ बहोरि हग चोरैना॥ कै तौ प्रन कैसहू न ठानैं रंच बात-हूको जोपै धारिलेवै वानि पुनि हठ छोरैना। सोई है त्रिशुद्ध औ प्रबुद्ध रण रुद्ध उद्ध रिपुतें विरुद्ध क्रुद्ध युद्ध मुख मोरैना॥ ९४॥

दोहा—यातुधानपति यौं अमित, गुणत विचारत बात।
जात भयो रनिवास मधि, यौं बीती सबरात॥ ९५॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० रावणयुद्ध
वर्णनो नाम दशमोविभागः॥ १०॥

दोवई छंद।

रावण कीन विचार हीय हठ कुंभकरण बलभारी।
भक्षण करै भालु कपि सिगरे सो सह लषण खरारी।
यौं गुनि बहुरि सभा मधि आये आयसु दई उताला॥
काहू विधि मम बंधुहि निश्चर जाय जगावैं हाला॥१॥
सुनि राक्षस बहु साजि सिधारे आये वेगि तहांई।
कुंभकरण जहँ मास अनेकन सोवत रहत सदाई॥
सदन विशाल शैलकंदर मधि इक योजन चहुँ ओरा।
निपट अचेत शैन कीनें सो चलत श्वास अतिघोरा॥ २॥

प्र० वा०॥ भ० कां० स० ६०॥ श्लो०॥

नवसप्तदशाष्टौ च मासान्स्वपिति राक्षसः। मंत्रं कृत्वा प्रसुप्तो योमृतस्तु नवमेहनि॥२॥तां प्रविश्य महाद्वारां सर्वतो योजनायताम्। कुंभकर्णगुहां रम्यां पुष्पगंधप्रवाहिनीम्॥ २॥ इत्यादि॥

दोवई छंद।

प्रविशि न सकत श्वासलगि निश्चर तब कर गहि वरियारा॥
बहुबल करि मिलि धाय एक सँग बैठे सदन मँझारा॥
जाय प्रथम तिहि पास चहूँ दिशि अशन पान बहुधारा॥
आमिष अन्न राशि भूधर सम शोणित कलश हजारा॥ ३॥
अरु सहस्र घट सुरा अमित फल पुनि सजीव पशु भूरी॥

विविध सुगंध वसन भूषण वर अपर वस्तु प्रति रूरी ॥
यों सज पंचसहस्र निशाचर गरजे मेघ समाना ॥
पुनि सब शंख मृदंग आदि बहु वाद्य शोर किय नाना ॥ ४ ॥
नहिं जागो तब मुद्गर मूशल गदा उपल तरु धारे ॥
उर शिर बाहु चरण कटि जंघन वीरन अमित प्रहारे ॥
तऊ न ताहि बोध तब निश्चर दशसहस्र मिलि गाजे ॥
कियो घोर रव तूरदुंदुभी आदि बजैं बहु बाजे ॥ ५ ॥
जगो न तब तिहि तनपर गज रथ ऊंट तुरंग चढाये ॥
ते बहु दलत मलत धावत वपु कछू न तिहि के भाये ॥
पुनि निश्चर सकोप श्रुति नासा केशलुंच मिलि कीने ॥
अरु शत कुंभ नीर ते दोऊ श्रवण तासु भरिदीने ॥ ६ ॥
कैसहु नहिं जागौ तब द्वैशत तोप जँजीरन बाँधो ॥
भरि छोडी बहु बार जगो वह जब सुयतन यह साधो ॥
जृंभित है तनु इत उत फेरो गिरे सकल चहुँ ओरा ॥
नैन उघारि लखो सबही दिशि कुंभकरण अति घोरा ॥ ७ ॥
सैनहि अशन पान सहजै सब करि बूझी तिन पाहीं ॥
कहौ मोहिं किहि काज जगायो भ्रात कुशल कै नाहीं ॥
नृप मंत्री यूपाक्ष जोरि कर कहो सकल तब हाला ॥
सो सुनि कुंभकरण बहु रिस भरि बोलो वचन उताला ॥ ८ ॥
तजैं भीति सब यातुधानपति हौं अबहीं द्रुत जाई ॥
सदल राम लछमणहि नाश करि,भ्रातहि मिलौं सु आई ॥
तब कर जोरि महोदर भाषी नाथ प्रथम मिलि लीजे ॥
पुनि दृढ मंत्र ठानि दल संयुत संयुग विजय करीजे ॥ ९ ॥
तासु वचन सुनिकै उठि बैठौ तब वह निश्चर धाई ॥
आय कही शिरनाय भूपसे नाथ जगो तव भाई ॥
गुणि नृप दई रजाय प्रथम तिहि मज्जन अशन करावो ॥
होय तृप्त पुनि वसन विभूषण साजि सभा मधि लावो ॥ १० ॥

सो सुनि सकल सौंज लै निश्चर कुंभकरण ढिग जाई ॥
मज्जन अशन पान करवायो प्रमुदित भयो अघाई ॥
सजितन उठो भ्रात दरशन हित ताछिन पुनि मन माना ॥
द्वै सहस्र घट सुरापान करि सहजहि कियो पयाना ॥ ११ ॥
षट्शत धनुष उच्चतनु जाको है शत धनु विस्तारा ॥
दृग मंडल दुहुँशकट चक्र सम अंगशैल इव भारा ॥
कूप सरिस नासापुट दोऊ मुख गिरि कंदर माना ॥
बहु विशाल विकराल काल सो कुंभकरण बलवाना ॥ १२ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ यु० कां० ॥ स० ६५ ॥ श्लो० ॥

धनुःशत परीणाहः सषट्शत समुच्छ्रितः ॥
रौद्रः शकटचक्राक्षो महापर्वत सन्निभः ॥

दोवई छंद।

बली भीम वपु परम प्रतापी कुंभकरण मतिवाना ॥
जा सम यातुधान लंकामधि प्रबल कोउ नहिं आना ॥
चलत भयो रावण ढिग तब वह दूरहि परो दिखाई ।
तिहि विलोकि ह्वै विकल भगे चहुँ भालु कीश समुदाई ॥ १३ ॥
कोऊ चढे द्रुमन भजि कोऊ गिरि कंदरन छिपाने ॥
कोऊ रघुवर निकट पराने कोउ फिरैं बिललाने ॥
सोगति हेरि राम धनु शर सजि ठाढे भये उताला ।
सबहि धीर दै लखि लंकेशहि कही कौन विकराला ॥ १४ ॥
तब करजोर विभीषण भाषी कुंभकर्ण यह नाथा ॥
आज दशानन ताहि जगायो युद्ध करन तव साथा ॥
सुनि रघुवीर नील प्रति बोले सब ही धीर धराई ॥
भालु कीशमय व्यूह रचौ वर मिलि बहु भट समुदाई ॥ १५ ॥
तब सेनापति जाय वेगही राम कथित सब कीने ॥
सजग भये हनुमंत आदि भट द्रुम गिरि आयुध लीने ॥
कुंभकर्ण उत आय भ्रात ढिग सादर शीश नवायो ॥
उठि दशवदन अंक भरि बंधुहि वर आसन बैठायो ॥ १६ ॥

कुंभकर्ण बूझी तब भ्रातहि क्यों मुहि वेगि जगायो ॥
सुनि भाषी दशकंठ कुपित ह्वै अजहुँ न परत जनायो ॥
सदा बंधु नव सप्त सु दशबसु षट मासन लौं सोवै ॥
कबहुँ वर्ष बहु सैन करै यौं तौहू नींद न खोवै ॥ १७ ॥
याहू छिन निद्रा दृग छाई परत न कछु दरशाई ॥
यातुधान नाशो बहु संयुग नर वानर दल आई ॥
कुंभकर्ण सुनि कही क्रोध भरि निज करणी फल पाये ॥
कहा जानि जगमातु सियाको जाय लंक हरि लाये ॥ १८ ॥
साम दान अरु दंड भेद ये चार चहिय नृप माहीं ॥
अर्थ धर्म पुनि काम मोक्ष कृत समय समय भल आहीं ।
बल गुण रूप प्रताप भाग्य धन कुल निज पर लखि लीजे ॥
देश काल निरवेर शुभाशुभ प्रीति वैर तब कीजे ॥ १९ ॥
सुनि दशवदन क्रोध करि भाषी गुरु सम मोहि सिखावै ॥
होनी हुती भई सो अब तौ चहिय सुजिहि जय आवै ।
कुंभकर्ण तब कही जोरि कर रोष करिय जनि ताता ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सदलहति हौं मारौं दुहुँ भ्राता ॥ २० ॥
दृढ़ प्रतीत मुहिं निज बलकी पै चिह्न अशुभ दरशावैं ॥
याते जानि परै इमि मोकों निश्चर सकल नशावैं ॥
यौंकहि कही फेरि हे भूपति नर वानर कह भीता ॥
जाय एक हौं करौं विजय निज तव वश ह्वै है सीता ॥ २१ ॥
कुंभकर्णके वचन सुनतही वेगि महोदर भाषी ॥
भो नृप बंधु प्रौढ ह्वै अजहूं रंचहु बुद्धि न राखी ॥
जो रघुवीर सहस चौदह भट आय एक हति डारे ।
तिन सन्मुख रणहेत अकेले गमनत विनहि विचारे ॥ २२ ॥
घटकरनाहिं यौं भाषि महोदर कह पुनि रावण पाहीं ॥
हमद्विजीभ आदिक सुपंच भट नाथ बंधु मिलि जाहीं ॥
सदल सबंधु अबहिं रघुनाथै मारि लंक मधि आवैं ॥
तब अनाथ सीता दुख भीता प्रभु तव वश ह्वै जावैं ॥ २३ ॥

सुनि कह कुंभकर्ण मुहि रोची यह जु महोदर वरनी ॥
करौं विनाश आज तव रिपुको लखौ नाथ मम करनी ॥
तब रावण तिहि विशद विभूषण साजि रजायसु दीनी ॥
चलो मत्तगज सरिस शूललै संग सैन मदभीनी ॥ २४ ॥
पुर प्राकार उलंघि कढ़ा तिहि निरखि भालु कपि भागे ॥
तब नल नील तिनै धीरज दै धाये सँग ले आगे ॥
दूरहि ते लखि ताहि बिभीषण गहे भ्रात पद जाई ॥
कही मोहिं दशबदन तजो हौं राम शरण भो आई ॥ २५ ॥
कुंभकर्ण बहु बंधु सराहो सो पुनि दल मधि आये ॥
चले निशंक निशाचर लखिकै कीश भालु चहुँधाये ॥
बहु गरु शैल शस्त्र द्रुम अगणित हने वीर बलवाना ॥
खंडित भये सकल ते तिहि तन लगे न सुमन समाना ॥ २६ ॥
कुंभकर्ण करि क्रोध शूल गहि धायो कपिदल माहीं ॥
अमित ऋच्छ वनचरन विदारे भागे नाहिं बचाहीं ॥
लाखन चूर भये दबि लातन लाखन धरि धरि खाये ॥
लाखन हने चपेटन मुष्टन लाखन काटि बहाये ॥ २७ ॥
लाखन कीश भालु गहि फेंके लाखन धक्कन मारे ॥
लाखन भीति विवशभजि डूबे आपहि सिंधु मझारे ॥
कुंभकर्ण गहि जे कपि ऋच्छन भच्छन करे अपारा ॥
तिन महँ बहु सजीव कढ़ि भागे श्रवण नासिका द्वारा ॥ २८ ॥
तिहि भय भगे ऋच्छ कपि पुनि तिन अंगद हांकि प्रचारे ॥
तब सब प्राण आश तजि धाये तरु गिरि विविध प्रहारे ॥
कुंभकर्ण लैगदा बिभंजे बहु वनचरन बिदारे ॥
द्विविदकीशगहि शैल निश्चरन बाहन युत दलि डारे ॥ २९ ॥
यातुधान गण हने ऋच्छ कपि ते तिन अगणित नासे ॥
मारत मरत मुरत नाहिं कोऊ दोऊ दिशि भट खासे ॥
हनूमान नभपथ ह्वै बहु गिरि कुंभकर्ण पर बरसे ॥
ते सब वीर शूलते काटे एकहु नाहिं तनु परसे ॥ ३० ॥

तब केसरी किशोर जोर करि घोर शैल तिहि मारो ॥
विकल भयो शोणितसे भीजो कुंभकर्ण तनु सारो ॥
पुनि गहि शूल तमीचर कपिके उर अंतर हनिहूलो ॥
कियो शोर हनुमंत व्यथित ह्वै घरि एकलौं रण भूलो ॥ ३१ ॥
गति लखि सैनपाल गहिभूधर तिहि प्रहार द्रुत कीनो ॥
कुंभकर्ण सो शैल मुष्टितें हति चूरण करि दीनो ॥
सो अविलोकि पंच मिलि तासों भिरे आय भरि क्रोधा ॥
नील गंधमादन गवाक्ष अरु शरभऋषभ वर योधा ॥ ३२ ॥
कुंभकर्ण तब नीलहि जंघन दाबि व्यथित बहु कीनो ॥
बहुरि गवाक्षहि तल प्रहार तें प्राण कंठ करि दीनो ॥
शरभहि हनि मुष्टिका गिरायो ऋषभहि भुजा दबाये ॥
सकल वीर ते परे धरणिमें नख शिख रुधिर अन्हाये ॥ ३३ ॥
तिन प्रहारि यौं पुनि कपि ऋच्छन राक्षस भंजन लागा ॥
बहु बिलपाय हाय करि व्याकुल बहुरि सकल दल भागा ॥
ताछिन वालिपुत्र तिहि ऊपर पर्वत धाय पवारा ॥
निश्चर शूल प्रहारो अंगद सो करि दाव निवारा ॥ ३४ ॥
पुनि युवराज तासु उर वेगै तलताड़न किय घोरा ॥
कुंभकर्ण कछु पीड़ित ह्वैकै सजग भयो बरजोरा ॥
बल करि मुष्टि हनी सो कपि हिय गिरो अचेत सुकीशा ॥
तब निश्चर तिन त्यागि शूल लै मारो जाय हरीशा ॥ ३५ ॥
ह्वै कछु विकल सुकंठ सम्हरि पुनि गिरि तिहि कीन प्रहारा ॥
निश्चर कियो नाद तनु कंपो फिरि भरि क्रोध अपारा ॥
भार सहस्र शूल कपिपति पै वध हित वेगि चलायो ॥
लखि हनुमान धाय कै वीचहि सो गहि तोरि बहायो ॥ ३६ ॥
कुंभकर्ण निज शूल व्यर्थ लखि पुनि गहि गिरि तकिघाला ॥
सो शिर परत विकल है घुर्मित गिरे भूमि हरिपाला ॥
निरखि अचेत धाय गहि निश्चर तिन लै कांख दबाई ॥
चलो लंक मर्दत कपि ऋच्छन अतिआनंद अघाई ॥ ३७ ॥

कुंभकर्ण करगत सुग्रीवहि लखि कपि करत विलापा ॥
हनूमान बलगुणि सुकंठको दै धीरज दलथापा ॥
उत नृप बंधु लिये हरि राजहि प्रविशो लंक मँझारी ॥
चंदन सुमन वारि तिहि ऊपर वरषैं मुद नर नारी ॥ ३८ ॥
सो शीतलता लहि सुकंठकी भई मूरछा दूरी ॥
निरखि लंक पथ आप विवश गुणि कियो दाँव बलपूरी ॥
पगन कुक्षि कर नखन श्रौन दंतन नासिका विदारी ॥
चौंकि रोष करि कुंभकर्ण तिन डारो अवनि पछारी ॥ ३९ ॥
भूतल परत गेंद सम हरिपति उछलि गगन पथजाई ॥
आये राम निकट तिन लखिकै सकल सैन हुलसाई ॥
नासा श्रवणहीन ह्वै अतिही कुंभकर्ण सकुचायो ॥
फिरो बहोरि क्रोध भरि धायो सबतनु शोणित छायो ॥ ४० ॥
आय गदागहि भालु कीश पुनि अमितहने अरु खाये ॥
भयो विकल दल लखि रामानुज तासु अंग शर छाये ॥
कुंभकर्ण बाणन ते व्याकुल पै न गिनै तनु पीरा ॥
रामहिं देखि क्रोध करि धायो लिये सु आयुध वीरा ॥ ४१ ॥
तब रघुवीर तीर निश्चर उर रौद्र अस्त्र मयमारे ॥
गिरो गदा भो विकल बानते बेधि गये तनुसारे ॥
यातुधान पुनि शैल शृंग लै हनो राम तिहि काटो ॥
कुंभकर्ण मुद्गर कर गहि कै बहुरि राघवहि डाटो ॥ ४२ ॥
हौं न विराध कबंध त्रिशिर खर कपि मारीच न रामा ॥
सुर नर नाग विदित तिहुँ पुरबिच कुंभकर्ण मम नामा ॥
करौं प्रहार काहमैं प्रथमैं तुम निज बल दरशावो ॥
पुनि यह मुद्गर हनौं शीश तव तनु ताजि यमपुरजावो ॥ ४३ ॥
सुनि रघुनाथ क्रोध करि तिहि तनु ते शर अगणित मारे ॥
जे विराध खर ताल वालिपै परम प्रचंड प्रहारे ॥
कुंभकर्ण तिन कछु मुद्गरते भंजे कछु वपुलागे ॥
सो नहिं गिने वीर वर आयुध युत धायो प्रभु आगे ॥ ४४ ॥

तब उताल वायव्य अस्त्रयुत राम बाणतिहि मारा ॥
दक्षिण बाहु सहित मुद्गर सो खंडि महीतल डारा ॥
वाम हाथसे तरु उपाटिकै कुंभकर्ण पुनि धायो ॥
ऐंद्र अस्त्र शरते द्रुमसह भुज सोऊ काटि गिरायो ॥ ४५ ॥
कटत बाहु बहु रिसकरि धायो भक्षण हित मुख फारे ॥
अर्धचंद्र शरते रघुवर तब पग खंडित करिडारे ॥
पुनि बाणन आनन भरि दीनो भयो विकल वरजोरा ॥
रहो रुंड युत मुंड क्रोध वश कियो शोर अतिघोरा ॥ ४६ ॥
तब रघुवीर उदंड चंड शर सजि कोदण्ड प्रहारा ॥
खंडित भयो शीश सो मरतहु मारौं राम पुकारा ॥
कुम्भकर्णको रुण्ड मुंड महि गिरो मेरु सम भारा ॥
पुर प्राकार द्वार कपि निश्चर चूरन भये अपारा ॥ ४७ ॥
तासु मरन लखि मुदित भये सुर आय सुमन बरसाये ॥
किलकैं कूदि भालु कपि चहुँ दिशि जै जै शोर मचाये ॥
यातुधान बलवान अपर ते लैलै प्राण पराने ॥
रसिकविहारी रामचंद्रकी विजय देव सुखसाने ॥ ४८ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० कुम्भकर्ण युद्ध वध
वर्णनो नाम एकादशोविभागः ॥ ११ ॥

दोहा—आतुर जाय सुलंक मधि, यातुधान विलपाय ॥
रावण प्रति वरणो सबै, बंधु मरन अकुलाय ॥ १ ॥
कुंभकर्णको निधन सुनि, विकल भयो दशमाथ ॥
रुदन करत गुणवरणिकै, दलत भूमितल हाथ ॥ २ ॥
अपर निशाचर निश्चरी, करमलि शीशधुनात ॥
कुंभकर्ण बल गुणत पुनि, रोय विकल बिलपात ॥ ३ ॥
दशमुख भाषी बंधु बिन, धिग जीवन सुखराज ॥
कुंभकर्ण ढिग जाहुँगो, हौंहू तजि सब काज ॥ ४ ॥
ताछिन रावण पुत्र वर, बोले धीर धराय ॥
नाथ सकल हम जायकै, करैं विजय हरषाय ॥ ५ ॥

यौं भाषी त्रिशिरा सुभट, अरु देवांतक वीर ॥
प्रबल नरांतक रजनिचर, वर अतिकाय सुधीर ॥ ६ ॥
सो सुनि रावण धीर धरि, तिन बहु साज सजाय ॥
संग सैन चतुरंग करि, दीनी युद्ध रजाय ॥ ७ ॥
बहुरि महोदर वीर अरु, महापार्श्व साजि अंग ॥
निश्चरपति निज भ्रात ये, किय पुत्रनके संग ॥ ८ ॥
रण दुर्मद षट सुभट ये, निश्चर अपर अपार ॥
चले यथोचित साज साजि, वाहन कवच हथ्यार ॥ ९ ॥
जै रावण कहि वेगही, भिरे सुनिश्चर आय ॥
जै रघुवर कपि भालु करि, गहि गिरि पादप धाय ॥ १०
हनैं तमीचर ऋच्छ कपि, ते तिनकर संहार ॥
कटत अटत नहिं भट हटत, एकहि एक प्रचार ॥ ११ ॥
दांतन लातन मुष्टिकन, तलन नखन बहु वीर ॥
अस्त्रन शस्त्रन गिरि तरुन, हनत गनत नहिं पीर ॥ १२ ॥
तेज तुरंग फिराय चहुँ, पास शक्ति कर धार ॥
हने नरांतक सतशत, कपि छिन एक मझार ॥ १३ ॥
यौंहीं हते अपार भट, दिय कपि दल बिचलाय ॥
धाये अंगद वेगहीं, पाय सुकंठ रजाय ॥ १४ ॥
देखि नरांतक कीश उर, कीनो पाश प्रहार ॥
चूर चूर ह्वै शस्त्र सो, बिखरो भूमि मझार ॥ १५ ॥
वालिपुत्र तब कोध करि, तलहनि हत्यौ तुरंग ॥
यातुधान सो कीश शिर, मारो मुष्ट अभंग ॥ १६ ॥
पुनि सकोप अंगद सँभरि, मुष्ट हनो तिहि भाल ॥
विकल नरांतक महि परो, निकसो प्राण उताल ॥ १७ ॥

चौ०देखि नरांतक वध निशिचारी ❋ धाये कुपित शस्त्र करधारी ॥
आय वेगि देवांतक योधा ❋ परिघ हनो अंगदहि सक्रोधा १८
तब कपि गहि पादप तिहि मारा ❋ सो त्रिशिरा खंडित करिडारा ॥
पुनि बहु तरु गिरि कीश चलाये ❋ ते सब निश्चर भंजि गिराये १९॥

पुनि त्रिशिरा अंगद तनु सारा ❀ बेधो शरण अमित खर धारा ॥
वालितनय तरु कुधर प्रहारे ❀ तिनहि महोदर परिघ विदारे२०॥
तब कपि धाय उपल इकमारा ❀ करिभाग्यो करि घोर चिकारा ॥
निज गज व्यथित महोदर देखा ❀ तिहि ताडो भरि क्रोध विशेषा२१
देवांतक पुनि आय उताला ❀ हनो कीश शिर परिघ कराला॥
तब अंगद तलकीन प्रहारा ❀ मत्त महोदर गज हति डारा२२॥
पुनि तिहि दन्त उखारि सुकीशा ❀ किय प्रहार देवांतक शीशा ॥
भयो विकल फिरि सम्हारि उताला ❀ अंगद शिरहि परिघ सो घाला२३
तिहि प्रहार वश कछु अकुलायो ❀ जानु टेकि कपि महि लगआयो॥
पुनि उताल उठि तनु सुधि लायो ❀ तौ लग त्रिशिरा बाण चलायो२४
तीन तीर त्रिशिरा वरयोधा ❀ कपि ललाट मारे करि क्रोधा॥
सो लखि नील पवनसुत धाये ❀ बहु गिरि पादप उपल चलाये२५
पुनि गिरि खंड नील गहि भारा ❀ वेगि त्रिशिर शिर पर सो मारा॥
लखि बीचहि निश्चर बल पूरा ❀ बाणन काटि उपल कियचूरा२६
नील बहुरि इक शैलैं चलायो ❀ सो लागत त्रिशरा जमुहायो ॥
देवांतक लै परिघ कराला ❀ धाय पवनसुतके शिरघाला२७॥
तब करि कोप वीर हनुमंता ❀ मुष्ट वज्र सम हनो तुरंता ॥
देवांतक शिर चूरन भयऊ ❀ ह्वै खल मृतक भूमिगिरि गयऊ२८
लखि निश्चर देवांतक हाला ❀ कियो सकल बहु कोप कराला
अपर मत्तगज ह्वै असवारा ❀ धाय महोदर कपिहि प्रचारा२९
त्रिशिर महोदर दुहुँ इक साथा ❀ भिरे बहुरि कपि दलपति साथा॥
अमितबाण नीलहि तिन मारे ❀ सोऊ बहु तरु कुधर प्रहारे३०॥
तब करिकोप महोदर वीरा ❀ कपिहि कियो विह्वल हनितीरा॥
ह्वै मूर्छित पुनि कीश सम्हारा ❀ सह तरु शैल सुवेगि उखारा३१
तौलि ताकि सो गिरि वरियारा ❀ सपदि महोदर शीश प्रहारा ॥
तिहि लागत गजसहित निशाचर ❀ गिरो मृतक ह्वै वेगि भूमिपर३२
तिहिवधलखित्रिशिरा भरि क्रोधा ❀ हने वाण हनुमानहि योधा ॥
घालो शैल शिखर कपि तासू ❀ शरन चूर किय निश्चर आसू३३

पुनि हनुमत बहु द्रुम बरसाये ❀ सोहनि शरन त्रिशिर बिनशाये॥
वीर धाय तब तासु तुरंगा ❀ नखन विदारि कीन तनु भंगा३४
लखि निश्चर वर शक्ति प्रहारी ❀ सो गहि कीश भंजि महि डारी॥
तब त्रिशिरा लै खड्ग विशाला ❀ बल भरि हनूमान उर घाला३५
तासु हृदय पुनि कपि तल मारा ❀ सो फिरि कीशहि मुष्ट प्रहारा॥
गहि कृपाण हनुमान सु डाटे ❀ त्रिशिर शीश आतुर तिहुँ काटे३६

पद्धरीछंद।

लखि त्रिशिर घात निश्चर समस्त। भे अति विहाल बहु शोकग्रस्त॥
कपि भालु पाय आनंद सर्व। चहुँ ओर वीर गर्जे सगर्व॥ ३७॥
तब यातुधान करि कोप चंड। धाये हथ्यार गहि गहि उदंड॥
शर शक्ति शूल भल्लन सुघाल। चहुँ भालु कीश बहु किय बिहाल ३८
भट महापार्श्व वर शस्त्रधार। वारनारोह बहु कपिनमार॥
लखि ऋषभकीश धाये उताल। कह आय हेरु खल तोरकाल ३९
तब गदा कीन निश्चर प्रहार। कपि हृदय स्रवित बहु रुधिर धार॥
पुनि ऋषभ क्रोधकर मुष्ट तान। मारो सुकुक्षि भो विकल प्रान॥४०॥
मूर्छित सुरारि धरणीमझार। गिरि गदाधार पुनि उठि सम्हार॥
कियघात कीशके शीश चंड। तिहि हनो फेरि वानर उदंड॥४१॥
पुनि यातुधान बहुघात कीन। तब गदा ऋषभ तिहि छीन लीन॥
सो तासु शीशहनि वीर धाय। करिप्रान हीन दीनो गिराय ४२॥
भटमहापार्श्ववर समरधीर। तिहि निधन कीन द्रुत ऋषभवीर॥
लखि मरन तासु अतिकाय धाय। स्यंदन अरूढ किय समर आय४३
अतिकाय काय लखि कहत कीश। है कुंभकर्ण दूजो सुदीस॥
वाजी सहस्र जिहि रथ मझार। साजे अनेक उद्धत हथ्यार॥ ४४॥
दुहुँ ओर लंक द्वै खड्ग चंड। जिन मुष्टि पुष्टि अनुपम उदंड॥
विस्तार जासु है हस्तचार॥ दशहस्त लंब दृढ भूरि भार॥ ४५॥

प्र०॥ वा०॥ यु० का०॥ स० ७१॥ श्लोक।

द्वौ च खड्गौ च पार्श्वस्थौ प्रदीप्तौ पार्श्वशोभितौ॥
चतुर्हस्तत्सरुचितौ व्यक्तहस्तदशायतौ॥ १॥

पद्धरी छंद।

तिहि हेरि राम लंकेश पाहि। बूझी सु बेगि यह कौन आहि॥
तब यातुधानपति अति उताल। कीनो बखान सब तासु हाल ४६॥
सो कालरूप निश्चर प्रचंड। ऋच्छन कपीन कर खंड खंड॥
डारत अपार भूतल मझार। ते लरत करत आरत पुकार॥ ४७॥
दल विकल देखि रघुवर सुजान। बोले सुधारि कर चाप बान॥
है समर धीर बर बीर उद्ध। हौं करौं जाय इहि संग युद्ध॥ ४८॥
तब लषण वीर शर चाप धार। हौं करौं कही संयुग अपार॥
यौं भाषि वेगि तिहि निकट आय। टंकोर कीन धनु शोर छाय ४९॥
सुनि शोर घोर लखि लषण ओर। अतिकाय धाय आयो सजोर॥
सजिबाण वीर बोलो उताल। हौ राम बंधु अबहीं सुबाल॥ ५०॥
फिर जाहु वृथा क्यों तजहु प्राण। आवैं सुभ्रात तव बल निधान॥
सो होहिं आज मम वाण ग्रस्त। कै करहिं मोहिं रघुवीर त्रस्त॥५१॥
सौमित्र बिहँसि भाषी सुवीर। हौ राजपुत्र भट समरधीर॥
पै कथनमात्रको काम नाहिं। बल करहु होय जो अंग माहिं५२॥
हो तरुण वृद्ध अथवा सुबाल। पै व्याल दंश करिदे विहाल॥
लीनो विचारि तब सकल गर्व। निज अस्त्र शस्त्र बल करहु सर्व५३
सुनि लषण बैन अतिकाय चंड। घाले सकोप शर अति उदंड॥
साजि अर्धचंद्र नृपसुवन वीर। किय आसु छिंद वर तासु तीर५४॥
पुनि पंच बाण निश्चर उताल। छोड़े सुखंड किय लषणलाल॥
तब कोप छाय प्रभु बंधु वीर। वेधे ललाट तिहि विशिख तीर५५॥
अतिकाय वीर शर वज्रघात। भो रुधिर सिक्त अतिकंप गात॥
पुनि सजग होय निश्चर प्रधान। कीनो बखान तब धन्य बान ५६॥
यौं बहु सराहि लषणै सुवीर। छाँडे अनेक वर विषम तीर॥
ते सर्व राज सुत भिन्न भिन्न। बाणन विदारि किय छिन्न छिन्न॥५७॥
लखि भये व्यर्थ निज सकल बाण। तब धारि चंड शर यातुधान॥
सो लषण वक्ष सालो उताल। भे रुधिर सिक्त नृपसुत विहाल५८॥

पुनि राम अनुज क्रोधित उताल। वर अग्नि अस्त्र चालो कराल ॥
सो रौद्र अस्त्र छांडो प्रचंड। भिरि गिरे दोउ शर होय खंड ॥ ५९ ॥
खलकोपि अस्त्र ऐषीकमार। तिहि ऐंद्र अस्त्रते लषण हार ॥
पुनि याम्य अस्त्र निश्चर प्रहार। लक्ष्मण सुकीन वायव्यछार ६० ॥
पुनि अमित अस्त्रमय बाण चंड। कीने प्रहार लच्छन उदंड ॥
अतिकाय अंग एकौ न भेद। सो करहि युद्ध निर्भय अखेद ॥ ६१ ॥
तब पवन देव लच्छनहि आय। भाषी विरंचि वर याहि आय ॥
याको अवध्य तनुत्रान अंग। बिन ब्रह्मअस्त्र होवै न भंग ॥ ६२ ॥
अस सुनि वायुबैन लछमन उताल। शर ब्रह्म अस्त्र योजित विशाल ॥
बलवान भूरि बल धनुष तान। संधान ठान मारो सुबान ॥ ६३ ॥
सायक प्रहार होतहि उदंड। अतिकाय शीशभो तुरत खंड ॥
विन मुंड रुंडसो भूरि भार। महि गिरो चापि कै दल अपार ६४ ॥
तिहि निधन हेरि कपि ऋच्छ वीर। किय मुदित शोर जै लषण वीर ॥
सौमित्र आय आनँद पाय। शिर नायगहे रघुराय पाय ॥ ६५ ॥
उठि राम बंधु उरुलाय लीन। बहुविधि बखान सनमान कीन ॥
सुग्रीव ऋच्छपति आदि वीर। आनंद अघाय धारी सुधीर ॥ ६६ ॥
अतिकाय अंत लखि यातुधान। दल सकल विकल ह्वैकै परान ॥
उत करत रजनिचर रुदन घोर। इत होत जैति जै जैति शोर ॥ ६७ ॥

इति श्रीरा० र० वि० यु० नरांतक अतिकाया-
दियुद्धवधवर्णनो नाम द्वादशोविभागः ॥ १२ ॥

सो०—निश्चर जाय विहाल, अतिउताल दशभालसों ॥
विलपि कहो रण हाल, पुत्र बंधु दल सकल वध ॥ १ ॥
सुनि रावण षट घात, भयो विकल बहु सोचवश।
करमींजत पछितात, चकित चित्त तनु थाकित भो ॥ २ ॥
दशमुख निपट अधीर, लै उसाँस बोलो विलखि ॥
इमि कोऊ नहिं वीर, हतै सदल रघुवीर जो ॥ ३ ॥

दोहा–पितहि महादुख देखिकै, इंद्रजीत कर जोर ।
कही तात धीरज धरिय, लखिय पराक्रम मोर ॥ ४ ॥
जाम्बवंत हनुमंत अरु, सह तव अनुज सुकंठ ॥
अपर सदल दुहुँ बंधु को, वेगे करौं विकंठ ॥ ५ ॥
यौं बहु धीर धरायकै, मेघनाद वर जोर ॥
जाय सुभट थापे तुरत, किय प्रबंध चहुँ ओर ॥ ६ ॥
पुनि पुनीत ह्वै वेगही, धारि वसन शुचिलाल ॥
जाय यज्ञशाला सविधि, ठानो यज्ञ उताल ॥ ७ ॥
समिध विभीतक कुंडरचि, पावक प्रबल बढ़ाय ।
यथा योग वर मंत्र पढ़ि, हवन कियो हुलसाय ॥ ८ ॥
श्याम अजा सहजीवलै, करि अभिमंत्रित ताहि ॥
सविधि समर्पण कीन पुनि, अग्नि कुंडके माहि ॥ ९ ॥
ताही छिन मख कुंडते, स्यंदन कढो विशाल ॥
तामधि कवच हथ्यार वर, धरे अनेक कराल ॥ १० ॥
सो लखि निश्चर मुदित ह्वै, करि प्रणाम सब लीन ॥
साजि अंग रथ बैठि कै, गमन युद्ध हित कीन ॥ ११ ॥
संग सैन चतुरंग वर, धीर सुवीर विशाल ॥
नाद करैं घननाद सम, सह घननाद कराल ॥ १२ ॥
अंतरिक्ष ह्वै इंद्रजित, आयो कपिदल माहिं ॥
अपर निशाचर भूमि मग, धाय भिरे चहुँ घाहिं ॥ १३ ॥
कीश भालु तरु उपल गिरि, गहि धाये बलवान ॥
घोर शोर चहुँओर ह्वै, रणछायो घमसान ॥ १४ ॥
रैनि अँध्यारी तम छयो, निज पर सूझत नाहिं ॥
कपि कपि निश्चर निश्चरन, ऋच्छनऋच्छ हनाहिं ॥ १५ ॥
ऋच्छ कपिन ऋच्छन कपी, निश्चर ऋच्छ कपीन ॥
ऋच्छ कपी हन निश्चरन, कोऊ काहुन चीन ॥ १६ ॥
मेघनाद वर अस्त्रमय, बाण प्रहार अपार ॥
कीश भालु संहार करि, डारे अवनि मँझार ॥ १७ ॥